ગુજરાત શૈક્ષણિક સંશોધન અને તાલીમ પરિષદ, ગાંધીનગરના પત્ર-ક્રમાંક
જીસીઈઆરટી / અભ્યાસક્રમ / 2012 / 12147-48, તા. 30-6-2012– થી મંજૂર

# सामाजिक विज्ञान

## कक्षा 8

## (द्वितीय सत्र)

### प्रतिज्ञापत्र

भारत मेरा देश है ।

सभी भारतीय मेरे भाई–बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है और इसकी समृद्धि तथा बहुविध परम्परा पर गर्व है ।

मैं हमेशा इसके योग्य बनने का प्रयत्न करता रहूँगा ।

मैं अपने माता–पिता, अध्यापकों और सभी बड़ों की इज्जत करूँगा एवं हरएक से नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा ।

मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने देश और देशवासियों के प्रति एकनिष्ठ रहूँगा ।

उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

રાજ્ય સરકારની વિનામૂલ્યે યોજના હેઠળનું પુસ્તક

तमसोमा ज्योतिर्गमय
गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल
'विद्यायन', सेक्टर 10-ए, गांधीनगर – 382010

© गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर

इस पाठ्यपुस्तक के सर्वाधिकार गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के अधीन है । इसका कोई भी अंश किसी भी रूप में गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के नियामक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

**निर्माण-संयोजन :**

डॉ. टी. एस. जोषी — डॉ. के. आर. झाझरुकीया

श्री हरेश चौधरी — श्री इकबाल डी. वोरा

श्री चंद्रेश पी. पाल्लीया

**लेखन-संपादन :**

श्री हरजीभाई प्रजापति — श्री निलेशकुमार पंड्या

श्री राजेश सुमेरा — श्री रोहितकुमार त्रिवेदी

श्री पंकजकुमार प्रजापति — श्री परेश प्रजापति

श्री तरुणकुमार काटबामणा — श्री अंकुर देसाई

श्री परेशभाई दलसाणिया — श्री युवराजसिंह गोहिल

श्री गुणवंतराय जोषी — श्री शिल्पाबहेन मोदी

श्री पूर्वीबहेन भावसार — श्री हरिभाई मनाणी

श्री दक्षेशकुमार प्रजापति — श्री देवेन्द्रसिंह सरवैया

श्री भावेश पंड्या — श्री नरसिंहभाई प्रजापति

**अनुवाद :**

श्री राजेशसिंह एस. क्षत्रिय — श्री राजेन्द्र आर. पांडेय

श्री विश्वप्रकाशसिंह राजपूत

**समीक्षा :**

डॉ. वीरेन्द्रनारायण सिंह

**चित्रांकन :**

श्री राजेन्द्र वसावा — श्री गौतम रूया

श्री विजय एम. पटेल — श्री हितेश पटेल

श्री ज्योति खत्री

**संयोजन :**

डॉ. चिराग एन. शाह
(विषय-संयोजक : कॉमर्स)

**निर्माण-आयोजन :**

श्री हरेन शाह
(नायब नियामक : शैक्षणिक)

**मुद्रण-आयोजन :**

श्री हरेश एस. लीम्बाचीया
(नायब नियामक : उत्पादन)

## प्रस्तावना

RTE-2009 तथा NCF-2005 को ध्यान में रखकर समग्र देश में प्राथमिक शिक्षा का अभ्यासक्रम, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों तथा समग्र शिक्षा-प्रक्रिया में परिवर्तन हो रहा है । यह परिवर्तन मुख्यतया संबंधित विषयों की हमारी समझ तथा शिक्षा-प्रक्रिया की समझ को लेकर है । इस नए अभ्यासक्रम का मुख्य उद्देश्य बालक की सर्जनशीलता, विचार करने की शक्ति, तर्कशक्ति तथा विश्लेषण-कौशल को विकसित करना है । इन पाठ्यपुस्तकों में प्रवृत्तियाँ इस प्रकार समायोजित की गई हैं कि प्रवृत्ति के पश्चात् तत्संबंधी चर्चा का चिंतन हो, उपयोजन हो और यह भी देख सकें कि क्या सीखा है । बालकों को अक्सर व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से छोटे या बड़े समूह में काम करने-सीखने का अवसर मिले, ऐसी शिक्षण-प्रक्रिया में सहायक बनें, इस तरह की पाठ्यपुस्तकें बनाने का प्रयत्न किया गया है । अलबत्त नए अभ्यासक्रमानुसार पाठ्यपुस्तक भी तो अंत में स्वयं एक अध्ययन सामग्री मात्र है, लक्ष्य नहीं है । यानी कि साधन है, साध्य नहीं है । अतएव पाठ्यपुस्तक स्वयं समग्र शिक्षण का साधन नहीं ही बन सकती, फिर भी इतना अवश्य कहा जा सकता है कि प्रवृत्तिकेन्द्री शिक्षण की यह धारा प्रथम बार प्रायोजित हो रही है । आशा है कि इन पाठ्यपुस्तकों के उपयोग से अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया सरल तथा रोचक बनेगी ।

नए अभ्यासक्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की समग्र प्रक्रिया में माननीय मुख्य सचिव-शिक्षण तथा प्राथमिक शिक्षा सचिवश्री की ओर से सतत प्रेरणा और प्रोत्साहन मिलता रहा है ।

इस समग्र प्रक्रिया में IGNUS-erg टीम के सदस्यों ने सतत मार्गदर्शन प्रदानकर स्टेट रिसोर्स ग्रुप के सदस्यों को सुसज्ज बनाया है । इस पूरी प्रक्रिया दरम्यान UNICEF का भी सहयोग मिला है । संबंधित विषय के कोरग्रुप के सदस्यों ने भी समय-समय पर सहयोग दिया है ।

कक्षा 6 से 8 की इन पाठ्यपुस्तकों को क्षतिरहित बनाने का प्रयत्न किया है, फिर भी क्षति रह गई हो, तो ध्यान आकर्षित करने की विनती है । यह मूल गुजराती पुस्तक का हिन्दी अनुवाद है ।

**पी. भारती(IAS)**
नियामक — कार्यवाहक प्रमुख
दिनांक : 09-02-2020 — गांधीनगर

प्रथम संस्करण : 2013, पुन:मुद्रण : 2014, 2015, 2016, 2017, 2018, 2019, 2020

**प्रकाशक :** गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, 'विद्यायन', सेक्टर 10-ए, गांधीनगर की ओर से पी. भारती(IAS), नियामक

**मुद्रक :**

# मूल कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक के कर्तव्य निम्नानुसार रहेंगे :*

( क ) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

( ख ) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करनेवाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

( ग ) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे;

( घ ) देश की रक्षा करे और आवाहन किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

( ङ ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो; ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं;

( च ) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

( छ ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे;

( ज ) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

( झ ) सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

( ञ ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले;

( ट ) माता-पिता या संरक्षक के रूप में, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु की अपनी संतान या पाल्य को शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

* भारत का संविधान : अनुच्छेद 51-क

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 1. | धार्मिक-सामाजिक जागृति | 1 |
| 2. | पर्यावरणीय प्रदूषण | 7 |
| 3. | भारत में राष्ट्रवाद | 13 |
| 4. | सर्वोच्च न्यायालय | 25 |
| 5. | भारत के क्रान्तिवीर | 32 |
| 6. | मानव संसाधन | 39 |
| 7. | महात्मा के मार्ग पर - 1 | 52 |
| • | पुनरावर्तन 1 | 61 |
| 8. | भारत की समस्याएँ और उपाय | 62 |
| 9. | हमारी अर्थव्यवस्था | 70 |
| 10. | महात्मा के मार्ग पर - 2 | 78 |
| 11. | संयुक्त राष्ट्र (यू एन) | 84 |
| 12. | स्वतंत्रता और उसके पश्चात् | 94 |
| 13. | स्वतंत्र भारत | 102 |
| 14. | महाद्वीप परिचय : अफ्रीका और एशिया | 109 |
| • | पुनरावर्तन 2 | 123 |

# 1

# धार्मिक-सामाजिक जागृति

उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय समाज अंधश्रद्धा, वहम, कुरिवाज, जातिप्रथा अज्ञानता जैसी बुराइयों के चंगुल में फंसा हुआ था । संकुचित और कूपमंडूक समाज में स्त्रियों की स्थिति दयनीय थी । लड़कियों को 'दूध पीती' करने की प्रथा, सतीप्रथा, विधवा विवाह निषेध आदि कुप्रथाएँ फैली हुई थीं । पश्चिमी शिक्षा के कारण ऐसी कुप्रथाओं को दूर करने के लिए उन्नीसवीं शताब्दी में नयी जागृति आयी तथा सामाजिक और धार्मिक सुधार के आन्दोलन शुरू हुए । इनमें राजा राममोहन राय सर्वप्रथम थे ।

## राजा राममोहन राय

राजा राममोहन राय का जन्म ई. सन् 1772 में बंगाल के हुगली जिले के राधानगर गाँव में ब्राह्मण परिवार में हुआ था । राजा राममोहन का विवाह बचपन में हुआ था । इनके भाई की मृत्यु हो जाने से उनकी भाभी सती हो गई । इस घटना का प्रभाव राजा राममोहन राय पर पड़ा । इन्होंने सतीप्रथा, बालविवाह, जातिप्रथा, लड़कियों को दूधपीती करने की प्रथा आदि का उग्र विरोध करते हुए इसके लिए आन्दोलन शुरू किया । राजा राममोहन राय ने ई. सन् 1821में बंगाली में 'संबाद कौमुदी' और ई. सन् 1822 में फारसी भाषा में 'मिरात-उल-अखबार' नामक समाचार पत्र शुरू किया था । ई. सन् 1828 में 'ब्रह्म समाज' की स्थापना की थी । राजा राममोहन राय ने कोलकाता में हिन्दू कॉलेज की स्थापना भी की । उन्होंने समाचारपत्र की स्वतंत्रता, व्यक्ति स्वतंत्रता, वाणी स्वतंत्रता, स्त्री अधिकार, कार्यकारिणी से न्यायतंत्र को अलग रखने जैसी बातों के लिए ब्रिटिश सरकार से सिफारिश भी की ।

1.1 राजा राममोहन राय

राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के विरोध में आन्दोलन शुरू किया था । उसके परिणामस्वरूप ई. सन् 1829 में अंग्रेज गवर्नर विलियम बेन्टिक ने सतीप्रथा के ऊपर प्रतिबंध लगाने हेतु कानून बनाया । इस तरह राजा राममोहन राय ने उन्नीसवीं शताब्दी में भारत की नवजागृति लाने के लिए सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक आन्दोलन की नींव डाली ।

दिल्ली के बादशाह ने अपनी जागीर सम्बन्धी अधिकार से संबंधित केस के बारे में राजा राममोहन राय को ई. सन् 1830 में इंग्लैन्ड भेजा । ई. सन् 1833 में 'ब्रिस्टोल' नामक स्थान पर उनकी मृत्यु हुई । ब्रह्मसमाज ने हिन्दू समाज की दृष्टि बदलने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया । भारत में धर्म की जड़ता और अंधश्रद्धा वाले विचारों को दूर किया ।

**विचार कीजिए**

- आप अपने गाँव में किसी के यहाँ अंधश्रद्धा या कुप्रथा देखेंगे तो क्या करेंगे ?
- अंधश्रद्धा या कुप्रथा आप किसे कहेंगे ?
- राजा राममोहन राय ने समाचारपत्र क्यों शुरू किया ?

### दयानंद सरस्वती

दयानंद सरस्वती का जन्म सौराष्ट्र के मोरबी के नजदीक टंकारा गाँव में एक सनातन ब्राह्मण परिवार में हुआ था । इन्हें छोटी उम्र में ही मूर्तिपूजा और कर्मकांड की अनुपयोगिता समझ में आ गयी थी । इन्होंने सत्य की खोज में गृहत्याग किया । 15 वर्ष तक देशभर में भ्रमण करके योग का अध्ययन किया । संन्यास लेकर मथुरा में स्वामी विरजानंद के पास हिन्दू शास्त्रों का अध्ययन किया ।

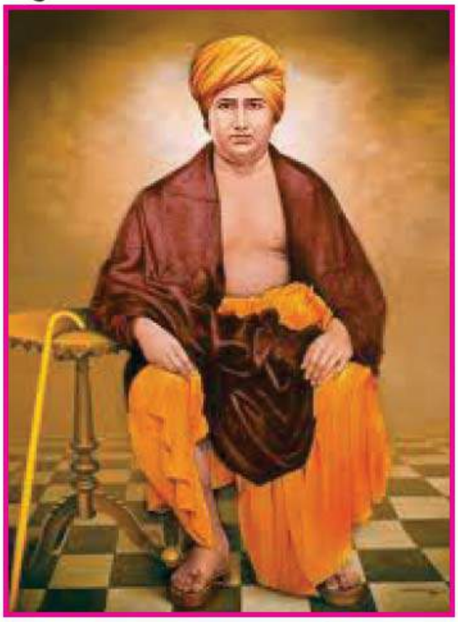

1.2 दयानंद सरस्वती

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वर्ग और जातिविहीन समाज रचना के द्वारा धार्मिक, राष्ट्रीय और सामाजिक दृष्टि से देश की एकता स्थापित करने का प्रयत्न किया । इन्होंने वेदों में भारतीय धर्म और संस्कृति के दर्शन किए । इन्होंने लोगों को **'वेद की तरफ वापस मुड़ो'** का बोध प्रदान किया । इन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक ग्रंथ की रचना की । इन्होंने बतलाया कि वेदों में मूर्तिपूजा, कर्मकांड, बालविवाह, सतीप्रथा अस्पृश्यता का उल्लेख नहीं हुआ है । इन्होंने 'एकेश्वरवाद' का ज्ञान दिया । वे हिन्दी भाषा में उपदेश देते थे, इसीलिए उनके विचार देश के लोगों तक पहुँच सके । दयानन्द सरस्वती ने ई. सन् 1875 **'आर्यसमाज'** की स्थापना की । लाहौर, पंजाब, उत्तरप्रदेश, राजस्थान और गुजरात में आर्यसमाज का तेजी से प्रचार हुआ । उसके परिणामस्वरूप शीघ्र ही सामाजिक परिवर्तन हुआ । आर्य समाज ने धर्म परिवर्तन कर चुके हिन्दुओं को हिन्दू धर्म में वापस लाने के लिए 'शुद्धि आन्दोलन' शुरूकिया । जिसके कारण दूसरे धर्म को स्वीकार कर लिया हो या स्वीकार करने के लिए दबाव दिया गया हो ऐसे हिन्दुओं को हिन्दू धर्म में वापस आने के लिए पहली बार दरवाजा खोल दिया गया ।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के अवसान के बाद लाला हंसराज, पंडित गुरुदत्त और लाला लजपतराय जैसे नेताओं ने इस संस्था की प्रवृत्तियों को जारी रखा । स्वामी श्रद्धानन्द ने ई. सन् 1902 में हरिद्वार के पास **'कांगड़ी'** में **गुरुकुल** की स्थापना की । इसके अलावा गुजरात में वडोदरा में आर्यकन्या विद्यालय शुरू किया गया । जिसमें अनुशासन, श्रम, संयम और चरित्र के पाठों की शिक्षा दी जाती है ।

### रामकृष्ण परमहंस

1.3 रामकृष्ण परमहंस

रामकृष्ण परमहंस भारतीय संस्कृति के ज्योतिर्धर और सभी धर्मों के सत्य को प्राप्त करने वाले संत और सुधारक थे । इनका जन्म बंगाल के हुगली जिले के कामारपुकुर गाँव में हुआ था । इन्हें बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्तियों में रुचि थी । वे कोलकाता के पास स्थित दक्षिणेश्वर में कालीमाता के मंदिर के पुजारी थे । इन्होंने ईश्वर को विविध रूप में प्राप्त करने का प्रयत्न किया था । उनके शुद्ध चरित्र और ज्ञानभक्ति के उपदेश से अनेक लोग उनके पास आते थे । केशवचन्द्र सेन तथा दयानन्द सरस्वती सहित अनेक धार्मिक सुधारकों के साथ उनकी मुलाकात हुई थी। पश्चिमी प्रभाव में आए हुए लोगों को रामकृष्ण परमहंस के ज्ञान से अपने धर्म और संस्कृति में पुन: श्रद्धा उत्पन्न हुई ।

### स्वामी विवेकानन्द

नरेन्द्रनाथ दत्त (ई. सन् 1863-1902) नामक बंगाली स्नातक रामकृष्ण परमहंस के सम्पर्क में आये । रामकृष्ण परमहंस ने नरेन्द्र की ज्ञानपिपासा को तृप्त किया । नरेन्द्र रामकृष्ण परमहंस के शिष्य बन गये और सन्यास ले करके स्वामी विवेकानन्द का नाम धारण करके भारतीय और पश्चिमी तत्त्वज्ञान के गहन अध्येता बने।

1.4 स्वामी विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द ने लोगों को **दु:खी मनुष्यों की सेवा** करने और उसमें ही ईश्वर के दर्शन करने का ज्ञान प्रदान किया । इन्होंने भारत के युवकों में अतीत के प्रति गौरव और भविष्य के लिए श्रद्धा जाग्रत की । इन्होंने ई. सन् 1893 में युनाइटेड स्टेट्स शिकागो में आयोजित अखिल विश्व धर्म परिषद में सम्मिलित होकर उसमें अपने प्रभावशाली भाषण के द्वारा भारतीय संस्कृति और तत्त्वज्ञान की समझ प्रदान की । उसके बाद युनाइटेड स्टेट्स, यूरोप, इजिप्त, चीन, जापान आदि देशों में प्रवास करके भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया । वे भारतीय संस्कृति के प्रशंसक और प्रखर राष्ट्रप्रेमी थे । इन्होंने भारतीयों को 'उठो, जागो और ध्येय प्राप्ति तक लगे रहो' का नारा दिया था ।

स्वामी विवेकानन्द ने ई. सन् 1897 में अपने गुरु के नाम से बेलूर में **'रामकृष्ण मिशन मठ' की स्थापना** की। इस मिशन ने विविध कार्यों के द्वारा मानवसेवा करने का आदर्श अपनाया । रामकृष्ण परमहंस के जीवन में प्रेरणा प्राप्त करके 'जनसेवा ही प्रभु सेवा' के सूत्र को मिशन ने अपनाया । देश में विद्यालय खोलकर शिक्षा देना और अस्पताल द्वारा सेवा का कार्य किया जाता है । इस मिशन की शाखाएँ भारत और विदेशों में आज भी कार्यरत हैं ।

### मुस्लिम समाज में सुधार का आन्दोलन

उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआत में उत्तरप्रदेश में रायबरेली के सैयद अहमद खान और बंगाल के शरीअतुल्ला जैसे लोगों के नेतृत्व में मुसलमानों में सामाजिक और धार्मिक जागृति की शुरुआत हुई । उनके धार्मिक नेताओं ने दिल्ली के शाह वली उल्लाह के उपदेश से प्रेरणा प्राप्त की । वे मानते थे कि भारत में इस्लाम धर्म दूषित होने से देश के ऊपर अंग्रेजों ने शासन स्थापित किया । इन्होंने इस्लाम धर्म और संस्कृति को मजबूत और शुद्ध करने के लिए **'वहाबी आन्दोलन'** शुरू किया ।

वहाबी आन्दोलन के बाद मुसलमानों में पश्चिमी विचारों का प्रभाव बढ़ जाने से अंग्रेजी शिक्षा का प्रमाण बढ़ा । उलेमाओं की रूढ़िचुस्तता के कारण मुसलमान अंग्रेजी शिक्षा और आर्थिक तथा सामाजिक लाभों से वंचित रहे इसीलिए मुसलमानों में शिक्षित और मध्यवर्ग का उदय ठीक समय तक नहीं हुआ ।

1.5 दादाभाई नवरोजी

सर सैयद अहमद खान का जन्म उमराव परिवार में हुआ था । वे ई. स. 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के समय कम्पनी सरकार की नौकरी में थे और उस समय तक कम्पनी के वफादार थे । ई. स. 1869 में सेवानिवृत्ति के बाद वे इंग्लैंड गये और पश्चिम उदारमत के विचारों से प्रभावित हुए । इन्होंने मुसलमानों को अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करके अपने पिछड़ेपन और रूढ़िचुस्तता को दूर करने का आग्रह किया । इन्होंने ई. स. 1870 में 'तहजीब-उल-अखलाक' नामक पत्रिका की शुरुआत की । ई. स. 1875 में अलीगढ़ में मुस्लिम कॉलेज की स्थापना की, जो 'अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी' के रूप में पहचानी जाती है । इन्होंने अंग्रेजी साहित्य और विज्ञान के ग्रंथों का उर्दू में अनुवाद करके मुसलमानों को पाश्चात्य ज्ञान से परिचित करवाया । इन्होंने बुरखा प्रथा और बालविवाह की प्रथा का विरोध किया और विधवा विवाह तथा स्त्री शिक्षा के पक्षधर बने ।

### सिक्ख समाज

उन्नीसवीं शताब्दी के सुधार के प्रभाव ने सिक्ख समाज को भी प्रभावित किया । गुरुद्वारों में फैले दूषणों को दूर करने के लिए और अच्छी व्यवस्था के लिए **'शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति'** की रचना की गयी । सिक्खों में धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ पाश्चात्य शिक्षा देने के लिए **अमृतसर में 'खालसा कॉलेज'** तथा विद्यालय शुरू किए गए ।

### पारसी समाज

अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त पारसी युवकों ने धर्म और समाजसुधार के लिए ई. स. 1851 में 'रहनुमा-इ-मज़दयरबन सभा' की स्थापना की । दादाभाई नवरोजी इस संस्था के महत्त्वपूर्ण नेता थे । इस संस्था ने **'राश्त गोफतार'** नामक पत्रिका शुरू करके पारसी सुधार आन्दोलन को गतिशील बनाया । के. आर. कामा और बेहरामजी मलबारी ने भी धर्म और समाज-सुधार के कार्य किए । कामा ने शिक्षा प्रचार और मलबारी ने स्त्री विकास पर जोर दिया । उन्होंने बालविवाह का विरोध किया तथा विधवा विवाह को प्रोत्साहित किया । मलबारी के प्रयत्नों के कारण सरकार ने ई. सन् 1891 में विवाह के लिए निश्चित उम्र सम्बन्धी कानून बनाया था ।

### ज्योतिबा फुले

ज्योतिबा फुले महाराष्ट्र के प्रसिद्ध समाजसुधारक थे । इन्होंने स्त्रियों तथा दलितों के प्रश्नों पर ध्यान दिया । ई. सन् 1857 में इन्होंने पूना में कन्या पाठशाला शुरू की । इन्होंने विधवाओं को पुनर्विवाह करने में सहायता की । समाज में ब्राह्मणों के वर्चस्व के विरुद्ध प्रतिकार किया । लोगों में आत्मविश्वास, हिम्मत और उत्साह जाग्रत करने के लिए इन्होंने **'सत्य शोधक समाज'** की स्थापना की ।

1.6 ज्योतिबा फूले

> **विचार कीजिए**
>
> आप जिस समाज से आते हैं, उस समाज में कोई अंधश्रद्धा या कुप्रथाएँ दिखलाई पड़ें, तो आप समाज में कौन-कौन सी प्रवृत्तियाँ करेंगे ?

**ठक्करबापा**

गांधीजी द्वारा स्थापित 'अखिल हिन्द हरिजन संघ' के मंत्री के रूप में ठक्कर बापाजी ने वर्षों तक सेवा देकर हरिजनों के विकास में अपना योगदान दिया । इन्होंने प्राकृतिक आपदाओं के समय लोगों को सहायता देने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया । अमृतलाल ठक्कर उर्फ ठक्कर बापा का जन्म भावनगर में ई. सन् 1869 में हुआ था । ये आजीवन कर्मनिष्ठ सेवक थे । उन्होने इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त की थी । अधिक वेतनवाली नौकरी को छोड़कर के गाँधीजी के प्रभाव से प्रभावित होकर इन्होंने आम लोगों की सेवा की थी ।

**1.7 ठक्करबापा**

ठक्कर बापाजी ने **'पंचमहाल भील सेवा मंडल'** की स्थापना की और पंचमहाल के जंगलों और पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करनेवाले भीलों के जीवन में उनके प्रयास से बड़ा परिवर्तन दिखलाई पड़ने लगा । ठक्कर बापा और उनके साथियों ने भीलों को शराब तथा अन्य बुराइयों, बुरी आदतों तथा वहम के बंधनों से मुक्त कराया । भीलों के बच्चों के लिए विद्यालय शुरू किए गए । उन्हें चरखा चलाने के लिए प्रेरित किया तथा कुटीर उद्योग में भी सम्मलित किया ।

समय व्यतीत होने पर लोगों में राष्ट्रीय चेतना विकसित हुई और वे राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान देने लगे । गाँधीजी ने अस्पृश्यता निवारण को महत्त्व दिया, जिससे निम्न, पिछड़े वर्गों की स्थिति सुधारने के प्रयास में विशेष प्रगति हुई ।

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

(1) स्वतन्त्रता के पहले समाज में कैसी-कैसी कुप्रथाएँ प्रचलित थीं ?

(2) राजा राममोहन राय ने ब्रिटिश सरकार से कौन-कौन सी सिफारशें की ?

(3) आर्यसमाज में कौन-कौन सी प्रवृत्तियाँ करता था ?

(4) रामकृष्ण मिशन द्वारा समाज में कौन-कौन से कार्य किए जाते हैं ?

(5) ठक्करबापा और उनके साथी कौन-कौन से कार्य करते थे ?

**2. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :**

(1) राजा राममोहन राय का जन्म ........... गाँव में हुआ था ।

(2) सतीप्रथा पर प्रतिबंध लगाने वाले कानून की रचना.................ने की थी ।

(3) दयानन्द सरस्वती ने ............ नामक ग्रंथ की रचना की थी ।

(4) स्वामी विवेकानन्द के गुरु का नाम ............. था ।

(5) 'राश्तगोफतार' नामक पत्रिका ............ संस्था ने शुरू की थी ।

**3. निम्नलिखित पात्रों के विषय में संक्षिप्त में लिखिए :**

(1) ज्योतिबा फुले

(2) ठक्कर बापा

(3) स्वामी विवेकानन्द

**4. योग्य जोड़े बनाइए :**

| (अ) | (ब) |
|---|---|
| (1) ब्रह्मसमाज | (1) दयानन्द सरस्वती |
| (2) आर्यसमाज | (2) ठक्कर बापा |
| (3) रामकृष्ण मिशन | (3) सैयद अहमद खान और शरीअतुल्ला |
| (4) वहाबी आन्दोलन | (4) स्वामी विवेकानन्द |
| (5) पंचमहल भील सेवा मंडल | (5) राजा राममोहन राय |

# 2

# पर्यावरणीय प्रदूषण

**2.1 प्रदूषण की सजीवसृष्टि पर होती हुई असर**

विकास करना मानव का अधिकार है । इसलिए जहाँ और जिसमें विकास हो या दिखलायी पड़े उसे विकसित करने का सम्पूर्ण अधिकार है । औद्योगिक क्रांति के बाद विज्ञान की खोज़ों से यंत्र विज्ञान ने विकास करने के बड़े अवसर प्रदान किए हैं । इस विकास से मानव जीवन में बहुत ही परिवर्तन हुए हैं । सर्जनात्मकता को यंत्र विज्ञान ने ऐसा मोड़ दिया है कि उत्पादन का औद्योगीकरण होने लगा है । बिज़ली, रेलवे, टेलीफोन, वाहन, उद्योग, इलेक्ट्रॉनिक्स माध्यम विकास कथा के महत्त्वपूर्ण पात्र हैं ।

प्राकृतिक स्रोतों के अमर्यादित उपयोग से पानी, वनस्पति और हवा में प्रदूषण उत्पन्न हुआ है, प्रदूषण फैला है । उसकी मात्रा इतनी है कि विकास को स्पर्श करने के साथ-साथ पर्यावरण को प्रदूषित कर दे ऐसा है । इन दोनों को इनके संदर्भ के साथ देखने और समझने के लिए प्रयास करना जरूरी हैं । आज भूमि, पानी, हवा, आवाज और अवकाशीय प्रदूषण खूब बढ़ गया है । उसका बहुत-सा विपरीत प्रभाव मानवजीवन और पर्यावरण पर होने लगा है । उद्योगों के शुरू होने से पर्यावरण को प्रभावित करने वाले अनेक प्रकार के प्रदूषण बढ़ गए हैं । जिसमें हवा, पानी और जमीन का प्रदूषण मुख्य माना जाता है । ये तीनों ही हमारे जीवन को टिकाए रखने के लिए मुख्य तत्त्व हैं ।

2.2 पानी का प्रदूषण

## (1) पानी का प्रदूषण (Water Pollution)

उद्योगों को पानी चाहिए, प्रक्रिया में माल बनाने या अन्य उद्देश्य के लिए यह पानी अस्वच्छ हो जाता है अर्थात् उसे अनुपयोगी समझ उसे नदी, नाले या खुली ज़मीन पर छोड़ दिया जाता है । यह केमिकलयुक्त गंदा पानी नदी के पानी को प्रदूषित कर देता है । उद्योगों द्वारा छोड़ा गया पानी नदी के जल प्रवाह को प्रदूषित कर देता है । साथ ही जमीन पर फैला पानी जमीन में नीचे उतरता है । यह पानी भूगर्भ जल को भी प्रदूषित करता है । आज शहरीकरण बड़े स्तर पर हो रहा है । शहर की गटरों का पानी भी नदियों और तालाबों में छोड़ दिया जाता है, जो पानी के प्रदूषण की बड़ी समस्या उत्पन्न करता है । आज औद्योगीकरण से बरसात का पानी भी प्रदूषित हो गया है । उद्योगों का धुआँ, गंध के रसात पानी के साथ मिल जाते हैं और पानी को प्रदूषित करते हैं ।

उद्योगों और कारखानों में उपयोग किया गया गंदा पानी नदी, नाले और जमीन पर छोड़ दिया जाता है तब पानी में रहने वाले जलचर प्राणी नष्ट हो जाते हैं । मछलियों के मरने की कई घटनाएँ हमने देखी हैं । समुद्र के अन्दर तेल रिसाव से समुद्र का पानी प्रदूषित होता है । जल प्रदूषण से कालरा, पीलिया, उल्टी जैसे रोग फैलते हैं । शायद आज इसीलिए अपने यहाँ यात्रा में, ऑफिस या स्कूल में जाने वाले बच्चों को पानी की बोतल रखनी पड़ती है । हमारी बहुत-सी नदियाँ गटर के समान बन गयी हैं । नदियों का गंदा पानी खेती के काम में उपयोग किया जाता है । इसके परिणाम स्वरूप उत्पन्न होने वाली फसलें, घासचारा, शाक-सब्जी प्रदूषण से भरपूर होती हैं ।

प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति या राजनेता, किसान, उद्योगपति, शिक्षित व्यक्ति कारीगर या कर्मचारी प्रजा के हित के विरुद्ध कार्य करने में थोडा-सा भी हिचकते नहीं हैं । उद्योगों के पानी को शुद्ध करके नदी, नाले में छोड़ना चाहिए । सरकार को की उद्योगों पर कड़े नियंत्रण रखना चाहिए । हमें पानी का विवेकपूर्वक उपयोग करना चाहिए ।

**विचार कीजिए**

विद्यालय, गाँव में पानी को सुरक्षित बनाये रखने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है ?

## (2) हवा का प्रदूषण (Air Pollution)

आज पानी की तरह हवा का प्रदूषण भी संसार में बड़ी समस्या उत्पन्न कर रहा है । प्रत्येक शहर और कितने ही ग्रामीण क्षेत्रों में निश्चित प्रकार के उद्योग विकसित हुए हैं । उद्योंगों में से छोड़ी जाने वाली गैसें, धुआँ हवा में मिलने से हवा का प्रदूषण होता है । आज खनिज तेल का उपयोग भी खूब बढ़ गया है । पेट्रोल और डीज़ल से चलने वाले वाहन हवा में धुआँ तथा गैसें; **जैसे कि नाइट्रिक आक्साइड, कार्बन मोनो आक्साइड बेन्जोपाइरिन तथा**

कार्बन डाइ आक्साइड मिलाते हैं, जिससे हवा में ऐसी गैसों का प्रमाण खूब बढ़ गया है । आज जंगल के अधिक प्रमाण में कटने से हवा का प्रदूषण बढ़ रहा है । वृक्ष और वनस्पतियाँ कम होने से हवा में धूल के रजकण उड़ करके मिल जाते हैं । वृक्ष कम होने से जहरीली गैस $CO_2$ का प्रमाण बढ़ने लगा है जिसके कारण 'ग्लोबल वॉर्मिंग' जैसी बड़ी समस्या उत्पन्न हुई है ।

2.3 हवा का प्रदूषण दर्शाने वाले चित्र

हवा के प्रदूषण से फेफड़े की बीमारी, दम-साँस का चढ़ना जैसे रोग होते हैं । हवा में उड़ने वाले धूल के कण से सरदी, खाँसी जैसे रोग होते हैं । अधिक प्रदूषण होने के काम दम घुटने के कारण बहुत से प्राणियों की मृत्यु हो जाती है । हवा के प्रदूषण के कारण गरमी की मात्रा भी बढ़ रही है । कभी-कभी ऐसी गैसों का बरसात में मिल जाने के कारण एसिड की बरसात होती है जो वनस्पतियों और प्राणियों को खूब नुकसान पहुँचाती है ।

हवा के प्रदूषण को रोकने के लिए नियम बनाने चाहिए । योग्य प्रमाण में धुआँ या जहरीली गैस फिल्टर हो ऐसे साधन विकसित करने चाहिए । 'पर्यावरण जागृति का अभियान' चलाना चाहिए । नियमों का उल्लंघन करने वाले उद्योगों के प्रति सरकार को सख्त कदम उठाने चाहिए, आवश्यकता पड़ने पर बंद भी कर देने चाहिए । पेट्रोल, डीजल का आवश्यकतानुसार ही उपयोग करना चाहिए । प्रदूषण मुक्त हो, ऐसी C.N.G. और P.N.G. का उपयोग करना चाहिए । वाहनों में P.U.C. का चुस्त पालन करवाना चाहिए ।

**विचार कीजिए**

क्या आप ऐसा कोई कार्य करतें हैं, जिससे हवा प्रदूषित होती हो ?

### (3) जमीन का प्रदूषण (Land Pollution)

जमीन का प्रदूषण आसानी से दिखलायी नहीं पड़ता है फिर भी आज विकसित संसार में जमीन का प्रदूषण खूब अधिक प्रमाण में बढ़ चुका है । विकसित उद्योगों द्वारा गटर के पानी को खुली हुई जमीन पर छोड़ देने से जमीन का प्रदूषण बढ़ता है । उद्योग तथा कारखाने वाले अपनी आवश्यकता से अधिक जमीन प्राप्त करते हैं जो इनके कहने के अनुसार भविष्य के विकास के लिए होता है । उद्योगों का विकास जब अच्छी खेती करने योग्य जमीन पर होता है तब वह जमीन को

2.4 जमीन का प्रदूषण

नुकसान करता है । उद्योग अपने अनुपयोगी ठोस कचरे को जमीन में डालते हैं । आज पोलिथीन (प्लास्टिक) का उपयोग खूब अधिक प्रमाण में होने लगा है । **प्लास्टिक जमीन के अन्दर सड़कर नष्ट नहीं होता है बल्कि जमीन को नुकसान पहुँचाता है ।** शहरी कचरा जिसमें खोखा, प्लास्टिक स्क्रेप और रासायनिक पदार्थ होते हैं जो उड़कर अच्छी जमीन व खेतों में पहुँच जाते हैं और जमीन प्रदूषित करते हैं । किसानों द्वारा अधिक प्रमाण उत्पादन प्राप्त करने के लिए रासायनिक खाद का उपयोग अधिक प्रमाण में हो रहा है, जो जमीन को बिगाड़ने और पर्यावरण को नुकसान करने में बहुत बड़ी भूमिका निभा रहे हैं ।

**विचार कीजिए**

- प्रदूषण एक ऐसी कड़ी (Chain) है, जिसे तोड़ने के लिए आप पहले क्या कार्य करेंगें ? उदाहरण के रूप में – प्लास्टिक के कप में चाय न पीना, पतली प्लास्टिक की थैलियों में खाने की वस्तु न लेना ।
- आप कितने ही लोगों को प्लास्टिक बीनते देखा होगा, यह कार्य आपको कैसा लगता है ?

आज उद्योगों और गटरों के पानी का उपयोग उपजाऊ जमीन में होने से उसमें तैयार होने वाला अनाज, साग–सब्जी दूषित होती है । जिसके कारण टी.बी., हड्डी से सम्बन्धित रोग होते हैं । उपजाऊ जमीन कम हो जाने से अनाज की कमी उत्पन्न होने की संभावना बढ़ जाती है । जमीन में प्लास्टिक के मिलने से और कारखानों का पानी सूक्ष्म जीवाणुओं को नष्ट कर देते हैं । उद्योगों का घनकचरा भी सूक्ष्म जीवाणुओं के लिए घातक बन रहा है । यही जीवाणु जमीन को उपजाऊ बनाते हैं, परन्तु उनके नाश हो जाने से जमीन अनुपजाऊ हो जाती है । हम जमीन प्रदूषण को रोक सकें ऐसे हैं । हमें प्लास्टिक और केमिकल का उपयोग आवश्यकतानुसार ही करना चाहिए । उपजाऊ जमीन में उद्योगों की स्थापना नहीं करनी चाहिए । पर्यावरण की रक्षा करना चाहिए । रासायनिक खाद के बदले जैविक खाद, देशी खाद का उपयोग करना चाहिए । जंतुनाशक दवाओं का उपयोग कम मात्रा में करना चाहिए । अनुपयोगी प्लास्टिक और ठोस कचरे को जला करके या पुनः उपयोग करके उसका नाश या दुबारा उपयोग करना चाहिए । परम्परागत स्त्रोतों का उपयोग करना चाहिए कि **हरित मित्र**। नयी टेक्नोलॉजी का उपयोग करना चाहिए जो पानी की बचत करे और प्रदूषण को भी रोके जैसे टपक सिंचाई पद्धति ।

### (4) ध्वनि ( आवाज ) का प्रदूषण (Noise Pollution)

वायु और जल प्रदूषण के अलावा ध्वनि (आवाज) का प्रदूषण खूब बढ़ गया है । कारखानों में चलने वाले यंत्र, वाहनों के आवाज के कारण जो आवाज उत्पन्न होती है, वह बहुत अधिक होती है, जो आवाज का प्रदूषण उत्पन्न करते हैं । हमारे देश की प्रजा और समग्र विश्व में रहने वाली प्रजा उत्सव प्रिय है । आज पूरे विश्व में अनेक उत्सव मनाये जाते हैं, जिसमें बड़े लाउडस्पीकर और बैंडबाजा–ढोल आदि

**2.5 ध्वनि प्रदूषण**

बजाने ,डी. जे. द्वारा ध्वनि का प्रदूषण होता है । चुनाव या खेल में विजय होने पर अधिक मात्रा में पटाखे फोड़ना, बाजा बजाने से ध्वनि का प्रदूषण होता है । शहरों में बस, रिक्शा, द्विचक्रीय वाहन अधिक प्रमाण में होते हैं । चार रास्ता, गलत जगह पार्किंग करने से इन वाहनों की भीड़ होती है, जो ध्वनि प्रदूषण फैलाते हैं । समुद्र और बड़ी नदियों में जहाँ बड़े जहाज सबमरीन चलते हैं, वे उस जल में भी आवाज क़ा प्रदषण उत्पन्न करते हैं ।

ध्वनि प्रदूषण से तेज आवाज के कारण बहरापन आने के अलावा मानसिक स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ता है । चिड़चिड़ापन बढ़ जाता है । अत्यधिक आवाज से प्रकृति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है । अनेक कीड़े और जीवाणु जो हमारे लिए उपयोगी हैं, उनका नाश हो जाता है । अस्पताल, विद्यालय या दवाखाना के पास 'नो हार्न' या 'साइलेंस प्लीज' जैसे चिह्न हमें लगाने पड़ते हैं, वह वास्तव में ध्वनि प्रदूषण के प्रतिबंध को दर्शाता है ।

नागरिक स्वयं समझने की आदत डालें, यही इसका उपाय है । हमें उत्सव-प्रसंग के समय बहुत अधिक आवाज करने वाले वाद्ययंत्र को नहीं बजाने चाहिए । पटाखे नहीं फोड़ने चाहिए । वाहनों की सही समय पर सर्विस (मरम्मत) करा लेनी चाहिए । PUC के नियम कड़े बनाने चाहिए । जनसंख्या घनत्व को नियंत्रण में रखना चाहिए । उद्योगों की आवाज को नियंत्रित करने के लिए वनीकरण को बढ़ावा देना चाहिए । वाहनों के आवाज को नियंत्रण में लाने के लिए मार्ग के दोनों ओर वृक्ष लगाना चाहिए । मार्ग चौड़े बनाने चाहिए जहाँ अधिक ट्राफिक की समस्या हो वहाँ 'वन वे' बनाना चाहिए । अपनी समयसूचकता और समझदारी ही हमें प्रदूषण से बचा सकती है ।

**विचार कीजिए**

आपको कैसी आवाज अच्छी लगती है ? क्यों ?

पानी कितना अमूल्य है यह सभी समझते हैं फिर भी 'मिनरल वाटर' खरीदते समय हम पानी के संकट को गंभीरता पर ध्यान नहीं देते । सवाल केवल पानी का नहीं है । गांधीजी ने कहा था कि जल, जमीन और जंगल ये सामूहिक स्रोत हैं । इनके ऊपर सबका समान अधिकार है । इन्हें व्यापार की वस्तु बनाना नैतिक अपराध है । मानवनिर्मित समस्याओं में पानी का प्रदूषण सबसे आगे है, जिसका उत्तर खोजना हमारी सामूहिक जनचेतना की जिम्मेदारी बन गयी है । आज प्रदूषण के लिए सभी लोगों को अपनी जिम्मेदारी समझकर उसे स्वच्छ तथा स्वस्थ्य बनाने योग्य उपाय करना ही पड़ेगा ।

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

(1) प्रदूषण किसे कहते हैं ?

(2) 'मेडिकल वेस्ट' किस तरह प्रदूषण फैलाते हैं ?

(3) क्या इलेक्ट्रॉनिक साधन किसी प्रकार का प्रदूषण फैलाते हैं ? किस तरह से ?

(4) आपको कैसा वातावरण अच्छा लगता है ? क्यों ?

**2. निम्नलिखित का आपके जीवन के साथ क्या संबंध है ? लिखिए ।**

(1) खेत

(2) विद्यालय

(3) राज्य

(4) देश

**3. उचित जोड़े बनाइए :**

| (अ) | (ब) |
|---|---|
| (1) गटर का पानी | (1) जमीन का प्रदूषण |
| (2) दम (श्वास) का रोग | (2) ध्वनि प्रदूषण |
| (3) रासायनिक खाद (कीटनाशक दवाएँ) | (3) हवा का प्रदूषण |
| (4) 80 डेसिबल आवाज | (4) पानी का प्रदूषण |

**4. आपके गाँव या शहर में किस तरह से प्रदूषण होता है, उसके बारे में लिखिए ।**

# 3

# भारत में राष्ट्रवाद

राष्ट्रवाद अर्थात् अपने राष्ट्र के प्रति एकात्मकता और गौरव की भावना । आवश्यकता पड़ने पर अपने राष्ट्र के प्रति तन-मन-धन न्योछावर करने के लिए तैयार रहने की भावना । भारत में राष्ट्रीय जागृति के तत्त्व विशेषकर ई.स. 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के बाद विकसित हुए । आधुनिक राष्ट्रवाद का उद्‌भव सर्वप्रथम यूरोप में देखने को मिलता है । नवजागृति, धर्मसुधार, अमेरिका और फ्रांस की क्रान्ति, इटली और जर्मनी का एकीकरण आदि तत्त्वों ने यूरोप में राष्ट्रवाद को फैलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया । भारत में ब्रिटिश शासन था । ब्रिटिशों के सम्पर्क के परिणामस्वरूप भारतीयों के राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक दृष्टिकोण में परिवर्तन हुआ । भारत में आधुनिक राष्ट्रवाद के निर्माण करने वाले तत्त्व उत्पन्न हुए । हमारे देश में हमारा राज्य अर्थात् स्वराज चाहिए । यह विचार देश के शिक्षित तथा बुद्धिशाली लोगों में ब्रिटिश शासन के समय फैलता गया । देशवासियों में राष्ट्रीय एकता की भावना जाग्रत हुई । ऐसी राष्ट्रवाद की भावना पैदा करने वाले तत्त्वों का हम अध्ययन करेंगे ।

### (1) राजनीतिक

अंग्रेजों के शासन के पहले देश में राजनीतिक एकता का अभाव था । भारत छोटे-बड़े रजवाड़ों में बँटा हुआ था । अंग्रेजों ने भारत के कई राजाओं को पराजित करके भारत के अधिकांश भागों पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया था । अंग्रेजों के वर्चस्व में एकसमान व्यवस्थातंत्र शुरू किया गया । अंग्रेज शासन का अनुभव लगभग अच्छा नहीं था । ऐसे अनेक कारणों से अंग्रेज शासन के सामने विरोध शुरू हुआ । धीरे-धीरे यह विरोध प्रबल बनता गया ।

### (2) आर्थिक

अंग्रेजों की आर्थिक नीतियों ने भारत को कंगाल बना दिया । अंग्रेज भारत में से कच्चा माल इग्लैंड ले जाते थे और वहाँ तैयार माल का भारत के बाजार में बेचते थे । इग्लैंड से भारत आने वाले तैयार माल पर बहुत कम मात्रा में कर लिया जाता था जबकि भारत में तैयार माल पर अधिक कर लेने के कारण भारत में तैयार होने वाला माल अधिक

महँगा पड़ता था । जबकि इग्लैंड में उत्पन्न तैयार माल (चीजवस्तुएँ) भारत में कम कीमत पर बेचा जा सकता था । इस स्पर्धा में भारत के हस्तउद्योग और अन्य उद्योग-धंधे टिक नहीं सके । परिणाम स्वरूप कारीगर वर्ग बेकार हो गया । भारत का भोग लेकर इग्लैंड को समृद्ध बनाने की अंग्रेजी नीति के सामने प्रजा में राष्ट्रीय जागृति आयी ।

### (3) वाहन और संदेशा व्यवहार

भारत में रेलवे, तार, डाक, जमीन तथा जल व्यवहार के मार्ग सैनिक, आर्थिक तथा राजनीतिक कारणों से विकसित किया गया था फिर भी उससे देश के लोगों को लाभ हुआ । इन साधनों के तेजी से विकास करने से विशाल देश के मनुष्य एकदूसरे के नजदीक आये । कारीगर व व्यापारी वर्ग धंधा करने के लिए एक दूसरे के प्रदेश में जाने लगे । उनके बीच विचारों का आदान-प्रदान होने लगा । उनका सम्पर्क बढ़ने से जाति, कौम, प्रदेश के भेदभाव कम हुए । राष्ट्रीय नेता उनके विचार तथा योजनाओं को प्रजा के सभी वर्गों में फैलाने में सफल हुए । प्रादेशिक स्तर के बदले राष्ट्रीय स्तर का नेतृत्व शुरू हुआ, जिसने स्वराज की सफलता में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया ।

### (4) शिक्षा और साहित्य :

भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में अंग्रेजी शिक्षा का बड़ा योगदान रहा । इस शिक्षा के कारण पश्चिम की विचारधारा के दरवाजे खुल गए । विश्व का अधिकांश साहित्य अंग्रेजी में था । हमारे देश के लोगों ने अंग्रेजी सीखी । विश्व के प्रवाहों से उन्हें जानकारी प्राप्त हुई । इस कारण से अमेरिकन स्वतन्त्रता संग्राम में से लोकशाही की तथा फ्रांस की क्रान्ति में से स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की भावना से प्रेरणा प्राप्त हुई । आत्मश्रद्धा बढ़ी और सभी भारत के उज्जवल भविष्य की कल्पना करने लगे । देश की प्रादेशिक भाषाओं में उपन्यास, नाटक, कहानी, काव्य और गीत आदि लिखे जाने लगे । इन साहित्यों ने राष्ट्रभक्ति का संदेश दिया ।

**विचार कीजिए**

अंग्रेजी शिक्षा से लाभ हुआ या हानि ? किस तरह ?

### (5) वर्तमान पत्र

राष्ट्रीय चेतना को फैलाने में वर्तमानपत्रों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया । बंगाल, मुंबई, मद्रास तथा दूसरे प्रातों में प्रकाशित होने वाले अखबारों ने सरकार की नीतियों की आलोचना करके लोगों में राष्ट्रीय भावना का जाग्रत किया ।

THE HINDU

Union Carbide chief arrested and released

More deaths in Bhopal

3.1 वर्तमानपत्रों का योगदान

**विचार कीजिए**

वर्तमानपत्रों ने किस तरह राष्ट्रीय भावना को जाग्रत किया था ?

### (6) भारत की भव्य विरासत

पाश्चात्य पुरातत्वविद् एलेक्जेंडर कनिंघम तथा उनके सहायकों ने भारत के अनेक प्राचीन स्थलों में खुदाई का कार्य करवाया । भारतीय संस्कृति की गौरवगाथा के अनेक अवशेषों की खोज की । भगवानलाल इन्द्रजी जैसे भारतीय पुरातत्वविद् ने भी पुराने अवशेषों को खोजकर भारतीयों को देश की संस्कृति की भव्यता से परिचित करवाया । पश्चिम के विद्वानों ने भारतीय सांस्कृतिक विरासत से संबंधित खोजें की । भारत के विद्वान भी उसमें सम्मिलित हुए । पुस्तकें भी लिखी गईं । गौरवपूर्ण साहित्य और संशोधन से देशवासियों की राष्ट्रीय अस्मिता जाग्रत हुई ।

**इतना जानिए**

पाश्चात्य विद्वानों मेक्समूलर, विल्सन, फर्ग्युसन, बुहलर, फ्लीट तथा भारतीय विद्वान राजेन्द्रलाल मित्र, रामकृष्ण गो. भांडारकर, हरिप्रसाद शास्त्री आदि के लेखों ने भारत के वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, गीता, स्मृति, पुराण आदि का महत्व लोगों को समझाया ।

## भारतीय राष्ट्रीय महासभा (इन्डियन नेशनल कांग्रेस) की स्थापना

भारतीय राष्ट्रीय महासभा की स्थापना में ऊपर के तत्व तथा कई प्रादेशिक संस्थाओं का भी योगदान था। इन संस्थाओं ने राष्ट्रीय महासभा की स्थापना की भूमिका तैयार की थी ।

**इतना जानिए**

**भारतीय राष्ट्रीय महासभा से पहले के प्रादेशिक संगठन :**

- बंगाल ब्रिटिश इंडियन सोसायटी - कोलकाता (कलकत्ता)
- बाम्बे एसोसियेशन - मुंबई
- मद्रास नेटिव सभा - चेन्नई (मद्रास)
- सार्वजनिक सभा - पूना
- इंडियन एसोसियेशन - कोलकाता (कलकत्ता)

3.2 ए.ओ.ह्यूम

सर एलन ऑक्टेवियन ह्यूम (ए.ओ.ह्यूम) नामक निवृत्त अंग्रेज अधिकारी को विश्वास हो चुका था कि साम्राज्य ऊपर से जितना सुरक्षित दिखलायी पड़ रहा है, उतना नहीं है । उनका विचार था कि जनता के असंतोष को कम नहीं किया गया तो 1857 के स्वतंत्रता संग्राम जैसी घटनाएँ फिर से घटने लगेंगी । इस जनाक्रोश को रोकने के लिए उन्होंने संवैधानिक संस्था की स्थापना करने का विचार किया । तत्कालीन वाइसराय डफरिन को समझाया । निवृत्त अधिकारी के विचार को वाइसराय का भी समर्थन प्राप्त हुआ ।

ए. ओ. ह्यूम के प्रयत्नों से दिसम्बर 1885 में महासभा की स्थापना मुंबई में की गयी । मुंबई की गोकुलदास तेजपाल संस्कृत पाठशाला में 28 दिसम्बर 1885 के दिन व्योमेशचन्द्र बनर्जी की अध्यक्षता में उसका प्रथम अधिवेशन हुआ । उसमें भारत के अलग-अलग प्रदेशों में से 72 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया । उसमें दादाभाई नवरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले, फिरोज शाह मेहता, बदरुद्दीन तैयबजी, के. टी. तेलंग, दिनशा वाच्छा आदि मुख्य व्यक्ति थे । देश की अनेक समस्याओं पर चर्चाएँ हुईं ।

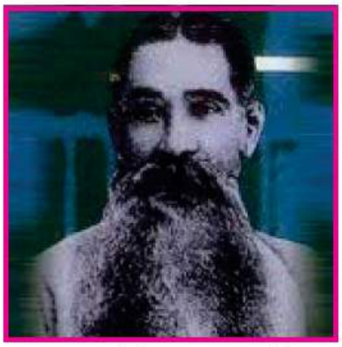

**3.3 व्योमेशचन्द्र बनर्जी**

**3.4 भारतीय राष्ट्रीय महासभा ( कांग्रेस ) प्रथम अधिवेशन, मुंबई - 1885**

**इतना जानिए**

| अधिवेशन | स्थल | प्रमुख | वर्ष | सदस्य |
|---|---|---|---|---|
| दूसरा | कोलकाता | दादाभाई नवरोजी | 1886 | 432 |
| तीसरा | मद्रास | बदरुद्दीन तैयबजी | 1887 | 607 |

## महासभा के आरंभिक चरण की कार्यवाही (1885-1905)

महासभा के आरंभिक चरण की कार्यवाही संवैधानिक थी । महासभा ने सरकार के समक्ष राजनीतिक अधिकार, आर्थिक और सामाजिक विकास और शैक्षणिक विकास के लिए की गई माँगों की अंग्रेज सरकार ने अवगणना की थी । इन माँगों ने भविष्य की लड़ाई के लिए मजबूत नींव रखी थी । सरकारी नौकरियों में भारतीयों को अधिक प्रमाण में लेने, सैनिक व अन्य विभागों में होने वाले खर्च को कम करने, किसानों को कर्ज में छूट देने, गृहउद्योगों को प्रभावी बनाने जैसी माँगें रखी गई थीं ।

महासभा द्वारा केन्द्रीय और प्रांतीय विधानसभाओं का विस्तार करके उसमें 50 प्रतिशत चुने हुए सदस्य रखना तथा कार्यकारिणी में संभव हो उतने अधिक से अधिक सीमा तक विधानसभा (धारासभा) को जिम्मेदार बनाना – ऐसे प्रस्ताव भी पारित किए गए थे । महासभा की माँगों के कारण सरकार अखबार पर लगे हुए नियन्त्रण को दूर करके व्यक्ति स्वातंत्र्य तथा वाणी स्वातंत्र्य प्रदान करने वाले कानून पारित किये थे । महासभा ने शिक्षित वर्ग में राष्ट्रीय चेतना जागृत करके उसे राजनीतिक प्रशिक्षण दिया । उससे भविष्य के स्वाधीनता संघर्ष के लिए योग्य नेता प्राप्त हुए ।

**प्रवृत्ति**

किसी भी सामाजिक संस्था की मुलाकात लेकर उसकी कार्यपद्धति के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए ।

### 'फूट डालो और शासन करो' (डिवाइड एण्ड रूल)

भारतीय राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) की स्थापना की शुरुआत में अंग्रेज शासकों उसके प्रति सहानुभूति रखते थे परन्तु थोड़े समय के बाद वे इसका विरोध करने लगे । कांग्रेस के अधिवेशन में शुरुआत में सरकारी अधिकारी उपस्थित रहते थे । बाद में सरकार ने उन्हें कांग्रेस के अधिवेशन में उपस्थित रहने पर प्रतिबंध लगा दिया । गवर्नर जनरल कर्जन ने राष्ट्रीयता विरोधी कितने ही कदम उठाये और भारत के लोकमत की अवगणना करने लगे । कर्जन ने 'फूट डालो और शासन करो' की नीति अपनाकर ई.सन् 1905 में बंगाल का विभाजन कर दिया ।

### बंगाल का विभागन (1905)

बंगाल ब्रिटिश भारत का सबसे बड़ा प्रांत था । उसमें बिहार और ओडिशा (उड़ीसा) के कितने ही भागों का समावेश होता था । उसकी आबादी 7 करोड़ 80 लाख से भी अधिक थी । इतने बड़े प्रान्त का संचालन करना कठिन होने से उसका विभाजन करना आवश्यक था । फिर भी उस प्रांत में से बिहार और ओडिशा के प्रदेश अलग करने के बदले मुस्लिम बाहुल्य वाले पूर्व बंगाल को उसमें से अलग कर दिया गया । बंगाल उस समय बहुत जाग्रत प्रांत था । वाइसराय कर्जन मुस्लिम बहुल इलाके को अलग करके हिन्दू-मुसलमानों के बीच सांप्रदायिकता पैदा करके बढ़ी रही राष्ट्रीय जागृति को कमजोर कर देना चाहता था । राष्ट्रीय नेता और लोग सरकार के इरादे को समझ गये और उन्होंने इस विभाजन का उग्र विरोध किया ।

**विचार कीजिए**

बंगाल का विभाजन होने से किन-किन बातों में नुकसान हो सके, ऐसा था ?

### बंगभंग आन्दोलन

3.5 बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय

बंगाल की एकता को तोड़ने वाले इस विभाजन का विरोध करने के लिए बंगाल में सार्वजनिक सभाओं और जुलूसों के कार्यक्रम सम्पन्न हुए । असंख्य पत्रिकाएँ बाँटी गयीं । इस आन्दोलन में बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की 'आनन्दमठ' उपन्यास का 'वंदेमातरम्' गीत लड़ाई का नारा बन गया । पूरे देश में राष्ट्रीय भावना की अभूतपूर्व लहर दौड़ गयी ।

जिस दिन विभाजन का अमल शुरू हुआ वह दिन बंगाल में 'शोकदिवस' के रूप में मनाया गया । पूरे प्रदेश में हड़ताल की गयी । रवीन्द्रनाथ ठाकुर की सलाह से इस दिन को 'एकता दिन' के रूप में मनाया गया ।

### स्वदेशी आन्दोलन

बंगभंग के आन्दोलन को उग्र और व्यापक बनाने का निश्चय किया गया । इस आन्दोलन के मुख्य तीन लक्षण थे : (1) स्वदेशी माल का व्यापार करना, (2) विदेशी माल का बहिष्कार करना तथा (3) राष्ट्रीय शिक्षा प्राप्त करना ।

इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए बंगाल के लोगों ने आन्दोलन चलाया । एक आन्दोलन समिति की रचना की गयी । उसमें सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, विपिन चंद्र पाल और अरविंद घोष जैसे कांग्रेस के अग्रगण्य नेता थे । विदेशी कपड़े और अन्य चीज वस्तुओं का बहिष्कार करके स्वदेशी चीज वस्तुओं का उपयोग करने के लिए लोगों से आग्रह किया गया । स्वदेशी चीज वस्तुओं का लाभ लोगों को समझाया गया । वर्तमान पत्रों में लेख, सभा, आमसभा और लोकगीतों के द्वारा स्वदेशी का प्रचार किया गया । स्वदेशी चीज वस्तुएँ बनाने वाले कारखाने शुरू किए गये । इंग्लैण्ड से आयात होने वाले कपड़े, नमक, चीनी, बूट(जूते) ,सिगरेट,तम्बाकू आदि का आयात कम हो गया और भारत में बने हुए कपड़े व अन्य चीज वस्तुओं का विक्रय बढ़ा । स्वदेशी आन्दोलन बंगाल के अलावा भारत के अन्य प्रांतों में फैला गया ।

**प्रवृत्ति**

1) मानो कि आप ई. सन् 1905 के समय के विद्यार्थी हैं । देश में स्वदेशी आन्दोलन चल रहा है । इस आन्दोलन में लोगों को शामिल करने हेतु पोस्टर बनाइए ।
2) वर्तमान समय में आपके आसपास दिखायी पड़ने वाली चीज-वस्तुओं में से स्वदेशी और विदेशी चीज वस्तुओं की सूची बनाइए ।

### राष्ट्रीय शिक्षा

स्वदेशी और बहिष्कार के साथ जुड़े हुए 1905 के इस आन्दोलन का तीसरा महत्वपूर्ण लक्षण राष्ट्रीय शिक्षा थी । बंगभंग आन्दोलन में विद्यार्थियों ने खूब बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया । इसीलिए विद्यार्थियों को सामूहिक दंड करने से लेकर उन्हें विद्यालय कॉलेज से निकाल देने तक का कदम उठाया गया । परिणामस्वरूप वैकल्पिक शिक्षा के रूप में राष्ट्रीय विद्यालय शुरू किए गए । बंगाल में ई. सन् 1907 में 25 राष्ट्रीय माध्यमिक विद्यालय और 300 राष्ट्रीय प्राथमिक विद्यालय शुरू किए गये । रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने ई. सन् 1901में शान्ति निकेतन में विश्वभारती की शुरुआत की । अंग्रेज सरकार बंगभंग आन्दोलन को तोड़ सकने में असफल रही । अन्त में ई. सन् 1911 में अंग्रेज सरकार को बंगाल का विभाजन रद्द करना पड़ा । बंगाल की प्रजा का शांत और अहिंसक मार्ग से प्राप्त की हुई यह एक यादगार और ऐतिहासिक विजय थी ।

**इतना जानिए**

रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने शांतिनिकेतन में जो विश्वभारती विद्यालय की शुरुआत की थी, उसे ई. सन् 1951 में विश्वभारती केन्द्रीय विश्वविद्यालय का स्थान प्राप्त हुआ । जहाँ विद्यार्थियों को स्वावलम्बी और जीवन व्यवहार का पाठ सिखलाया जाता है ।

### गरम दल का उदय

दादाभाई नवरोजी, सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, गोपाल कृष्णगोखले, फिरोजशाह मेहता आदि नेता संवैधानिक मार्ग से राजनीतिक अधिकार प्राप्त करने का प्रयत्न करते थे । उन्होंने अपने समय के अनुसार नरम मार्ग अपनाया था । इसीलिए वे 'नरमदल' के रूप में पहचाने गए । नरम दल के नेताओं ने हिंद के सुशिक्षित मध्यम वर्ग को संगठित करके मजबूत राष्ट्रीय चेतना के लिए पूर्व भूमिका तैयार किया । उन्होंने स्वशासन, समानता, लोकशाही और स्वतन्त्रता के विचारों का भारतीय प्रजा में बीजारोपण का कार्य किया । उनके कार्यों के परिणामस्वरूप जाग्रत हुए भारत के युवावर्ग उत्साही, आक्रमक और आत्मविश्वास से पूर्ण थे । उन्हें अब नरम नीति के बदले आक्रामक नीति को अपनाने की आवश्यकता महसूस होने लगी थी ।

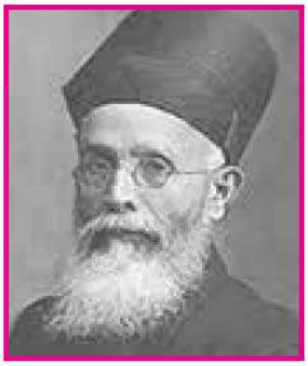

3.6 दादाभाई नवरोजी

3.7 सुरेन्द्रनाथ बनर्जी

3.8 गोपालकृष्ण गोखले

**नरम दल के नेता**

नरम दल के नेताओं के मत के विरुद्ध 'लाल, बाल और पाल' की त्रिपुटी से पहचाने जाने वाले लाला लजपत राय (पंजाब), बाल गंगाधर तिलक (महाराष्ट्र) और विपिनचन्द्र पाल (बंगाल) जैसे नेताओं ने स्वराज को इनाम के रूप में नहीं परन्तु अधिकार से प्राप्त करना चाहते थे । वे सक्रिय आन्दोलन में विश्वास रखने वाले उग्र व्यवहार के होने के कारण वे गरम दल के रूप में पहचाने गए ।

**गरम दल के नेता**

### लोकमान्य तिलक (1856-1920)

3.9 लोकमान्य तिलक

लोकमान्य तिलक के रूप में प्रसिद्ध हुए बाल गंगाधर तिलक 'गरम दल' के मुख्य नेता थे । इन्हों ने एक मूलमंत्र दिया – 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे हम प्राप्त करके ही रहेंगे ।' इन्होंने 'गणेशचुतर्थी' और 'शिवाजी जयंती' उत्सव मनाना शुरू किया । इन्होंने मराठी भाषा में 'केसरी' और अंग्रेजी भाषा में 'मराठा' नामके दो समाचारपत्र शुरू किए । उसका बहुत ही अच्छा प्रभाव हुआ । ई.सन् 1916 में होमरूल आंदोलन में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभायी थी ।

**विचार कीजिए**

लोकमान्य तिलक ने 'गणेश चतुर्थी' और 'शिवाजी जयंती' मनाना क्यों शुरू किया ?

## लाला लजपतराय ( 1856-1928 )

3.10 लाला लजपतराय

लाला लजपतराय 'शेर-ए-पंजाब' के रूप में प्रसिद्ध हुए थे । इन्होंने 'दी पंजाबी' और 'दी प्यूपिल' जैसे समाचारपत्र शुरू किए थे । ई.सन् 1928 में इन्होंने 'सायमन कमीशन' का विरोध किया था । पुलिस की लाठियों का प्रहार हुआ तब इन्होंने कहा था – ''मेरे ऊपर किए गए लाठी के एक-एक प्रहार ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत में कील बन जायेगा । इन्हें अस्पताल में भर्ती करना पड़ा । वहाँ ही इनकी मृत्यु हुई ।

## विपिनचंद्र पाल ( 1858-1932 )

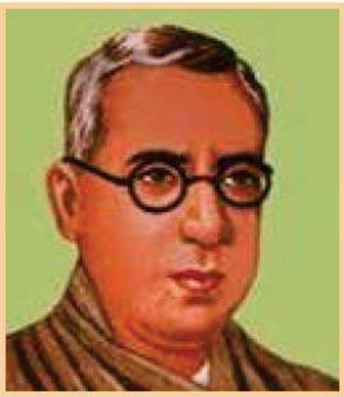

3.11 विपिनचंद्र पाल

लाल, बाल और पाल की त्रिपुटी के तीसरे बंगाली नेता विपिनचन्द्र पाल थे । शुरुआत में ये 'ब्रह्मसमाज' के सम्पर्क में आये थे । इन्होंने 'न्यू इंडिया' साप्ताहिक और 'वंदे मातरम' समाचारपत्र शुरू किया था । अंग्रेज सरकार इन पर ने युवकों को हिंसक मार्ग पर ले जातने का आरोप लगाया था । ये प्रचंड आन्दोलन के द्वारा स्वराज्य प्राप्त करने के पक्षधर थे ।

## मुस्लिम लीग की स्थापना ( 1906 )

अंग्रेजों ने भारत में 'फूट डालो और राज्य करो' की नीति अपनाई । भारत में उग्र राष्ट्रवाद का तेजी से फैलाव हुआ था । तब अंग्रेजों ने राष्ट्रीय चेतना को समाप्त करने का प्रयास किया था । भारत में मुस्लिमों के एक समूह को समझाने में अंग्रेज सफल रहे । परिणामस्वरूप ई.स. 1906 में ढाका में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई । इस संस्था की स्थापना में धार्मिक प्रमुख आगाखान, ढाका के नवाब सलीमुल्लाखाँ, वाइसराय मिन्टो और उनके व्यक्तिगत मंत्री डनलॉप स्मिथ ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी ।

## होमरूल आन्दोलन ( 1916 )

3.12 ऐनी बेसन्ट

अप्रैल, 1916 में बाल गंगाधार तिलक ने पूना में 'इंडियन होमरूल लीग' की स्थापना की । तिलक ने घोषणा की थी कि 'स्वराज्य मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है । मैं उसे प्राप्त करके ही रहूँगा ।' तिलक ने 'केसरी' और 'मराठा' समाचार पत्रों में लेख लिखे , भाषण दिए और लोकमत जाग्रत किया । इस समय में ही तिलक को 'लोकमान्य' के रूप में सम्मानित किया गया । 'ऐनीबेसन्ट' मद्रास में सितम्बर 1916 में 'होमरूल लीग' की स्थापना की । इन दोनों संस्थाओं का उद्देश्य संवैधानिक मार्ग से 'होमरूल'(उत्तरदायी राज्यतंत्र) प्राप्त करने का था। ऐनी बेसन्ट ने अपने साप्ताहिक 'दी कॉमनविल' और दैनिक समाचार पत्र 'न्यू इंडिया' में लेख लिखे । ऐनी बेसन्ट ब्रिटिश सरकार को हिन्द के 'जवाबदार राज्यतंत्र' और

'गृहस्वराज्य' शीघ्र ही देने का अनुरोध किया । कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने होमरूल आन्दोलन को समर्थन दिया । अंग्रेज सरकार ऐनी बेसन्ट के इस आन्दोलन से चौंक गयी । मद्रास सरकार ने एनी बेसन्ट को गिरफ्तार कर दिया । उन्हें उटकमंड में नजरकैद कर लिया गया । ऐनी बेसन्ट को मुक्त कराने के लिये देश में सभा और जुलूस के द्वारा जगह-जगह विरोध प्रकट किया जाने लगा और अन्त में अंग्रेज सरकार को उन्हें छोड़ देने के लिए विवश होना पड़ा ।

**इतना जानिए**

ऐनी बेसन्ट को दिसम्बर 1917 में कोलकाता में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में सर्वप्रथम महिला प्रमुख के रूप में पसंद किया गया था ।

### लखनऊ समझौता (1916)

ई.सन् 1915 में कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने एक साथ मुंबई में अधिवेशन आयोजित किया । एक वर्ष के बाद कांग्रेस और मुस्लिम लीग का वार्षिक अधिवेशन एक साथ ही लखनऊ में रखा गया । लखनऊ के कांग्रेस के अधिवेशन में लोकमान्य तिलक उपस्थित रहे । ई.सन् 1907 में सूरत कांग्रेस अधिवेशन में नरम दल तथा गरम दल के लोग हुए अलग थे, वे अब तक हो गए। कांग्रेस और मुस्लिम लीग के नेताओं ने ई.सन् 1916 में लखनऊ में समझौता किया । उस समझौते को 'लखनऊ समझौता' के रूप में प्रसिद्ध हुआ । इस समझौते से कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने राजनैतिक पक्ष के रूप में राष्ट्र के हित को महत्त्व दिया । जिससे स्वराज्य आन्दोलन को बल मिला ।

## सुभाषचन्द्र बोस और आजाद हिन्द फौज

सुभाषचन्द्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को ओडिशा (उड़ीसा) के कटक में हुआ था । उनकी माता का नाम प्रभावती और पिता का नाम जानकीनाथ बोस था । बचपन से ही वे तीव्र बुद्धि-प्रतिभा वाले थे । ई.सन् 1920 में लंदन में आई.सी.एस. की परीक्षा में चौथे नम्बर से पास हुए थे । भारत में आने के बाद भारतीय राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) में शामिल हुए । देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया । ग्यारह बार राजनीतिक कैदी के रूप में पकड़े गए । ई.सन् 1938 में हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन में सुभाषचन्द्र बोस कांग्रेस के अध्यक्ष बने । उसके बाद ई.सन् 1939 में त्रिपुरा में हुए कांग्रेस के अधिवेशन में वे दूसरी बार कांग्रेस के अध्यक्ष बने । अनेक मतभेदों के कारण इन्होंने अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया ।

3.13 सुभाषचन्द्र बोस

मई 1939 में सुभाषचन्द्र बोस फॉरवर्ड ब्लॉक नामक नये राजनीतिक पक्ष की रचना की । यूरोप में द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू हुआ । फॉरवर्ड ब्लॉक ने युद्ध विरोधी प्रचार शुरू किया । सुभाषचन्द्र बोस और उनके साथियों को सरकार ने इन्हें जेल से मुक्त कर दिया । उनके ही मकान में नजरकैद कर दिया गया ।

17 जनवरी, 1941 की मध्यरात्रि को सुभाषचन्द्र बोस अंग्रेज सरकार के नजरकैद में से भाग निकले । वे वेशपरिवर्तन करके पेशावर, काबुल और

मास्को होते हुए बर्लिन पहुँच गये । बर्लिन पहुँचकर रेडियो प्रवचन दिया, जिससे अंग्रेज सरकार चौंक गयी । वहाँ से वे सुमात्रा होते हुए जापान गए ।

**इतना जानिए**

जर्मनी तथा जापान अंग्रेजों के दुश्मन थे । इन संयोगों का लाभ लेकर सुभाषचन्द्र बोस जर्मनी के हिटलर तथा जापान के प्रधानमंत्री टोजो के साथ बातचीत की । जापान अधिक सहायक हो सकता है ऐसा सोचकर उन्होंने एशियाई देश में से लड़ाई शुरू रखने का निर्णय किया ।

## आजाद हिन्द फौज के नेता के पद पर

अंग्रेज सेना के भारतीय अधिकारी कैप्टन मोहनसिंह जापान की शरण में गए हुए भारतीय सैनिकों में से 'आजाद हिंद फौज' की रचना की । जापान सरकार तथा रासबिहारी बोस के बीच मतभेद होने से मोहनसिंह को त्यागपत्र दे देना पड़ा । 'आजाद हिन्द फौज' का भविष्य थोड़े समय के लिए अनिश्चित बन गया । रास बिहारी बोस सर्वसम्मति से 4 जुलाई, 1943 के 'आजाद हिन्द फौज' के सर्वोच्च नेता के रूप में सुभाषचन्द्र बोस की नियुक्ति की । सभी अधिकार उन्हें सौंप दिया गया । जुलाई 1943 में सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व संभाल लिया । उन्हें नेताजी का प्यारा नाम दिया गया । नेताजी ने फौज को 'चलो दिल्ली' का नारा दिया । इन्होंने भारत को 'जय हिंद' का मंत्र दिया ।

सुभाषचन्द्र बोस ने दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों का प्रवास करके वहाँ के भारतीयों के पास से मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिए उनका सर्वस्व बलिदान कर देने की माँग की । 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' सूत्र के द्वारा आजादी के लिए आह्वान किया ।

**3.14 सुभाषचन्द्र बोस और आजाद हिन्द फौज के साथी**

**प्रवृत्ति**

भारत के विविध आन्दोलनों के समय प्रचलित हुए नारों की सूची बनाइए ।

### अंतरिम सरकार

अक्टूबर 1943 में सुभाषचन्द्र बोस ने सिंगापुर में अंतरित सरकार (आरज़ी हकुमत आजाद हिन्द) की स्थापना की । सुभाषचन्द्र बोस ने सेना के सर्वोच्च नेता के रूप में पद संभाला । अंतरिम सरकार ने इंग्लैड और अमेरिका के सामने युद्ध घोषित किया ।

### आजाद हिंद फौज की कार्यवाही

सुभाषचन्द्र बोस आजाद हिन्द की कामचलाऊ सरकार के सर्वोच्च नेता बनने के बाद आजाद हिन्द फौज का पुनः आयोजन किया । इन्होंने सैनिकों को सघन प्रशिक्षण दिया । सुभाष चन्द्र बोस ने आजाद हिंद फौज में अलग-अलग सैनिक टुकड़ी तैयार किया ।

**इतना जानिए**

सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिंद फौज में चार सैनिक ब्रिगेड तैयार की । जिसका नाम इन्होंने गाँधी, सुभाष, नेहरू और आजाद ब्रिगेड रखा । इन्होंने स्त्रियों की एक अलग सैनिक ब्रिगेड तैयार किया था, जिसका नाम इन्होंने झाँसी की रानी ब्रिगेड रखा था ।

आजाद हिन्द फौज ने भारत की पूर्वी सीमा आराकान और इम्फाल इलाके में कई विजय प्राप्त की । उसके बाद आपूर्ति की भयंकर कमी और तेज बरसात के कारण फौज को पीछे हटना पड़ा । जापान के ऊपर अमेरिका द्वारा परमाणु बम फेंका गया । जापान पराजित हुआ । युद्ध की परिस्थिति बदल गयी और आजाद हिन्द फौज का कोई भविष्य नहीं रहा । चार हजार सैनिकों की मृत्यु हुई और 25,000 सैनिक कैद कर लिए गए ।

**विचार कीजिए**

कल्पना कीजिए कि 'आजाद हिंद फौज' को सम्पूर्ण सफलता मिली होती तो ?

नेताजी की प्रतिज्ञा थी कि – ''मैं गुलाम हिन्दुस्तान में पैर नहीं रखूँगा'' नेताजी रंगून और बैंकाक छोड़कर विमान मार्ग से आगे बढ़े । जापान द्वारा की गई घोषणा के अनुसार 18 अगस्त, 1945 के दिन फॉर्मोसा के ताइपेई हवाई अड्डे से विमान उड़ा, तुरन्त ही उसमें आग लग गयी । नेताजी बुरी तरह से जल गए और उनकी मृत्यु हो गई ।

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

(1) भारत में राष्ट्रवाद उदय होने के मुख्य कारण कौन-कौन से थे ?

(2) भारतीय राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) की प्रथम चरण की कार्यवाही का वर्णन कीजिए ।

(3) बंगाल के विभाजन का क्या परिणाम आया ?

(4) भारत में राष्ट्रीय शिक्षा की आवश्यकता क्यों उत्पन्न हुई ?

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में लिखिए :**

(1) राष्ट्रवाद किसे कहते हैं ?

(2) 'नरम दल' किसे कहते हैं ? नरम दल के नेताओं के नाम लिखिए ।

(3) 'गरम दल' किसे कहते हैं ? गरम दल के नेताओं के नाम लिखिए ।

(4) बंग-भंग दिवस । किस तरह मनाया गया ?

(5) मुस्लिमलीग की स्थापना करने में किन-किन लोगों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ?

(6) 'होमरूल लीग' की स्थापना किसने-किसने किया ?

(7) सुभाषचन्द्र बोस का जन्म कहाँ हुआ था ?

(8) सुभाषचन्द्र बोस जापान किस तरह पहुँचे ?

(9) आजाद हिन्द फौज की रचना किस तरह की गई ?

(10) सुभाषचन्द्र बोस ने कौन-कौन से सूत्र दिए ?

(11) अंतरिम सरकार की स्थापना कहाँ की गई थी ?

**3. मुझे पहचानिए :**

(1) मेरे प्रयत्नों से हिन्द राष्ट्रीय महासभा की स्थापना हुई । ____________

(2) मैंने भारत में 'फूट डालो राज करो' की नीति अपनायी । ____________

(3) मैंने आनन्द मठ नामक उपन्यास लिखा । ____________

(4) मैं भारतीय राष्ट्रीय महासभा का प्रथम अध्यक्ष था । ____________

(5) 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे मैं प्राप्त करके रहूँगा ।' ____________

**4. उचित जोड़े बनाइए :**

| ( अ ) | ( ब ) |
|---|---|
| (1) रवीन्द्रनाथ ठाकुर | (1) न्यू इन्डिया |
| (2) लोकमान्य तिलक | (2) केसरी |
| (3) लाला लजपतराय | (3) दि कॉमनविल |
| (4) विपिनचन्द्र पाल | (4) शेर-ए-पंजाब |
| (5) ऍनी बेसन्ट | (5) शांतिनिकेतन |
| | (6) अमृतबाजार पत्रिका |

**प्र. 5 संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :** आजाद हिन्द फौज

# 4

# सर्वोच्च न्यायालय

**4.1 समाचार पत्र में छपा सर्वोच्च और उच्च न्यायालय के निर्णय**

**प्रवृत्ति**

निर्णय की कटिंग्स समाचार पत्र में एकत्र करके निम्नलिखित आधार पर नीचे दिए कोष्ठक में जानकारी को दर्शाइए:

| क्रम | कोर्ट का नाम | किसने आवेदन किया (केस) | किसके सामने केस किया | क्या निर्णय आया |
|---|---|---|---|---|
| 1. | | | | |
| 2. | | | | |
| 3. | | | | |

यहाँ आपने देखा कि विविध अदालतें अत्यंत उपयोगी हैं । विविध अदालतें निर्णय सुनाती हैं । परन्तु क्या आपको मालूम है, अदालतों की आवश्यकता क्यों महसूस होती है ?

### पढ़िए और विचार कीजिए :

लोगों के हितों की रक्षा और कल्याण के लिए कानून की आवश्यकता पड़ती है । जब देश का कोई नागरिक या संस्था कानून का उल्लंघन करता है, तब एक निश्चित प्रक्रिया अपनायी जाती है । हमारे देश में न्यायतंत्र में न्याय देने के लिए तहसील की अदालत, जिले की अदालत, हाईकोर्ट (उच्च न्यायालय), सर्वोच्च अदालत-इस तरह से निरंतर न्याय व्यवस्था है । भारतीय लोकतंत्र में न्यायतंत्र यह सरकार के तीन अंगों में से एक महत्त्वपूर्ण अंग है । न्यायतंत्र को विधायिका और कार्यकारिणी से स्वतंत्र रखा गया है । स्वतन्त्र न्यायतंत्र का क्या अर्थ होता है ? क्या आपके आसपास की अदालत और नई दिल्ली स्थित सर्वोच्च अदालत के बीच कोई सम्बंध है ? इस प्रकरण में आपको इन प्रश्नों का उत्तर मिलेगा ।

**4.2 सर्वोच्च न्यायालय का चित्र**

### सर्वोच्च न्यायालय का क्या कार्य होता है ?

हमारे देश का सर्वोच्च न्यायालय दिल्ली में है । देश की सभी अदालतों में सर्वोच्च न्यायालय का स्थान सबसे ऊँचा है । भारत में 28 जनवरी, 1950 के दिन सर्वोच्च न्यायालय कार्यरत हुआ। मलूभतू अधिकारों के पालन कराने का अधिकार सर्वोच्च न्यायालय के पास है। कोई भी व्यक्ति या संस्था सर्वोच्च न्यायालय में न्याय प्राप्त करने के लिए आवेदन कर सकता है ।

### विवादों पर निर्णय देना

सर्वोच्च न्यायालय नागरिकों को, नागरिक और सरकार, राज्यों के बीच तथा केन्द्र और राज्य के बीच विवादों को दूर करने का कार्य करता है । इसे समझने के लिए हम गुजरात राज्य के नर्मदा बचाओ आन्दोलन के केस को समझें ।

नर्मदा नदी पर नवागाँव के पास बन रहे जलाशय के बाँध की ऊँचाई 110 मीटर से बढ़े नहीं, उसके लिए मध्यप्रदेश तथा पर्यावरण की सुरक्षा करने वाली स्वैच्छिक संस्थाओं ने इसका विरोध किया था । उनके मतानुसार इस बाँध के निर्माण से वहाँ रहने वाले आदिवासियों को वहाँ से हटना पड़ेगा इससे इनके मूलभूत अधिकारों का हनन होगा । राज्यों के बीच के इस विवाद का निर्णय लाने के लिए 8 मार्च, 2006 के दिन सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय देते हुए बताया कि बढ़ती हुई आबादी को ध्यान में रखकर यह योजना अधिक महत्वपूर्ण है । सरदार सरोवर योजना के कारण सजीवसृष्टि और पर्यावरण में सुधारात्मक परिवर्तन होने की संभावना है । इस योजना से गुजरात, मध्यप्रदेश और राजस्थान के अधिकांश भागों में पानी पहुँचाया जा सकेगा और उस क्षेत्र में रेगिस्तान को आगे बढ़ने से रोका जा सकता है । इस योजना से विपरीत प्रभाव जिन लोगों पर पड़ेगा, उन लोगों का क्रमश: पुनर्वसन किया जाएगा । इस तरह से उनके मूलभूत अधिकारों का हनन नहीं होगा ।

**4.3 नर्मदा बाँध का चित्र**

**प्रवृत्ति**

**समाचार पत्र में आने वाले अनेक निर्णयों को नीचे के कोष्ठक में लिखिए :**

| **विविध निर्णय के प्रसंग** | **उदाहरण** |
|---|---|
| 1. केन्द्र और राज्य के बीच विवाद | |
| 2. दो राज्यों के बीच विवाद | |
| 3. दो नागरिकों के बीच विवाद | |
| 4. व्यक्ति और सरकार के बीच विवाद | |
| 5. व्यक्ति और संस्था के बीच विवाद | |

## न्यायतंत्र स्वतंत्र क्यों ?

मान लीजिए कि किसी शक्तिशाली व्यक्ति ने आपके परिवार की जमीन पर अधिकार कर लिया है । आप एक ऐसी व्यवस्था में रहते हैं, जहाँ व्यक्ति किसी न्यायाधीश को उसके पद पर से हटा सकता है अथवा उसका स्थानान्तरण करवा सकता है । जब आप इस मामले को अदालत में ले जायें तब न्यायाधीश भी उसका पक्ष लेता हुआ दिखलायी पड़े । शक्तिशाली व्यक्ति का न्यायाधीश पर यदि नियन्त्रण रहे तो न्यायाधीश स्वतन्त्र

रूप से कोई निर्णय नहीं ले सकता । स्वतन्त्रता का यह अभाव न्यायाधीश को इस बात के लिए मजबूर कर सकता है उसे हमेशा शक्तिशाली व्यक्ति के पक्ष में निर्णय देना पड़े । परन्तु भारतीय संविधान इस प्रकार के हस्तक्षेप को पसंद नहीं करता है । इसीलिए हमारे संविधान में न्यायतंत्र को कार्यकारिणी, विधानसभा से स्वतंत्र रखा गया है । इसीलिए एक बार उच्च न्यायालय और सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति हो जाने के बाद किसी न्यायाधीश को उसके पद से हटा पाना बहुत ही कठिन हो जाता है । यदि किसी व्यक्ति को ऐसा लगे कि उसके मूलभूत अधिकारों का उल्लंघन हो रहा है, तो वह अदालत में जा सकता है ।

**विचार कीजिए**

इस प्रकार की न्यायव्यवस्था में एक नागरिक किसी भी शक्तिशाली व्यक्ति के विरुद्ध में केस जीत सकता है ? हाँ या नहीं ? चर्चा कीजिए ।

## विभिन्न स्तर की अदालतें क्या एक-दूसरे के साथ जुड़ी होती है ?

4.4 गन्दा पानी

जी हाँ, इस व्यवस्था को समझने के लिए केस करने की व्यवस्था को समझें । यदि किसी व्यक्ति को ऐसा लगे कि निचली अदालत के द्वारा दिया गया निर्णय योग्य नहीं है तो वह उसके ऊपर के न्यायालय में केस कर सकता है ।

अपील की व्यवस्था को समझने के लिए आइए, हम एक केस देखें । इस केस में वास्तविकता यह थी कि रतलाम नगरपालिका द्वारा बनाई हुई सड़क की दक्षिण दिशा में ही मकान आए हुए थे । इन मकानों के पीछे और कालेज की सीमा के साथ नगरपालिका की पुरानी सड़क और नयी सड़क सरकारी कालेज से संलग्न थी । इन दोनों के बीच से गंदे पानी का नाला निलकता था । उसमें रंग रसायन कारखानों का गंदा पदार्थ जिनमें से रंग रसायनों की दुर्गन्ध आती थी, उसे नाले में छोड़ दिया जाता था । उसके साथ इस नाले के किनारे रहने वाले आसपास के लोग शौचक्रिया व पेशाब करते थे ।

राज्य का स्वास्थ्य विभाग भी बहुत बड़ी संख्या में उत्पन्न होने वाले मच्छरों को अंकुश में रखने में निष्फल हो गया था । इसलिए स्थानीय लोगों ने इस गंदगी को दूर करने के लिये अनेक बार आवेदन पत्र दिया । परन्तु उस विभाग के अधिकारी गंदगी दूर करने में असफल रहे । परिणामस्वरूप स्थानीय लोग तहसील की अदालत में गए ।

न्यायाधीश ने स्थानीय लोगों के पक्ष में निर्णय देते हुए कहा कि....

**तहसील अदालत का निर्णय**

'नगरपालिका और टाउन इम्प्रुवमेन्ट ट्रस्ट ये दोनों उपद्रव रोकने में निष्फल गये हैं । इसीलिए इन दोनों संस्थाओं को तुरन्त उपद्रव दूर करने का आदेश किया जाता है । 15 दिन में पक्की गटर लाइन डालने की प्रक्रिया को पूरा करना ।'

नगरपालिका इस केस को रतलाम जिले की अदालत में ले गई ।

**जिला अदालत का निर्णय**

'तहसील की अदालत के निर्णय को अनुचित घोषित किया गया है ।'

स्थानीय निवासी इस केस को उच्च न्यायालय में ले गए । उच्च न्यायालय ने तहसील की अदालत के निर्णय को मान्य रखा । परन्तु उसने यह आदेश दिया कि.....

**उच्च न्यायालय का निर्णय**

'पक्की गटर लाइन के लिए 15 दिन के बजाय 7 महीने का समय दिया जाता है और गड्ढ़ों को मिट्टी से पाट दें जिससे उसमें पानी भर जाने से मच्छर न हों । यह कार्य दो वर्ष में पूरा करना ।'

रतलाम नगरपालिका इस आदेश से संतुष्ट नहीं थी । इसलिए उसने सर्वोच्च अदालत में केस दायर किया । सर्वोच्च अदालत ने तहसील के न्यायालय के आदेश को मान्य रखा और इसके अलावा ऐसा आदेश दिया कि....

**सर्वोच्च अदालत का निर्णय**

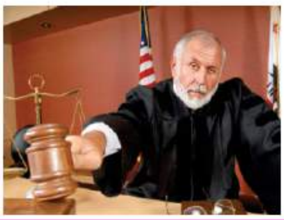

'नगरपालिका और राज्य सरकार दोनों सामूहिक रूप से यह प्रदूषण करने वाले रंग रसायन प्लान्ट को बंद करायें ।'

4.5 निर्णय देने वाले न्यायाधीशों के चित्र

**प्रवृत्ति**

वर्ग में शिक्षक की सहायता से तहसील अदालत से लेकर सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय की मॉक अदालत द्वारा आयोजन करें ।

4.6 हाथ लारी खींचता हुआ मजदूर

## क्या प्रत्येक व्यक्ति अदालत की शरण में जा सकता है ?

हम आगे देख चुके हैं कि प्रत्येक व्यक्ति अपने मूलभूत अधिकारों की रक्षा के लिये अदालत में जा सकता है । परन्तु वास्तव में गरीबों को अदालत में जाना काफी मुश्किल होता है । कानूनी प्रक्रिया में न केवल पैसा और कागजी कार्यवाही की जरूरत होती है परन्तु उसमें समय भी अधिक लगता है । यदि कोई गरीब व्यक्ति लिखना-पढ़ना न जानता हो और वह अपने परिवार का गुजारा मजदूरी से करता हो तो अदालत में जाना और न्याय प्राप्त करने का काम उसने लिए बहुत कठिन होता है ।

इस बात को ध्यान में रखकर 1980 के दशक में सर्वोच्च अदालत ने 'जनहित के लिए आवेदन पत्र' की व्यवस्था को स्वीकार किया है । इस तरह सर्वोच्च अदालत ने न्याय अधिक से अधिक लोगों तक पहुँच सके ऐसा प्रयास किया है । न्यायतंत्र की तरफ से कोई भी व्यक्ति अथवा संस्था के द्वारा ऐसे लोगों की तरफ से जनहित की याचिका करने का अधिकार दिया गया है । जिनके अधिकारों का उल्लंघन हो रहा है तो वह इस याचिका को उच्च न्यायालय अथवा सर्वोच्च अदालत में कर सकता है । 1980 के बाद जनहित याचिका के माध्यम से अनेक लोगों को न्याय दिया गया है । मजदूरों को अमानवीय श्रम से मुक्ति दिलाने के लिए जनहित याचिका का उपयोग किया गया था । बिहार जेल में सजा भोगने के बाद भी जिन्हें छोड़ा नहीं गया, ऐसे कैदियों को छुड़ाने के लिए भी जनहित याचिका का ही उपयोग किया गया था ।

इसले अलावा न्यायतंत्र को जब ऐसा लगे कि जनसमूह के किसी वर्ग में मानव अधिकारों का हनन हो रहा है तो उस पहलू पर वह स्वयं अपने ध्यान पर ले कर जनहित में आवश्यक न्याय दे सकता है ।

### इतना जानिए

सरकारी तथा सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों में बच्चों को दोपहर में जो भोजन दिया जाता है, उसकी व्यवस्था भी एक जनहित याचिका के फलस्वरूप ही हुई है ।

मूलभूत अधिकारों के साथ उसके अमल के उद्देश्य से दाखिल की जाने वाली जनहित याचिका यदि अयोग्य हो तो उस याचिका को दायर करने वाले व्यक्ति, व्यक्तियों या संस्था को सर्वोच्च अदालत दंड भी कर सकती है ।

## स्वाध्याय

**1. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

(1) नर्मदा योजना बहुत ही महत्वपूर्ण योजना है । उससे किसी भी नागरिक के मूलभूत अधिकारों का हनन नहीं होगा । ऐसा निर्णय सर्वोच्च न्यायालय ने क्यों दिया ? इसके विषय में चर्चा कीजिए ।

(2) न्यायतंत्र स्वतन्त्र क्यों होना चाहिए ?

(3) सार्वजनिक हित की याचिका की व्यवस्था को क्यों महत्वपूर्ण कदम माना जाता है ?

(4) रतलाम नगरपालिका के केस में अलग-अलग अदालतों द्वारा दिए गए निर्णयों को बताइए ।

**2. नगरपालिका के केस को ध्यान में रखकर नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए । जो वाक्य सत्य हो उसके सामने सही (✔) की निशानी कीजिए और जो वाक्य गलत (✘) हो, उसे सुधारकर फिर से लिखिए ।**

(क) नगरपालिका इस केस को जिला अदालत में ले गयी, क्योंकि उसे निचली अदालत के निर्णय से सन्तोष नहीं था । ☐

(ख) वह सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय से विरुद्ध उच्च न्यायालय में गई । ☐

(ग) उस विषय के निर्णय में सर्वोच्च अदालत ने उच्च न्यायालय के निर्णय को मान्य रखा । ☐

# 5

# भारत के क्रान्तिवीर

आज शहीद दिन होने से वृन्दा के स्कूल में 'दी लीजेंड आफ भगतसिंह' फिल्म दिखलाई जाने वाली थी । वर्गखण्ड में प्रवेश करते ही वर्गशिक्षक एक शेर बोलने लगे :

*'सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है,*
*देखना है जोर कितना बाजु-ए-कातिल में है ।'*

ये पंक्तियाँ बोलने के बाद वर्गशिक्षक भारत के वीर क्रान्तिकारियों के बारे में कहने लगे ।

हमारे देश की स्वराज संघर्ष की लम्बी यात्रा में अनेक नामी-अनामी शहीद हुए हैं । 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के बाद देश में अंग्रेज सरकार के सामने व्यक्तिगत रूप से या संगठन बनाकर शस्त्र उठाने वाले वीरों की वीरता की कथाओं (कहानियों) को आज गर्व से याद किया जाता है । जिन युवकों ने वीरतापूर्वक हथियार उठाए उन्हें हमारे देश के इतिहास में क्रान्तिकारी के रूप में पहचाना जाता है । उनकी प्रवृत्तियों को क्रान्तिकारी प्रवृत्ति माना जाता है । इन प्रवृत्तियों में शिक्षित, अशिक्षित, राजघराने के लोग और सामान्य लोगों ने भाग लिया था । भारत के सभी भागों में कम या अधिक प्रमाण में क्रान्तिकारी प्रवृत्ति जल्दी या देर से शुरू हुई थी । महाराष्ट्र में इस क्रान्ति के प्रणेता और क्रान्तिकारी प्रवृत्तियों के प्रथम शहीद वासुदेव बलवंत फड़के थे ।

**प्रवृत्ति**

वर्तमान समय की किसी एक क्रान्तिकारी प्रवृत्ति के विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए उसे अपने शब्दों में टिप्पणी लिखिए ।

5.1 क्रान्ति की मशाल

**चिनगारी**

*मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे,*
*बाकी न मैं रहूँ न मेरी आरजू रहे ।*
*जब तक है तन में जान, रगों में लहू रहे,*
*तेरा हो जिक्र या तेरी ही जूस्तजू रहे ।*

**– रामप्रसाद बिस्मिल**

## वासुदेव बलवंत फड़के

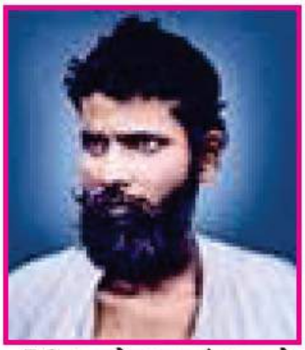

5.2 वासुदेव बलवंत फड़के

भारत में क्रान्तिकारी प्रवृत्ति की सर्वप्रथम शुरुआत करने वाले वासुदेव बलवंत फड़के थे । वे पूना में नौकरी करते थे । अंग्रेजी सरकार के अन्यायी त्रास से ऊबकर वासुदेव बलवंत फड़के ने नौकरी छोड़ दिया । देश को गुलामी में से मुक्त न करा दूँ तब तक मस्तक पर चंदन न लगाने की तथा बाल न कटवाने की प्रतिज्ञा ली थी । वासुदेव बलवंत फड़के ने अंग्रेज सरकार के सामने देशव्यापी सशस्त्र संगठन की गुप्त योजना बनाई थी ।

अंग्रेज सरकार ने वासुदेव बलवंत फड़के के लिए चार हजार रुपए का इनाम रखा था । वासुदेव बलवंत फड़के अंग्रेज थानों पर हमला करने, सरकारी खजानों को लूटने, बंदूक चलाने का प्रशिक्षण देते । अंग्रेज सरकार वासुदेव बलवंत फड़के की क्रान्तिकारी प्रवृत्तियों से चौंक उठी । उनको किसी भी कीमत पर गिरफ्तार करने का आदेश दिया ।

**इतना जानिए**

हैदराबाद जिले के एक गाँव में से रात को तीन बजे निद्रावस्था में वासुदेव बलवंत फड़के को गिरफ्तार किया । उन्हें जेल में कैद किया गया तो जेल की दीवार कूदकर भाग गए । 25 किलोमीटर दौड़ने बाद पकड़े गये । जेल में उनके ऊपर अत्याचार किया गया । फरवरी 1883 में एडन जेल में मृत्यु हुई ।

5.3 वीर सावरकर

## वीर सावरकर

वीर सावरकर का जन्म 28 मई, 1883 के दिन महाराष्ट्र के नासिक जिले के भगूर नामक गाँव में हुआ था । बचपन से ही वे क्रान्तिकारी विचार रखते थे । इन्होंने 'मित्रमेला' नामक संस्था की स्थापना की थी जो बाद में 'अभिनव भारती' नाम से प्रसिद्ध हुई । इस संस्था का उद्देश्य सशस्त्र क्रान्ति द्वारा भारत में से अंग्रेज शासन का अंत लाना था ।

वीर सावरकर ने भारत में विदेशी कपड़े की सर्वप्रथम होली जलाई थी । श्यामजी कृष्ण वर्मा की संस्था में से शिष्यवृत्ति प्राप्त करके उच्च शिक्षा के लिये लंदन गए ।

वीर सावरकर ने '1857 : भारत का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम' नामक पुस्तक लिखी । जो प्रकाशित होने के पहले ही प्रतिबंधित होनेवाली विश्व की प्रथम पुस्तक थी । अंग्रेज अफसर की हत्या में प्रयोग की गई पिस्तोल के अपराध में उन पर अदालत में केस चलाया गया । आजीवन कालापानी की सजा होने से इन्हें अंदमान जेल में भेज दिया गया । तबियत खराब होने से भारत में इन्हें नजरकैद रखा गया । 26 फरवरी, 1966 में वीर सावरकर की मृत्यु हुई ।

## खुदीराम बोस

5.4 खुदीराम बोस

खुदीराम बोस का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले के मोहबनी गाँव में 3-12-1889 के दिन हुआ था । बचपन में ही अपने माता-पिता की छत्रछाया खो दी । सत्येन बाबू नामक शिक्षक ने इन्हें क्रान्तिपथ की दीक्षा प्रदान किया । खुदीराम ने असहयोग आन्दोलन में भाग लेकर विदेशी कपड़े की होली जलायी थी । खुदीराम गंगा के पानी में डुबकी लगाकर नमक लेकर गुजरने वाली नावों को डुबा देते । इस तरह नमक के अन्यायी कानून को भंग करते थे ।

30 अप्रैल, 1908 के दिन न्यायाधीश किंग्स फोर्ड को जान से मारने के लिए खुदीराम और प्रफुल्ल चाकी ने न्यायाधीश की घोड़ागाड़ी पर बम फेंका । गाड़ी में बैठे हुए वकील केनेडी की पत्नी और पुत्री की मृत्यु हो गयी । न्यायाधीश किंग्सफोर्ड बच गया ।

**इतना जानिए**

प्रफुल्ल चाकी को जब पुलिस ने घेर लिया तब इन्होंने रिवाल्वर से आत्महत्या कर ली । खुदीराम को फांसी दे दी गई ।

**विचार कीजिए**

आजादी की लड़ाई के समय आप होते तो देश की आजादी के लिए क्या योगदान देते ?

## रामप्रसाद बिस्मिल

5.5 रामप्रसाद बिस्मिल

रामप्रसाद बिस्मिल का जन्म ई.सन् 1897 में उत्तरप्रदेश राज्य के शाहजहाँपुर में हुआ था । देश में असहयोग आन्दोलन शुरू हुआ तब विदेशी कपड़े की होली जलाने की जिम्मेदारी इन्होंने संभाली थी । काकोरी ट्रेन लूटने के कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, इसलिए इन्हें फाँसी की सजा हुई थी ।

बिस्मिल द्वारा लिखा गया साहित्य जब प्रकाशित हुआ तब उनके द्वारा लिखी गयी कविताओं ने राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

*दर-सो दीवार से हसरत (अपेक्षा) से नजर करते हैं*
*खुश रहो अहले वतन, हम तो सफर करते हैं ।*
**- बिस्मिल**

## अशफाक उल्लाखाँ

5.6 अशफाक उल्लाखाँ

अशफाक उल्लाखाँ ने हिन्दू-मुस्लिम एकता का आनोखा उदाहरण पूरा किया था । रामप्रसाद बिस्मिल के साथ इनकी बचपन से दोस्ती थी । ये खेलकूद के खूब शौकीन थे । घुड़सवारी और बन्दूक चलाने में काफी निपुण थे । शाहजहाँपुर में आर्यसमाज के मंदिर पर हुए हमले को उन्हों ने रोका था । काकोरी ट्रेन लूट योजना में इन्होंने भाग लिया था । इन्हें जेल में फांसी दे दी गई थी ।

*कुछ आरजू नहीं है, है आरजू तो यह,*
*रख दे कोई जरा-सी खाके वतन कफन में ।*

**– अशफाक उल्लाखाँ**

## चन्द्रशेखर आजाद

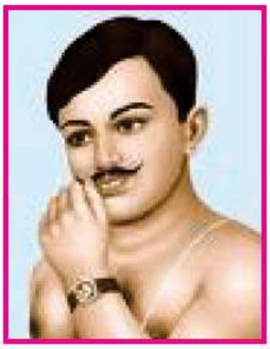

5.7 चन्द्रशेखर आजाद

चन्द्रशेखर आजाद का मूल नाम चन्द्रशेखर सीताराम तिवारी था । इनका जन्म 23 जुलाई, 1906 के दिन मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले के भावरा नाम गाँव में हुआ था । इनकी प्रारंभिक शिक्षा काशी में हुई । ये बचपन से ही देशभक्ति के रंग में रंगे हुए थे ।

असहयोग आन्दोलन में चन्द्रशेखर ने भाग लिया था । इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया । अंग्रेज पुलिस के हाथों पकड़े गए तब इनकी उम्र बहुत ही कम थी । इनके हाथों में हथकड़ी भी बेड़ी पड़ी हुई थी । अदालत में इनसे पूछा गया तुम्हारा नाम क्या है ? तब इन्होंने कहा 'आजाद', पिताजी का नाम 'स्वाधीनता' और अपना घर 'जेलखाना' बतलाया था । उसके बाद से इन्हें 'आजाद' के रूप में पहचाना गया ।

काकोरी ट्रेन लूट की घटना में इन्होंने भाग लिया था । देश में से चालीस क्रान्तिकारी पकड़े गए । आजाद भाग गए । इन्हें पकड़ने के लिये इनाम की घोषणा की गयी । आजाद ने प्रतिज्ञा ली थई कि – 'मैं जीते जी अंग्रेज सरकार के द्वारा गिरफ्तार नहीं हूँगा ।' ई.सन् 1931 की 27 फरवरी के दिन आजाद इलाहाबाद के अल्फ्रेड बाग में बैठे हुए थे तब अचानक अंग्रेज पुलिस से घिर गए । आजाद अकेले आधे घण्टे तक पुलिस टुकड़ी के साथ संघर्ष करते रहे और अंत में अपनी ही पिस्तौल से शहीद हो गए । चन्द्रशेखर आजाद से अंग्रेज पुलिस इतनी भयभीत थी कि दो तीन गोली चलाकर विश्वास करने के बाद चन्द्रशेखर आजाद के पास गई ।

### इतना जानिए

9 अगस्त, 1925 के दिन सरकारी खजाना रेलवे द्वारा सहारनपुर से लखनऊ जा रहा था तब क्रान्तिकारियों के द्वारा काकोरी नामक रेलवे स्टेशन पर उसे लूट लिया गया था । उसका मुख्य उद्देश्य क्रान्तिकारी प्रवृत्ति और हथियार के लिए धन प्राप्त करना था ।

**प्रवृत्ति**

आप किसी क्रान्तिकारी का स्मारक देखें हो अथवा उसके विषय में जानते हों तो उस क्रान्तिकारी के बारे में जानकारी एकत्र कीजिए ।

## भगतसिंह

5.8 वीर भगत सिंह

भगतसिंह का जन्म पंजाब के लायलपुर जिले के बंगा गाँव में 28 सितम्बर, 1907 के दिन हुआ था । असहयोग आन्दोलन के समय वे विदेशी कपड़े की होली करने के कार्यक्रम में सम्मलित हुए थे । लाहौर नेशनल कालेज में पढ़ने गए तब सुखदेव, भगवतीचरण और यशपाल से उनका परिचय हुआ था। उनके क्रान्तिकारी विचारों को समर्थन प्राप्त हुआ । 1928 में 8 अप्रैल को भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने असेम्बली में बम फेंका था ।

बम फेंकने का उनका उद्देश्य बहरी हो गई अंग्रेज सरकार को जगाने का था । यदि वे चाहते तो बम फेंककर भाग सकते थे परन्तु उसी स्थान पर खड़े रहकर नारे लगाते रहे –

*इन्कलाब जिन्दाबाद !*

*साम्राज्यवाद का नाश हो !!*

*दुनिया के मजदूरो एक हो !!!*

क्रान्ति का संदेश देने वाली पत्रिकाएँ फेंककर, हवा में गोली चलाकर, शांतिपूर्वक आत्मसमर्पण कर दिया । लाला लजपतराय की मृत्यु का बदला लेने के लिये अंग्रेज अधिकारी सान्डर्स की हत्या के केस में भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु के ऊपर केस चलाया गया । केस के निर्णय में तीनों मित्रों को फाँसी की सजा हुई । 23 मार्च, 1931 के दिन इन्हें फाँसी दे दी गयी ।

*''दिल से निकलेगी न मरकर भी वतन की उल्फत (प्रीत)*
*मेरी मिट्टी से भी खुश्बू-ए-वतन आयेगी ।''*

– **भगतसिंह**

**विचार कीजिए**

भगतसिंह को फाँसी की सजा न हुई होती तो आजादी की लड़ाई में इनकी क्या भूमिका होती ?

## श्यामजी कृष्णवर्मा

5.9 श्यामजी कृष्ण वर्मा

विदेशों में क्रान्तिकारी प्रवृत्ति की शुरुआत करने वाले श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म ई.सन् 1857 की 4 अक्टूबर को कच्छ के मांडवी गाँव में हुआ था । ये कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी से स्नातक हुए थे । इन्होंने भारत में स्वराज्य प्राप्त करने के उद्देश्य से लंदन में 1905 की 18 फरवरी को 'इन्डियन होलरूल सोसायटी' की स्थापना की । संस्था का कार्यालय 'इंडिया हाउस' के नाम का मकान रखा गया था । इस संस्था के प्रचार के लिए इन्होंने 'इंडियन सोश्योलॉजिस्ट' नामक पत्रिका शुरू की थी ।

श्यामजी कृष्ण वर्मा को क्रान्तिकारी प्रवृत्ति चलाने में विनायक सावरकर, हरदयाल, मदनलाल ढींगरा, सरदारसिंह राणा तथा मैडम कामा जैसे क्रान्तिकारियों का साथ प्राप्त हुआ । इन्होंने भारतीयों के लिये शिष्यवृत्ति की व्यवस्था की थी । ई.सन् 1909 में लंदन में ट्राफाल्गार स्कवेर के पास भरे बाजार में मदनलाल ढींगरा ने विलियम वायली को गोलियों से भून डाला और उनकी हत्या कर दी । जिसके कारण ढींगरा को फाँसी दी गई । लंदन में रहना सुरक्षित न लगने के कारण श्यामजी कृष्ण वर्मा पेरिस चले गये । थोड़े समय के बाद पेरिस से स्विटजरलैंड गए । ई.सन् 1930 में उनकी मृत्यु हुई । उनकी पत्नी भानुमती की मृत्यु ई.सन् 1933 में हुई ।

### इतना जानिए

महान देशभक्त श्यामजी कृष्ण वर्मा और उनकी पत्नी भानुमती की अस्थियाँ 4 सितम्बर, 2003 के दिन भारत में लाकर उनके गाँव मांडवी (कच्छ) में बड़े सम्मानपूर्वक स्थापित किया गया । उनकी अस्थियाँ की गुजरात में वीरांजलि यात्रा निकाली गई थी ।

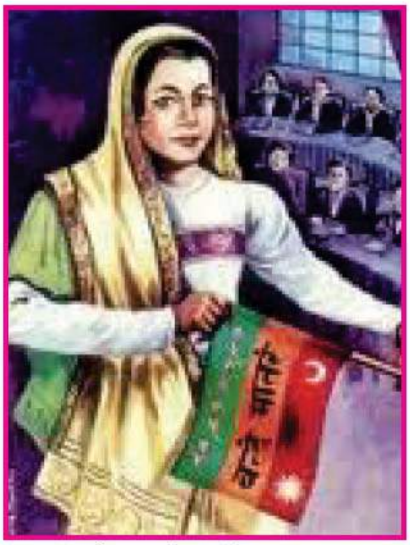

5.10 मेडम भीकाजी रुस्तम कामा

## मैडम कामा

मैडम कामा का जन्म 24 अक्टूबर, 1861 के दिन मुंबई में हुआ था । ई.सन् 1902 से 1907 तक मेडम कामा इग्लैंड में रही । ई.सन् 1905 में श्याम कृष्णवर्मा ने लंदन में 'इन्डियन होमरूल सोसायटी' की स्थापना की । मैडम कामा उसमें सक्रिय कार्यकर्ता बन गई । वे 1907 में जर्मनी के स्टुअर्ट गार्ड शहर में आयोजित दूसरी अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी परिषद में उपस्थित रही थीं । इस परिषद में इन्होंने वंदेमातरम् मंत्र अंकित किए हुए भारत के तिरंगे झंडे को सबसे पहले साहसपूर्वक लहराया था ।

**इतना जानिए**

मैडम कामा द्वारा लहराए गए ध्वज में दिखाए गए आठ कमल तत्कालीन आठ प्रांत हैं । सूर्य और चन्द्र के प्रतीक को हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक के रूप में बताया गया है ।

**प्रवृत्ति**

भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेकर भूमिका निभाने वाली महिलाओं की सूची बनाइए ।

## स्वाध्याय

**1. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

(1) वासुदेव फड़के ने कौन-सी प्रतिज्ञा ली थी ?

(2) खुदीराम बोस को क्यों फाँसी पर लटका दिया गया ?

(3) वीर सावरकर ने कौन-सी पुस्तक लिखी थी ?

(4) चन्द्रशेखर का नाम 'आजाद' किस तरह पड़ा ?

(5) संसद में बम किसने फेंका था ? क्यों ?

(6) विदेश में रहकर श्यामजी कृष्णवर्मा कैसी प्रवृत्ति करते थे ?

**2. मुझे पहचानिए :**

(1) मैं नमक लेकर गुजरने वाली नावों को पलट देता था । ....................................

(2) मैंने 'मित्रमेला' नाम संस्था की स्थापना की । ....................................

(3) आर्यसमाज के मंदिर पर हुए हमले को मैंने रोका था । ....................................

(4) मेरी प्रतिज्ञा है कि मैं जीते जी गिरफ्तार नहीं होऊँगा । ....................................

(5) मैंने इन्डियन होमरूल सोसायटी की स्थापना की थी । ....................................

**3. संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :**

(1) वीर सावरकर

(2) चन्द्रशेखर आजाद

(3) वीर भगतसिंह

(4) श्यामजी कृष्ण वर्मा

# 6

# मानव संसाधन

**प्रवृत्ति**

प्रत्येक विद्यार्थी अपने परिवार की विशेष जानकारी तैयार करेगा; जिसमें नाम, निवास का पता, उम्र, स्त्री–पुरुष, शिक्षा, व्यवसाय होगा । समग्र वर्गखण्ड की जानकारी एकत्र करके उसे विविध समूह में वर्गीकृत करके जानकारी तैयार करना । उदा. S.S.C. तक, HSC तक, ग्रेज्युएट, ग्रेज्युएट से अधिक आदि ।

### क्या आप जानते हैं ?

हम पूरे वर्ग के प्रत्येक विद्यार्थी के परिवार की जानकारी प्राप्त करते हैं उसी तरह से पूरे देश की मानव आबादी संबंधी ऐसी जानकारी निश्चित समय से प्राप्त की जाती है । उसके बारे में आज हम जानेंगे ।

### जनगणना क्या है ? और यह क्यों की जाती है ?

किसी भी देश के अथवा किसी भी क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों के बारे में विधिवत से जानकारी प्राप्त करना और उसके लिखित स्वरूप में आकड़े तैयार करने की विधि को जनगणना कहते हैं । जो प्रति दस वर्ष में केन्द्र सरकार के आदेश से किया जाता है । जिसे जनगणना अथवा सेन्सस भी कहा जाता है ।

हमारे देश में भी पिछली जनगणना 2011 में की गई । जो आजादी प्राप्त करने के पश्चात की सातवीं बार की गई जनगणना थी । इस समय देश के प्रत्येक नागरिक को युनिक नंबर और पहचानपत्र देने का आयोजन भी किया गया है जो 2011 की जनगणना की विशेषता है । सुसंस्कृत भारतीय नागरिक के रूप में अपने परिवार की सही जानकारी देकर सहकार देना यह अपना कर्तव्य बनता है ।

मानव आबादी ही देश का मानव धन है । किसी भी देश के विकास का बड़ा आधार मानव संसाधन पर

ही है । मानव आबादी यह देश की पूँजी है । केवल देश के क्षेत्रफल और प्राकृतिक सम्पत्ति के द्वारा देश का विकास नहीं होता है । देश के आर्थिक विकास का आधार देश की मानव आबादी का आकार और गुणवत्ता पर आधारित रहता है । लोगों का स्वास्थ्य, शिक्षा, कार्यकुशलता और कार्य करने के तत्परता जैसी बातें उत्पादकता को बढ़ाती हैं । इससे ही देश का विकास होता है ।

हमारे देश में आबादी का स्तर जानने और देश के आर्थिक विकास का आयोजन करने के उद्देश्य से जनगणना करवाई जाती है । देश की विकासलक्षी पंचवर्षीय योजना, भोजन, पानी, निवास की व्यवस्था; उद्योग, बिजली, रोजगार शिक्षा और सुरक्षा के बारे में आयोजन करने के कारण भी जनगणना करना जरूरी हो जाता है ।

अब तो भारत में लुप्त होने वाले प्राणी, पक्षी तथा वृक्षों की भी वन विभाग की तरफ से गिनती की जाती है तथा पालतू प्राणियों की भी गणना की जाती है । जिससे उसके बारे में कदम उठाया जा सके ।

## भारत की जनसंख्या के बारे में जानकारी

हमारे देश का कुल भूमि विस्तार 32,87,263 वर्ग किमी है, जो संसार के कुल क्षेत्रफल का 2.42 % है । क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत संसार में सातवें स्थान पर है । परन्तु संसार की कुल जनसंख्या का **16 %** से अधिक जनसंख्या भारत में निवास करती है । जनसंख्या में चीन के बाद भारत दूसरे स्थान पर है ।

### प्रवृत्ति

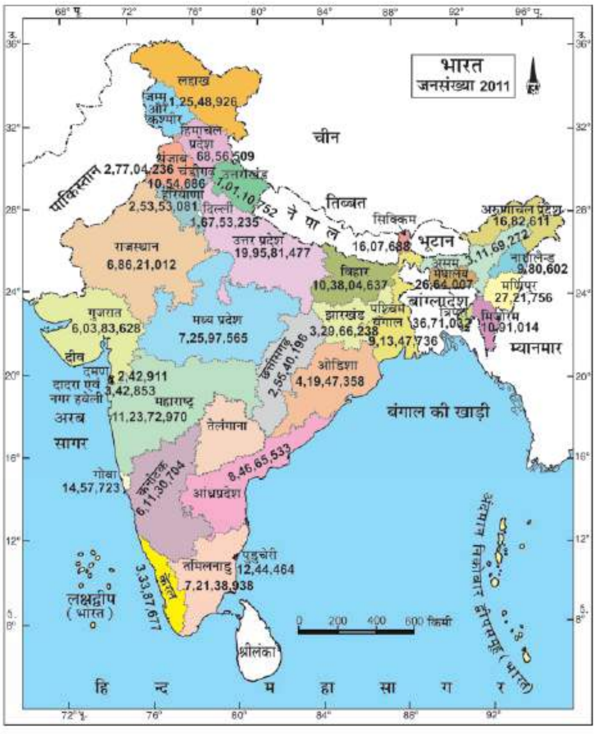


**2011 की जनगणना के अनुसार**

**नीचे दी गई सारणी की जानकारी भरिए ।**

**2011 की जनगणना के आधार पर जानकारी खोजकर लिखिए ।**

| | पुरुष | स्त्री | कुल |
|---|---|---|---|
| देश | | | |
| राज्य | | | |
| जिला | | | |
| गाँव | | | |

विशेषस्तर  वाली मानव आबादी को मानव संसाधन भी कहा जाता है । मानव शक्ति का मूल्य बौद्धिकता और साक्षरता पर आधारित है । देश के विकास में प्रतिभाशाली नागरिक जैसे-डॉक्टर, शिक्षाशास्त्री, इंजीनियर, खिलाड़ी, उद्योगपति-व्यापारी, किसान, कलाकार, कर्मचारी वर्ग के लोग और समझदार नागरिक के स्रोत स्वरूप हैं । हमारी युवाशक्ति और बच्चे भी हमारी मानव सम्पत्ति हैं ।

## जनसंख्या वृद्धि

2001 से 2011 के दस वर्ष के दौरान भारतीय जनसंख्या में लगभग 18.1 करोड़ की संख्यावृद्धि हुई है । फिर भी जनसंख्यावृद्धि की गति धीमी रही है, ऐसा दिखलाई पड़ रहा है । जो महत्वपूर्ण बात है । इसके अलावा शिक्षित नागरिकों की संख्या में वृद्धि हुई है । 2001 में भारत की जनसंख्या 102.87 करोड़ थी जो 2011 में 121.01 करोड़ हो गई है ।

केन्द्र सरकार जनसंख्या वृद्धि के बारे में चिंतित होने से विविध योजनाओं तथा नीति-नियन्त्रणों से जनसंख्या वृद्धि को नियन्त्रित करने के प्रयास हुए हैं । परिणामस्वरूप जनसंख्या वृद्धि की दर 1.7 % नीचे गई है ।

## जनसंख्या वृद्धि के कारण

जन्म-मृत्यु दर की तरह जनसंख्या वृद्धि भी प्राकृतिक है । परन्तु जनसंख्या वृद्धि के बारे में कितने ही तत्व जिम्मेदार हैं । जिसमें अन्य देशों में से आकर स्थिर होने वाले लोग, उद्योग-धंधा, व्यापार या शिक्षा के लिए होने वाला स्थानान्तरण कारणभूत हैं ।

**इतना जानिए ( भारत की जनसंख्या दर्शाने वाली तालिका )**

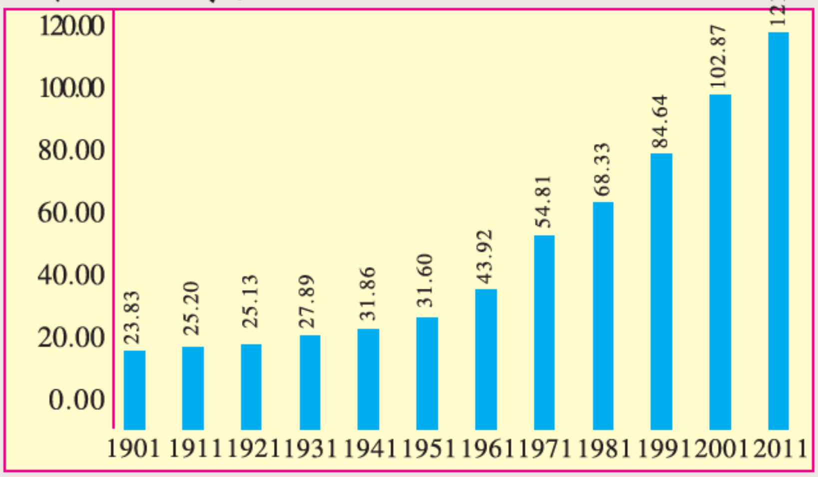


भारत में पिछली दो सदी के दौरान जनसंख्या वृद्धि का दर ऊँची देखने को मिली है । पहले जनसंख्या वृद्धिदर निम्न थी, क्योंकि बालमृत्यु का प्रमाण अधिक था । कालरा, क्षय, प्लेग जैसे रोगों पर नियन्त्रण नहीं था । अकाल के समय भुखमरी से मृत्यु होती, डाक्टरी इलाज और दवाएँ योग्य प्रमाण में नहीं थी । अच्छे मार्ग व परिवहन के तीव्र साधन नहीं थे । इसीलिए सगर्भा महिलाओं की मृत्यु का प्रमाण अधिक था । इन कारणों से जनसंख्या वृद्धि दिखलाई नहीं पड़ती थी ।

आज परिस्थिति में काफी बदलाव हो गया है । वर्तमान समय में अधिकतर योग्य प्रमाण में पोषक आहार प्राप्त हो जाता है । डाक्टरी इलाज की सुविधा और छूत से फैलने वाले रोगों पर नियंत्रण हुआ है । अच्छे मार्ग, दुतगामी  परिवहन के साधन और तीव्र संदेशव्यवहार की सुविधा से तात्कालिक उपचार प्राप्त हो जाता है । प्राकृतिक आपत्ति आने के पूर्व सूचना का प्राप्त हो जाना, और उसके बाद की व्यवस्था, पुर्नवसन होने से मृत्युदर में कमी देखने को मिलती है । उपर्युक्त तत्वों के अलावा मनुष्य की औसत उम्र में भी वृद्धि हुई है । 1920 में

औसत उम्र 40/41 वर्ष के आसपास भी आज वह 63/64 वर्ष के आसपास हो गयी है । कितने ही कारणों से जन्मदर से भी कमी आई है । जैसे निरक्षरता अंधश्रद्धा या वहम, रुढ़िचुस्त मान्यताओं की परम्परा, बालविवाह, विधवा पुर्नविवाह, छोटे कुटुम्ब की आदर्श भावना का अभाव जैसे अनेक तत्वों से जनसंख्या वृद्धि देखने को मिलती है ।

जनसंख्या वृद्धि होने से कितनी ही व्यवस्था सम्बंधी समस्याएं उत्पन्न होती हैं; जैसे – भोजन, पानी, निवास, पर्यावरण का प्रदूषण, सुरक्षा, रोजगारी, यातायात नियमन आदि; जिन्हें सुलझाने के लिये अनेक योजनाएँ, सतर्कता के कदम तथा कानूनी व्यवस्था भी करनी पड़ती है ।

**इतना जानिए**

बालविवाह प्रतिबंध कानून के अनुसार पुरुष की उम्र 21 वर्ष स्त्री की उम्र 18 वर्ष के बाद विवाह हो सकता है । इसके पहले विवाह करना अपराध है ।

**प्रवृत्ति**

इतना अवश्य विचार करें ही...... चर्चा करें कि ....

(1) 'कम बाल जयगोपाल'   (2) 'छोटा परिवार सुखी परिवार'

- प्रत्येक कुटुम्ब या समाज के लिए छोटे कुटुम्ब की आदर्श भावना है क्या ? उसकी चर्चा करके नोट तैयार कीजिए ।
- समाज में व्यापत अंधश्रद्धा, वहन, रूढ़ियों की परम्परा, निरक्षरता दूर करने के लिए क्या करना चाहिए । चर्चा करवाकर नोट तैयार करवाएँ ।

**1901 से 2011 के समय भारतीय जनसंख्या जानकर अर्थघटन कीजिए ।**

| Census Years वर्ष | Population कुल जनसंख्या | Change in Population between Censuses वृद्धि/कमी | Percent change between Censuses जनगणना में प्रतिशत परिवर्तन | Annual Growth Rate (percent) वार्षिक वृद्धिदर |
|---|---|---|---|---|
| 1901 | 238,396,327 | – | – | – |
| 1911 | 252,093,390 | 13,697,063 | 5.8 | 0.6 |
| 1921 | 251,321,213 | – 772,177 | – 0.03 | 0 |
| 1931 | 278,977,238 | 27,656,025 | 11.0 | 1.0 |
| 1941 | 318,660,580 | 39,683,342 | 14.2 | 1.3 |
| 1951 | 316,088,090 | 42,427,510 | 13.3 | 1.3 |
| 1961 | 439,234,771 | 78,146,681 | 21.6 | 2.0 |
| 1971 | 548,159,652 | 108,924,881 | 24.8 | 2.2 |
| 1981 | 683,329,097 | 135,169,445 | 24.7 | 2.2 |
| 1991 | 846,421,039 | 163,091,942 | 23.9 | 2.2 |
| 2001 | 1,028,737,436 | 182,316,397 | 21.5 | 2.0 |
| 2011 | 1,210,193,422 | 181,455,986 | 17.6 | 1.6 |

(1) किस दशक में जनसंख्या में वृद्धि, जनसंख्या कमी हुई है, उनको लिखिए ।

(2) किस दशक में सबसे अधिक जनसंख्या वृद्धि हुई है ? क्या कारण हो सकते हैं ?

(3) किस दशक में जनसंख्या में कमी हुई है ? उसके क्या कारण हो सकते हैं ?

(4) अन्तिम दशक में वृद्धि दर कम होने के कौन-कौन से कारण हो सकते हैं ?

## जनसंख्या घनत्व

किसी भी निश्चित क्षेत्र में निवास करने वाली जनसंख्या का प्रमाण जनसंख्या घनत्व है । जिसमें प्रति किमी. में औसतन जितने लोग निवास करते हों उसे वहाँ की जनसंख्या घनत्व कहा जा सकता है । जनसंख्या घनत्व भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति के साथ जुड़ा हुआ है ।

### इतना जानिए

| प्रांत/दर | कुल जनसंख्या (मिलियन) 2008 | औसत वृद्धि दर प्रतिशत% (2005-10) | कुल उत्पादकता दर (2007) | बाल मृत्युदर (दर 1000) | औसत उम्र (वर्षों में) | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | पुरुष | स्त्री |
| समग्र विश्व | 6,749.7 | 1.2 | 2.54 | 49 | 65.1 | 69.6 |
| विकसित देश | 1226.3 | 0.3 | 1.60 | 7 | 73.0 | 80.2 |
| विकासशील देश | 5523.4 | 1.4 | 2.73 | 54 | 63.8 | 67.4 |
| भारत | 1186.2 | 1.5 | 2.78 | 54 | 63.3 | 66.6 |

**जनसंख्या की दृष्टि से अग्रिम दस देश**

| ई. सन् 2008 | | | ई. सन् 2050 (संभवित) | | |
|---|---|---|---|---|---|
| क्रम | देश | जनसंख्या (मिलियन)* | क्रम | देश | जनसंख्या (मिलियन) |
| 1. | चीन | 1324.7 | 1. | भारत | 1755.2 |
| 2. | भारत | 1149.3 | 2. | चीन | 1437.0 |
| 3. | यु.एस. | 304.5 | 3. | यु.एस. | 438.2 |
| 4. | इन्डोनेशिया | 239.9 | 4. | इन्डोनेशिया | 343.1 |
| 5. | ब्राजिल | 195.1 | 5. | पाकिस्तान | 295.2 |
| 6. | पाकिस्तान | 172.8 | 6. | नाइजीरिया | 282.2 |
| 7. | नाइजीरिया | 148.1 | 7. | ब्राजिल | 259.8 |
| 8. | बांगलादेश | 147.3 | 8. | बांग्लादेश | 215.1 |
| 9. | रूस | 141.9 | 9. | कोंगो डेम. गणराज्य | 189.3 |
| 10. | जापान | 127.7 | 10. | फिलीपीन्स | 150.1 |

* 1. **मिलियन** = 10 लाख

दुनिया के सभी देशों में जनसंख्या का भिन्न प्रमाण है । हमारे देश में विविध प्रदेश या क्षेत्र में जनसंख्या का प्रमाण समान नहीं है । नदी किनारे के मैदान, धार्मिक स्थान, यात्राधाम, औद्योगिक क्षेत्र डेल्टाप्रदेश के उपजाऊ क्षेत्र में जनसंख्या घनत्व अधिक देखने को मिलता है । जबकि पहाड़ी प्रदेश, रेगिस्तानी प्रदेश या जंगल के क्षेत्र में उन प्रदेशों की प्रतिकूलता के कारण जनसंख्या का घनत्व कम होती है ।

**प्रवृत्ति**

जनसंख्या घनत्व वाले पाँच बड़े राज्य में अलग-अलग रंग भरके दर्शाए।

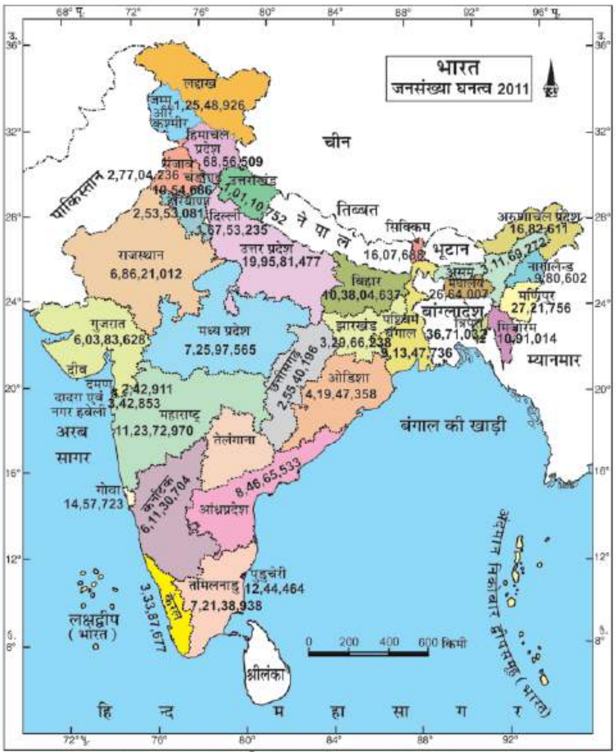


6.1 भारत की जनसंख्या घनत्व

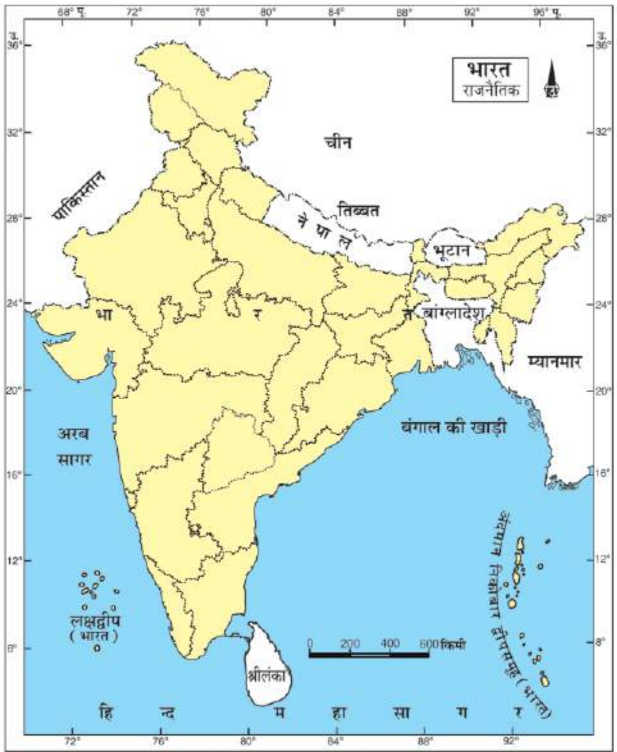


6.2 भारत राजनैतिक

## जनसंख्या घनत्व को प्रभावित करने वाले तत्व

जनसंख्या घनत्व पर पर्यावरण के विविध तत्वों का प्रभाव पड़ता है । जैसे कि स्थान की ऊँचाई, ठंडी-गरमी का प्रमाण, भूपृष्ठ, फसल, खनिज, पानी, ऊर्जा और उसकी प्राप्ति के अलावा परिवहन, संदेश व्यवहार सुविधा, शिक्षा, आरोग्य, औद्योगिकीकरण, रोजगार के अवसर और आधुनिक टेकनोलॉजी से आर्थिक विकासवृद्धि भी जनसंख्या घनता के साथ जुड़ी हुई है ।

**इतना जानकर उसके कारणों के बारे में विचार कीजिए :**

| जनसंख्या में प्रथम 5 जिले | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | जिला | पुरुष | महिलाएँ | कुल |
| 1. | अहमदाबाद | 37,83,050 | 34,21,150 | 72,04,200 |
| 2. | सूरत | 33,93,742 | 26,79,489 | 60,73,231 |
| 3. | वडोदरा | 21,58,229 | 20,07,339 | 41,65,568 |
| 4. | राजकोट | 19,75,131 | 18,24,639 | 37,99,770 |
| 5. | बनासकांठा | 16,09,148 | 5,06,897 | 21,16,045 |

| जनसंख्या घनत्व में प्रथम 5 जिले | | |
|---|---|---|
| क्रम | जिला | जनसंख्या घनत्व (प्रति वर्ग किमी) |
| 1. | सूरत | 1376 |
| 2. | अहमदाबाद | 890 |
| 3. | आणंद | 711 |
| 4. | गांधीनगर | 660 |
| 5. | नवसारी | 602 |

### अधिक जनसंख्या वाले राज्य

उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल तथा मध्य प्रदेश ।

### कम जनसंख्या वाले तथा केन्द्रशासित प्रदेश

लक्षद्वीप समूह, लद्दाख, अंदमान निकोबार द्वीप - समूह ।

### जन्मदर

किसी भी निश्चित क्षेत्र में प्रति एक हजार की जनसंख्या पर एक वर्ष में जन्म लेने वाले जीवित बालकों की संख्या को जन्मदर कहा जाता है । भारत में पिछले कई वर्षों से जन्मदर का प्रमाण कम होता जा रहा है । लोग कुटुम्ब नियोजन अपनाने लगे हैं । फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का अभाव, आरोग्यविषयक सेवा का अभाव, गरीबी, बेकारी, परिवार नियमन की समझ का अभाव देखने को मिलता है इसलिए जन्मदर का प्रमाण ऊँचा रहता है ।

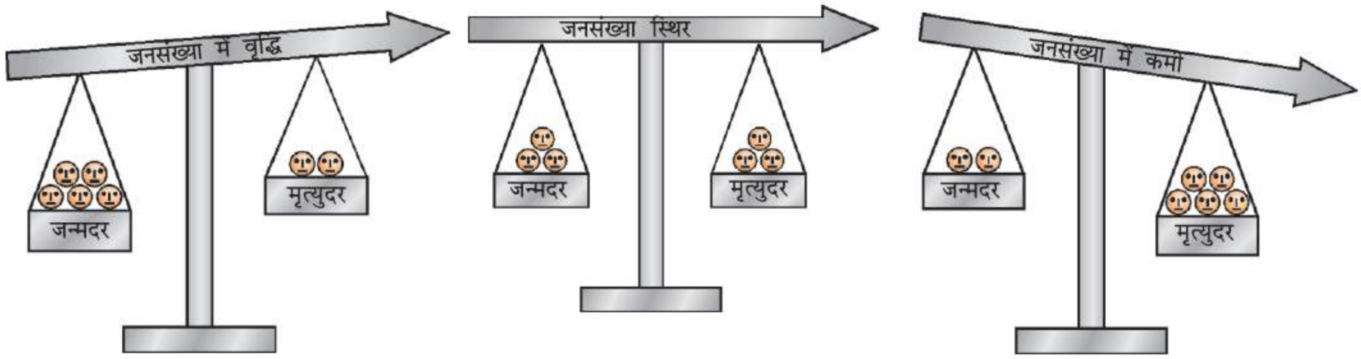


**6.3 जन्म-मृत्यु दर की तुलना**

### मृत्युदर

"किसी भी निश्चित क्षेत्र में प्रति हजार आबादी पर, एक वर्ष में मरने वालों की संख्या को मृत्युदर कहा जाता है । जो जन्म लेता है उसकी मृत्यु निश्चित ही है । इसीलिए मृत्युदर को शून्य पर नहीं लाया जा सकता है । फिर भी संशोधन, डाक्टरी उपचार, दवा, रोग-नियन्त्रण, आधुनिक टेकनोलॉजी से मृत्यु दर नीचे लाई जा सकती है ।

### स्थलान्तरण

मानव आबादी एक स्थान से दूसरे स्थान पर निवास में परिवर्तन करे उसे स्थलांतर कहा जाता है । अपनी आजीविका और विकास के लिए मनुष्य को विविध प्रवृत्तियाँ करनी पड़ती हैं । जिसमें से सामाजिक और सांस्कृतिक आवश्यकताएँ जन्म लेती हैं । अर्थात् मनुष्य अपने अनुकूल स्थान को पसंद करके निवास करता है और समय-समय पर परिवर्तन भी करता रहता है । जैसे कि शिक्षा, व्यापार, उद्योग, रोजगार व्यवस्था जैसे कारणों से ग्राम्य आबादी शहर की तरफ आकर्षित होती है । वर्तमान समय में गुजरात में 62 % ग्राम्य क्षेत्र में और 38 % शहरी क्षेत्र में निवास करते हैं ।

**प्रवृत्ति**

- आप रहते हों उस क्षेत्र में से लोग विदेश में जहाँ जाकर स्थायी हो गये हों, उन देशों की सूची बनाइए ।
- गुजरात में अन्य राज्यों में से आकर के स्थायी हुए लोगों के राज्यों की सूची बनाइए ।

### बस्ती का स्तर

कुल जनसंख्या के विविध समूहों में किए गए वर्गीकरण को बस्ती स्तर कहा जाता है । जिसमें स्त्री-पुरुष का वर्ग, उम्र का वर्ग, साक्षरता के प्रमाण का वर्ग, ग्राम्य-शहरी आबादी का वर्ग, धार्मिक तथा भाषाकीय वर्ग, व्यावसायिक वर्ग का समावेश होता है । अनेक वर्ग के अनुसार जानकारी प्राप्त करने के लिये बस्ती का ढाँचा जानना आवश्यक है ।

### आयु वर्ग

देश की कुल आबादी में बालक, प्रौढ़ तथा वृद्ध नागरिकों का समावेश होता है जिसे आयु वर्ग में बाँटा गया है ।

| बालकों का वर्ग | प्रौढ़ लोगों का वर्ग | वृद्ध लोगों का वर्ग |
|---|---|---|
| 0 से 14 वर्ष तक | 15 से 59 वर्ष तक | 59 से अधिक उम्र वाले |

इन तीन आयु वर्ग में मुख्य अंतर बालक और वृद्ध नागरिकों की आबादी में है । कुल आबादी का 3 से 4 % बालक होते हैं जबकि वृद्ध नागरिक 7 % जितने हैं । बाकी प्रौढ़ हैं ।

**इतना जानिए**

जापान में वृद्ध नागरिकों का उम्रस्तर का प्रमाण अधिक है ।

**आइए, एक प्रोजेक्ट करें :**

**विचार कीजिए**

आप जिस मुहल्ले या क्षेत्र में रहते हों उसमें से दस परिवारों की जनगणना करके संख्या प्राप्त करें और उसे आयु वर्ग में बाँट दें ।

## प्रवृत्ति

- भारत क्षेत्रफल की दृष्टि से संसार में सातवें क्रम पर है, तो भारत से बड़े छः देश कौन-कौन से हैं ?
- गुजरात में कौन-कौन से प्राणियों और पक्षियों की गणना की गई है ?
- उत्तर प्रदेश में जनसंख्या अधिक क्यों है ?
- सिक्किम में क्यों आबादी कम है ?
- आपके मुहल्ले या सोसायटी में अधिक सदस्य वाले और कम सदस्य वाले परिवारों का अवलोकन कीजिए । दोनों परिवारों में कौन-कौन सी सुविधाएँ या असुविधाएँ होती हैं ? उसे लिखिए ।

### स्त्री-पुरुष का प्रमाण ( लैंगिक-अनुपात )

लिंग का अनुपात अर्थात् प्रति हजार पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की संख्या, जिसे लैंगिक-अनुपात (Sex Retio) भी कहा जाता है । हमारे देश में 1951 के बाद से लैंगिक अनुपात क्रमशः कम होता जा रहा है ।

### इतना जानिए

**2011 की जनगणना के अनुसार स्त्री-पुरुष का अनुपात(Sex Retio)**

| क्रम | देश/राज्य | 1000 पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या |
|---|---|---|
| | भारत | 940 |
| 1. | गुजरात | 918 |
| 2. | उत्तरप्रदेश | 908 |
| 3. | बिहार | 916 |
| 4. | केरल | 1084 |
| 5. | प. बंगाल | 947 |
| 6. | हरियाणा | 877 |
| 7. | असम | 954 |

**सावधान/रेड एलर्ट !!!**

**अमरेली में** 987 के सामने 964 की चौंका देने वाली संख्या देखने को मिलती है ।

**जूनागढ़ में** हजार पुरुष पर तीन महिला कम, 955के स्थान पर 952 हैं ।

**भावनगर में** हजार पुरुष के सामने 937 थीं जो घट कर 931 हुईं ।

**राजकोट में** 930 के सामने 924 का अंक प्राप्त हुआ है ।

**कच्छ में** गंभीर प्रमाण है । 942 के सामने 907 महिला ।

**'बेटी बचाओ अभियान' चलाकर गुजरात सरकार ने कठोर कदम उठाये हैं।**

## साक्षरता

किसी भी देश के विकास का आधार देश की साक्षरता की मात्रा पर आधारित है । साक्षरता आबादी की गुणवत्ता और सामाजिक विकास को मापने का महत्वपूर्ण मापदंड है और देश के विकास की चाबी है ।

1991 की जनगणना के समय साक्षरता का मापदंड निश्चित किया गया है । उसके अनुसार '6 वर्ष के अधिक उम्र के कोई भी व्यक्ति कोई भी एक भाषा पढ़-लिख और समझ सके तो साक्षर या अक्षरज्ञान व्यक्ति माना जाएगा । भारत में साक्षरता का प्रमाण क्रमशः बढ़ता जा रहा है, यह अच्छी बात है ।

### इतना जानिए

| वर्ष | कुल | पुरुष | स्त्री |
|---|---|---|---|
| 1901 | 5.35 | 9.83 | 0.60 |
| 1911 | 5.92 | 10.56 | 1.05 |
| 1921 | 7.16 | 12.21 | 1.81 |
| 1931 | 9.5 | 15.59 | 2.93 |
| 1941 | 16.1 | 24.9 | 7.3 |
| 1951 | 16.67 | 24.95 | 7.93 |
| 1961 | 24.02 | 34.44 | 12.95 |
| 1971 | 29.45 | 39.45 | 18.69 |
| 1981 | 36.23 | 46.89 | 24.82 |
| 1991 | 42.84 | 52.74 | 32.17 |
| 2001 | 64.83 | 75.26 | 53.67 |
| 2011 | 74.04 | 82.14 | 65.46 |

| क्रम | देश/राज्य | कुल साक्षरता | पुरुष साक्षरता दर | स्त्री साक्षरता दर |
|---|---|---|---|---|
| 1. | भारत | 74.04 | 82.14 | 65.46 |
| | राज्य | | | |
| 1. | केरल | 93.91 | 96.02 | 91.98 |
| 2. | तमिलनाडु | 80.33 | 86.81 | 73.86 |
| 3. | गुजरात | 79.31 | 87.23 | 70.73 |
| 4. | बिहार | 63.82 | 73.39 | 53.33 |
| 5. | अरुणाचल प्रदेश | 66.95 | 73.69 | 59.57 |
| 6. | राजस्थान | 67.06 | 80.51 | 58.66 |

### इतना जानिए

1991 में साक्षरता का मापदंड निश्चित होने के अनुसार भारत की कुल आबादी में से 0 से 6 वर्ष की उम्र के लोगों को निकालकर जो जनसंख्या है उसकी ही साक्षरता दर में वृद्धि देखने को मिलती है ।

| साक्षरता : प्रथम पाँच जिले | | | |
|---|---|---|---|
| जिला | कुल | पुरुष | महिला |
| अहमदाबाद | 86.65% | 92.44% | 80.29% |
| सूरत | 86.65% | 91.05% | 81.02% |
| आणंद | 85.79% | 93.23% | 77.76% |
| गांधीनगर | 85.73% | 93.59% | 77.37% |
| खेड़ा | 84.31% | 93.40% | 76.67% |

**प्रश्नों के उत्तर खोजिए :**

(1) किस राज्य की साक्षरता सबसे अधिक है ?

(2) किस राज्य की साक्षरता सबसे कम है ?

(3) भारत के कुल स्त्री-पुरुषों की साक्षरता का दर कितना है ?

(4) गुजरात के कौन-कौन से जिलों में साक्षरता दर समान है ?

(5) साक्षरता दर कम होने के कौन-से कारण हो सकते हैं, विचार कर लिखिए ।

### व्यावसायिक ढाँचा

देश की कुल जनसंख्या में से विविध व्यवसाय में लगे हुए लोगों को व्यवसाय समूह में समावेश किया जा सकता है । उसमें (1) काम करने वाला समूह (2) काम न करने वाला समूह इस तरह से दो भाग होते हैं । देश में तेजी से होने वाले औद्योगीकरण से काम करने वाला समूह बढ़ता जा रहा है ।

### जनसंख्या में परिवर्तन

देश की आबादी में दो प्रकार का परिवर्तन देखने को मिलता है :

**(1) संख्यात्मक परिवर्तन :** कहीं-कहीं आबादी में कमी या अधिकता देखने को मिलती है । आबादी वृद्धि दर और स्थलान्तर के कारण ऐसा होता रहता है । इसके अलावा भूमिहीन लोगों की स्थिति, कम जमीन प्रमाण, शहरीकरण और सामाजिक और व्यवस्थातंत्र के कारण आबादी में कमी, वृद्धि होती रहती है ।

**(2) गुणात्मक परिवर्तन :** व्यक्ति का विचार और स्वभाव, रहन-सहन, जीवनशैली में आने वाला परिवर्तन ही गुणात्मक परिवर्तन होता है । उसके पीछे उद्यम, राष्ट्रीय भावना, उत्साह, साहस आदि जवाबदार कारण होते हैं । जिससे व्यक्ति के वैचारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन में कितने ही परिवर्तन आते हैं ।

**धार्मिक समूह :** भारत सर्वधर्म समभाव रखने वाला देश है । इसमें प्रत्येक धर्म का पालन करने वाली प्रजा निवास करती है । जिसमें हिन्दू धर्म का पालन करने वाली प्रजा अधिक है । उसके बाद क्रमशः इस्लाम, ईसाई, सिक्ख, बौद्ध, जैन, पारसी धर्म का पालन करने वाले लोग रहते है ।

**भाषाकीय समूह :** भारत बहुत बड़ा और विविधता वाला देश है । इसमें अनेक भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं । **संविधान के अनुसार वर्तमान समय में 22 भाषाएँ है ।** हिन्दी और अंग्रेजी को प्रशासनिक भाषा का स्थान दिया गया है । भारत में राज्यों की रचना भाषा के आधार पर हुई है ।

**प्रवृत्ति**

भारतीय मुद्रा के नोटों पर छापी गई मान्य भाषाओं को गिनकर देखें । अन्य भाषाओं के बारे में लिखें ।

**स्वास्थ्य समूह :** मानव का आरोग्य अर्थात् शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक तत्वों के साथ समृद्धि को आरोग्य कहा जा सकता है । उत्तम स्तर का आरोग्य राष्ट्र के विकास की प्रक्रिया को गतिशील बनाता है ।

**विचार कीजिए**

- राष्ट्र के विकास के लिए स्वस्थ्य मानव आबादी का योगदान महत्वपूर्ण है क्या ? इस पर चिंतन कीजिए ।

**राष्ट्रीय जनसंख्या नीति :** देश की जनसंख्या ही देश की शक्ति है । मानव संसाधन शिक्षित और प्रशिक्षित, स्वस्थ्य और शक्तिशाली होगा, तो ही देश का विकास होगा । मानवशक्ति का उपयोग देश के विकास में महत्वपूर्ण कार्य करता है । विश्व के विकास करने वाले देशों के सामने खड़े रहने और गतिशीलता लाने के लिए हमें जाग्रत होना पड़ेगा और देश की समृद्धि में मानवशक्ति के मूल्यों को प्रधानता देनी पड़ेगी । देश के विकास को रोकने वाले तत्वों को नियन्त्रित करना पड़ेगा । इसीलिए जनसंख्याविस्फोट को नियन्त्रित करने के लिए 1951 से निश्चित की गई जनसंख्या नीति को प्रभावशाली ढंग से लागू करना ही पड़ेगा ।

जनसंख्या नीति के भागरूप अनेक योजनाएँ; जैसे – पोषक आहार योजना, माता शिशु सुरक्षा व उपचार योजना, स्वच्छ पानी, विद्यालय, आरोग्य कार्यक्रम, बाल अधिकारों की रक्षा जैसे पहलुओं को गतिशील बनाना पड़ेगा और पंचवर्षीय योजनाओं में भी जनसंख्या नीति को नजर के समक्ष रखकर बनाना पड़ेगा । हम सभी उसमें जाग्रत होकर सहयोग देकर अपना योगदान देने के लिए कटिबद्ध बनें ।

***''स्वस्थ भारत, समृद्ध भारत ।''***

***''शारीरिक-मानसिक समृद्ध नागरिक ही समृद्ध देश ।''***

***''कम बाल, जय गोपाल ।''***

***''हम दो, हमारे दो ।''***

***''छोटा परिवार सुखी परिवार''***

## स्वाध्याय

**1. नीचे दिए गए प्रश्नों का संक्षिप्त उत्तर लिखिए :**

(1) जनगणना क्यों की जाती है ? अपने विचार लिखिए ।

(2) जनसंख्या में तेजी से वृद्धि क्यों होती रहती है ? बताइए ।

(3) जन्मदर और मृत्युदर किसे कहते हैं ?

(4) जनसंख्या घनत्व की परिभाषा लिखिए ।

(5) स्थलान्तर किसे कहते हैं ?

**2. नीचे दिए गए शब्दों को समझाइए :**

(1) साक्षरता (2) आयु-वर्ग (3) जनसंख्या का स्तर

**3. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

(1) गुणात्मक परिवर्तन के विषय में संक्षिप्त में जानकारी दीजिए ।

(2) मानव संसाधन को राष्ट्र की महत्वपूर्ण पूँजी क्यों माना जाता है ?

**4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :**

(1) 2011 की जनगणना के समय जनसंख्या घनत्व का दर .......... देखने को मिली है ।

(2) विश्व में जनसंख्या की दृष्टि से भारत .......... स्थान पर है ।

(3) भारत में .......... धर्म का पालन करने वालों की संख्या अधिक है ।

(4) 2011 की जनगणना के अनुसार गुजरात में लिंग प्रमाण .......... है ।

(5) संसार की कुल संख्या का लगभग .......... प्रतिशत आबादी भारत में निवास करती है ।

**विद्यार्थियों के लिए प्रवृत्ति :**

(1) जनसंख्या के विस्तरण पर प्रभाव डालने वाले तत्वों का चार्ट बनाइए ।

(2) भारत में लिंग अनुपात, साक्षरता अनुपात और जनसंख्या वृद्धि को बतलाने वाले ग्राफ (आलेख) तैयार कीजिए ।

(3) पत्रिकाओं या समाचारपत्रों के विचार; जैसे – साक्षरता, बालविवाह, जनसंख्या से संबंधित समस्याओं के बारे में लेख, कविता, कार्टून, अन्य साहित्यिक जानकारी एकत्र करके बुलेटिन बोर्ड पर दर्शाइए ।

(4) जनसंख्या वृद्धि के कारण ,परिबलों तथा जनसंख्या घनत्व पर प्रभाव डालने वाले तत्वों की चर्चा करके टिप्पणी तैयार कीजिए ।

# 7

# महात्मा के मार्ग पर - 1

बापू, राष्ट्रपिता और महात्मा के रूप में हम जिसे पहचानते हैं वह महान पुरुष थे - मोहनदास करमचन्द गांधी । ये बैरिस्टर की पदवी प्राप्त करके वकालत करने के लिए दक्षिण अफ्रीका गए । दक्षिण अफ्रीका के मूल निवासियों को गुलाम बनाकर गोरे लोग इस समृद्ध देश के मालिक बन गए थे । गोरे लोगों की तुलना में यहाँ भारतीयों को बहुत कम अधिकार का उपयोग करने को मिलता था । इस अन्याय और अपमान को गाँधीजी ने चुनौती दी । अपने प्रति होने वाले अन्याय के सामने सत्य और अहिंसा से लड़ने की अनोखी पद्धति को गाँधीजी ने खोजा और उसका नाम दिया - सत्याग्रह ।

**7.1 गाँधीजी**

**इतना जानिए**

गाँधीजी डरबन कोर्ट देखने गए । वहाँ न्यायाधीशों ने उन्हें पगड़ी उतारने के लिए कहा । गाँधीजी ने कोर्ट को छोड़ दिया परन्तु पगड़ी को न उतारकर अपने स्वाभिमान की रक्षा की । उनका यह व्यवहार वहाँ निवास करने वाले भारतीयों को अच्छा लगा ।

दक्षिण अफ्रीका में गाँधीजी के नेतृत्व में सत्याग्रह शुरू हुआ । भारतीयों को अपार कष्ट सहने पड़े परन्तु कहीं भी हिंसा को नहीं अपनाया । अन्त में सफलता मिलने से इस आन्दोलन पर ध्यान गया ।

**इतना जानिए**

1. पूरा नाम : मोहनदास करमचन्द गांधी
2. जन्मदिन : 2-10-1869
3. जन्मस्थल : पोरबंदर (कीर्तिमंदिर)
4. माता : पुतलीबाई
5. पत्नी : कस्तूरबा
6. आध्यात्मिक गुरु : श्रीमद् रामचन्द्र
7. राजकीय गुरु : गोपालकृष्ण गोखले
8. आत्मकथा : सत्य के प्रयोग
9. निर्वाण दिन : 30-01-1948
10. समाधि : राजघाट (दिल्ली)

**7.2 नाटाल कांग्रेस के संस्थापक डर्वन-दक्षिण अफ्रीका-1895**
**1895 में अन्य भारतीयों के साथ गांधीजी ने रंगभेद का विरोध करने के लिए नाताल कांग्रेस स्पेश की स्थापना की । आप इस चित्र में गाँधीजी को पहचान सकते हैं ? पिछली पंक्ति में मध्य में टाई पहनकर दिखलाई पड़ रहे हैं ।**

दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह को सफल करके ई.सन् 1915 में 46 वर्ष की उम्र में गाँधीजी भारत लौटे । दक्षिण अफ्रीका की रंगभेद की लड़ाई में सफलता मिलते ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर लोग इनका आदर करने लगे । मुंबई के अपोलो बन्दरगाह पर गांधीजी का भव्य स्वागत किया गया । गोपालकृष्ण गोखले के कहने से गांधी ने पहले वर्ष पूरे भारत का प्रवास करके लोगों की आवश्यकता और परिस्थिति को समझने का प्रयास किया । भ्रमण के बाद गांधीजी ने 25 मई, 1915 के दिन अहमदाबाद के कोचरब में 'सत्याग्रह' आश्रम की स्थापना की । एक वर्ष के बाद वे आश्रम को साबरमती नदी के किनारे ले गए ।

### चम्पारण सत्याग्रह ( 1917 )

हिमालय की तराई में नेपाल के नजदीक बिहार का यह चंपारनण क्षेत्र बागानों के लिए प्रसिद्ध था । चंपारण में यूरोपियन जमीनदार किसानों को जमीन के 3/20 भाग में नील की अनिवार्य रूप से बुवाई करके, उत्पादन को कम कीमत पर बेचने के लिये बाध्य करते थे । राजकुमार शुक्ल के आग्रह से इस प्रश्न की जाँच करने के लिये गाँधीजी ने निश्चय किया । परन्तु जाँच करें उसके पहले ही वहाँ के मजिस्ट्रेट ने इन्हें नोटिस द्वारा चम्पारण जिला तात्कालिक छोड़ देने का आदेश दिया । गांधीजी ने इस नोटिस का अनादर किया ।

गांधीजी ने किसानों की परेशानियों को सरकार के सामने प्रस्तुत किया । चंपारण के मोतीहारी गाँव में रहकर गांधीजी ने इस प्रथा के सामने आन्दोलन किया । अन्त में सत्याग्रह सफल हुआ । चंपारण के इस सत्याग्रह ने पूरे देश के लोगों का ध्यान आकर्षित किया ।

### खेड़ा सत्याग्रह ( 1917-1918 )

1917 में खेड़ा जिले में अत्यधिक बरसात हुई । सभी फसलें नष्ट हो गयीं।इतना होने पर भी सरकार ने किसानों का कर माफ करने के बदले जमीन कर लेने का निश्चय किया । गांधीजी के नेतृत्व में किसानों ने ब्रिटिश सरकार के सामने सत्याग्रह शुरू किया । गांधीजी ने किसानों से कहा कि – ''सरकार जब तक हमारी मांग को स्वीकार न करे तब तक हम कर नहीं भरेंगे ।'' गांधीजी के आहवान को मान देते हुए वल्लभभाई पटेल अपनी वकालत छोड़ करके आन्दोलन में शामिल हो गये । गांधीजी ने कमिश्नर को पत्र लिखकर बताया कि – यदि कमजोर स्थिति वाले किसानों का कर माफ कर दिया जाता है तो अच्छी स्थिति वाले किसान कर भर देंगे । अंत में कमिश्नर ने ऐसा ही आदेश 1918में दिया जिससे आन्दोलन सफल हुआ ।

खेड़ा का आन्दोलन परिणाम की दृष्टि से नहीं परन्तु सिद्धान्त की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा । किसानों में जागृति आयी । सरकार का भय दूर हुआ । गांधीजी और देश को वल्लभभाई पटेल जैसा निष्ठावान और सर्मपित साथी प्राप्त हुआ ।

**विचार कीजिए**

चंपारन और खेड़ा सत्याग्रह के बीच की समानता और अन्तर की चर्चा कीजिए ।

### रोलेट एक्ट ( 1919 )

प्रथम विश्वयुद्ध में इंग्लैन्ड की विजय हुई थी । इस समय ब्रिटिश सरकार ने रोलेट एक्ट की घोषणा किया । रोलेट एक्ट के अनुसार किसी भी व्यक्ति को कारण बताए बिना गिरफ्तार किया जा सकता था और विशेष अदालत में मुकदमा चलाकर उसे सजा दी जा सके, ऐसी व्यवस्था थी । यह कानून अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता जैसे मूलभूत अधिकारों पर अंकुश लगा रहा था । पुलिस को आवश्यकता से अधिक अधिकार प्राप्त हो रहा था । इसके लिए ही यह कानून बनाया गया । लोगों ने इस कानून का विरोध किया । गांधीजी ने रोलेट एक्ट को 'काला कानून' कहा ।

रोलेट सत्याग्रह ब्रिटिश शासन के सामने पूरे भारत का यह पहला संघर्ष था । जबकि यह कानून अधिकतर शहरों तक ही सीमित था । देश में कानून के विरोध में जुलूस निकाले गए । हड़ताल का आयोजन हुआ । सरकार ने इस आन्दोलन को असफल करने के लिये दमनकारी मार्ग अपनाया ।

### जलियांवाला बाग का हत्याकांड ( 1919 )

रोलेट एक्ट के विरोध में 30 मार्च और 6 अप्रैल, 1919 के दिन पंजाब में लोगों ने हड़ताल किया । अमृतसर की परिस्थिति नियन्त्रण के बाहर है, ऐसा लगने पर अमृतसर को सेना के सुपुर्द कर दिया गया । 13 अप्रैल वैशाखी के दिन जलियांवाला बाग में शहीदों को अंजलि देने और अपने प्रिय नेतागण डा. सत्यपाल और डा. किचलू की गिरफ्तारी का विरोध करने के लिए एक सभा का आयोजन किया गया । जिसमें लगभग 10000 (दस हजार) लोग इकट्ठे हुए थे । सभा में शांत और नि:शस्त्र बैठे हुए लोगों पर जनरल डायर ने बिना किसी चेतावनी के गोली चलाना शुरू कर दिया । इस जगह पर आने जाने के लिए एक सँकरा दरवाजा था । चारों तरफ ऊँची दीवारें थी । प्रवेशद्वार से सैनिकों ने गोली चलाना शुरू कर दिया । यह गोलीबारी गोलियाँ समाप्त होने तक चलती रही । सरकारी रिपोर्ट के अनुसार 379

लोगों की मृत्यु हुई थी और 1200 घायल हुए थे । परन्तु वास्तव में यह संख्या अधिक थी, ऐसा माना जाता है । इस घटना से अब ब्रिटिश न्याय और निष्ठा में जरा भी विश्वास नहीं रहा ।

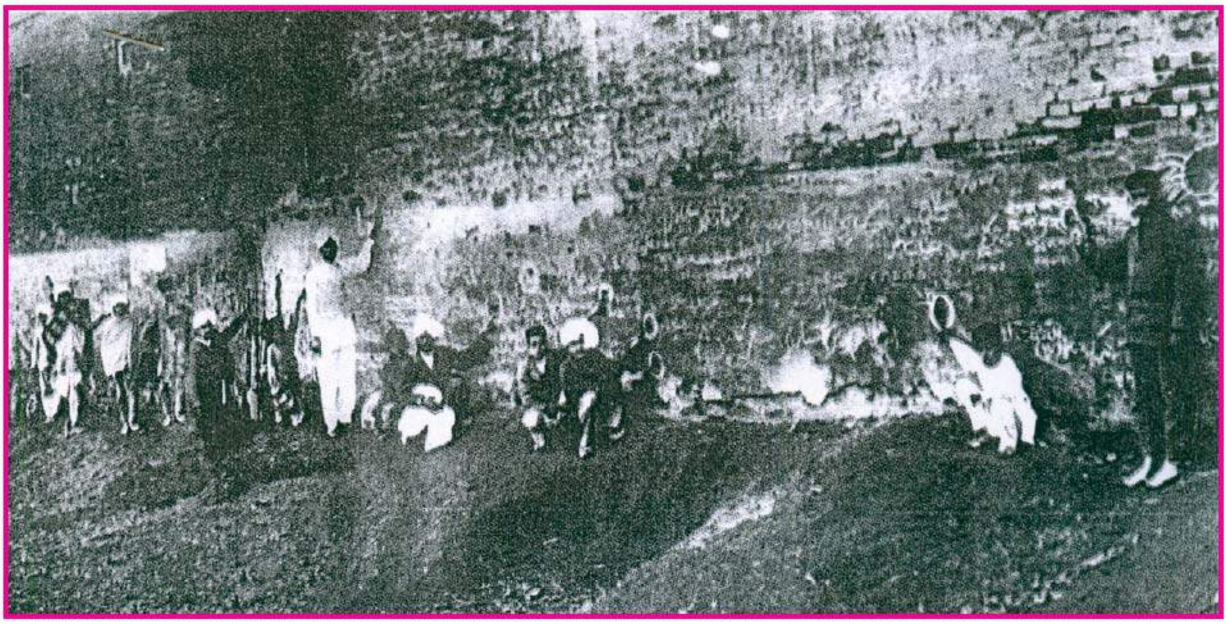

**7.3 जलियांवाला बाग–चित्र में लोग दीवारों पर बनी हुई गोलियों की निशानी बता रहे हैं ।**

**प्रवृत्ति**

जलियांवाला बाग हत्याकांड के दूसरे दिन भारत और इग्लैन्ड से प्रकाशित होने वाले समाचार–टिप्पणी तैयार कीजिए ।

**रवीन्द्रनाथ ठाकुर**

### इतना जानिए

**नाइट हुड :** ब्रिटिश राजा या रानी द्वारा किसी व्यक्ति को असाधारण व्यक्तिगत सफलता या लोकसेवा के लिए दिया जाने वाला सम्मान ।

- जलियांवाला बाग हत्याकांड के विरोध में कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने नाइटहुड का सम्मान लौटा दिया ।

रोलेट एक्ट सत्याग्रह के समय लोगों ने हिन्दू–मुस्लिम एकता मजबूत करने का प्रयास किया । गांधीजी की इच्छा थी कि हिन्दू और मुसलमान किसी भी न्यायपूर्ण उद्देश्य के लिए एक दूसरे को समर्थन दें ।

## खिलाफत आन्दोलन :

प्रथम विश्वयुद्ध में मित्रराष्ट्रों की विजय के बाद, विजेता राष्ट्रों ने पराजित तुर्की के साथ संधि किया । इस संधि की शर्तें तुर्की के लिए कड़ी और अन्यायपूर्ण थी । तुर्की के सुलतान उस समय इस्लाम धर्म के खलीफा (धर्मगुरु) थे । संधि के अनुसार उनका खलीफा पद रद कर दिया गया । इस संधि का विरोध करने के लिए भारत में जो आन्दोलन हुआ उसे खिलाफत आन्दोलन कहा जाता है । मौलाना शौकत अली और मौलाना मुहम्मद अली इस खिलाफत आन्दोलन के मुख्य नेता थे । गांधीजी ने इन्हें समर्थन देते हुए कांग्रेस को आग्रह किया कि पंजाब में हुए अत्याचार और खिलाफत आन्दोलन के बारे में विरोध करने के लिए मिलकर अभियान चलाना तथा स्वराज्य की माँग करना ।

## असहयोग आन्दोलन ( 1920 - 1922 )

अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिन्द स्वराज्य' (1909) में गांधीजी ने कहा है कि भारत में ब्रिटिश शासन भारतीयों के सहयोग से ही स्थापित हुआ था और यह शासन उनके सहयोग के कारण ही चल रहा है । यदि भारत के लोग अपना सहयोग वापस ले लें तो एक वर्ष के अंदर ही ब्रिटिश शासन समाप्त हो जाए और स्वराज्य की स्थापना हो जाएगी ।

7.4 गांधीजी के साथ बातचीत करते हुए चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, वयोवृद्ध राष्ट्रवादी और दक्षिण में नमक के सत्याग्रह के नेता को लोग राजाजी के नाम से पहचानते हैं ।

असहयोग के विचार पर गांधीजी ने आन्दोलन शुरू किया । जिसके दो मुख्य पहलू थे । पहले पहलू में सरकारी नौकरियाँ, विधानसभाओं,सरकारी शिक्षा संस्थाओं, विदेशी कपडे व माल का बहिष्कार करना । जबकि रचनात्मक पहलुओं में खादी, अस्पृश्यता-निवारण, हिन्दू-मुस्लिम एकता, शराबबंदी, स्वदेशी तथा राष्ट्रीय शिक्षा का प्रचार करना था ।

असहयोग आन्दोलन की शुरुआत महात्मा गांधीजी ने 'केसरे हिन्द' की उपाधि को त्याग करके किया । 1921-22 में आन्दोलन अधिक तेजी से शुरू हुआ । विद्यार्थियों ने स्कूल तथा कालेज को छोड़ दिया, मोतीलाल नेहरू, सी. राजगोपालाचारी और आसफअली जैसे अनेक वकीलों ने वकालत छोड़ दिया । अधिकांशतः चुने हुए सदस्यों ने विधानसभा और स्थानीय स्वराज्य की संस्थाओं में से त्यागपत्र दे दिया । कितने ही सरकारी कर्मचारियों ने नौकरियाँ छोड़ दी । लोगों ने जगह-जगह पर विदेशी कपड़ों को जलाना शुरू कर दिया । घर-घर चरखा चलाया जाने लगा । स्वदेशी का प्रचार हुआ । काशी विद्यापीठ, बिहार विद्यापीठ, जामिया मिलिया इस्लामिया, गूजरात विद्यापीठ जैसी राष्ट्रीय संस्थाओं की स्थापना हुई ।

महात्मा गाँधी हिंसक आन्दोलन के विरोध में थे । 1922 में जब किसानों का एक समूह ने गोरखपुर जिले के चौरीचौरा (उत्तरप्रदेश) के पुलिस स्टेशन पर हमला करके आग लगा दिया था, जिसमें 22 पुलिसवाले जीवित

जल गए थे । इस कारण से गाँधीजी ने असहयोग आन्दोलन अचानक स्थगित कर दिया । किसान अनियंत्रित नहीं हुए थे फिर भी उनके शांतिपूर्ण सभा पर पुलिस ने गोली चलायी गई थी ।

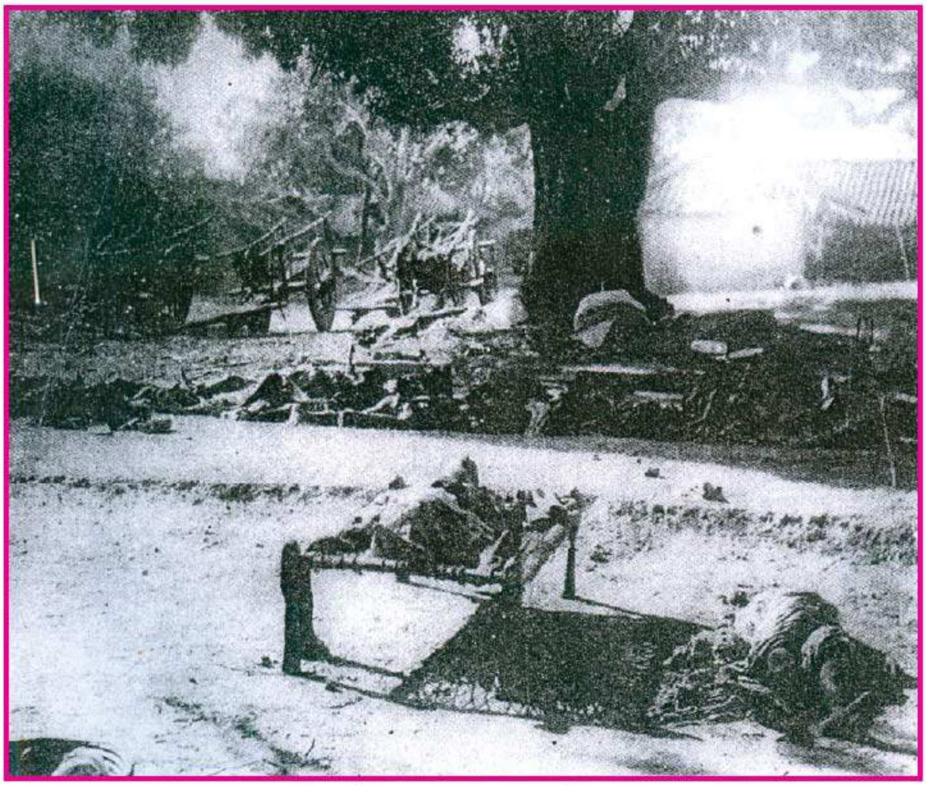

7.5 चौरीचौरा स्थल ( उत्तरप्रदेश )

असहयोग आन्दोलन को समाप्त करके गांधीजी ने ग्रामीण क्षेत्र में रचनात्मक कार्य करने पर ध्यान देना शुरू किया । बीस के दशक में मध्य में ग्रामीण क्षेत्र में किए गए सामाजिक कार्य के प्रतिभाव के रूप में गांधीवादियों को अपने लोकमत का फैलाव करने में सहायता प्राप्त हुई । भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (R.S.S.) की स्थापना भी इस समय की महत्वपूर्ण घटना थी । भारत के भविष्य को यदि ध्यान में लें तो इन पक्षों के विचारों में काफी अन्तर था । अपने शिक्षक की सहायता ले करके इन राजनैतिक पक्षों के विचारों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए ।

**प्रवृत्ति**

मान लीजिए कि वर्ष 1920 चल रहा है । आप सरकारी स्कूल के विद्यार्थी हैं।विद्यार्थियों को असहयोग आन्दोलन में शामिल होने के लिए आह्वान करता हुआ पोस्टर बनाइए ।

**इतना जानिए ( जनता के मानस पटल पर गांधीजी की तस्वीर )**

- असम में 'गांधी महाराज की जय' का नारा लगाकर चाय के बगीचे के मजदूरों ने अपने वेतन को बढ़ाने की मांग शुरू कर दिया ।
- बहुत से असम के वैष्णव गीतों में कृष्ण की जगह 'गांधीराज' का यशगान होना शुरू हो गया था ।
- भारत के देशी रजवाड़े भी गांधीजी से प्रभावित थे । उनमें से गोंडल के राजा भगवतसिंह जी ने अपने राज्य में रचनात्मक कार्यों को गति प्रदान की । इन्होंने कन्या शिक्षा को प्रोत्साहन दिया और अनिवार्य कर दिया । गुजराती भाषा का शब्दकोश 'भगवद्गोमंडल' की इन्होंने रचना करवाई ।

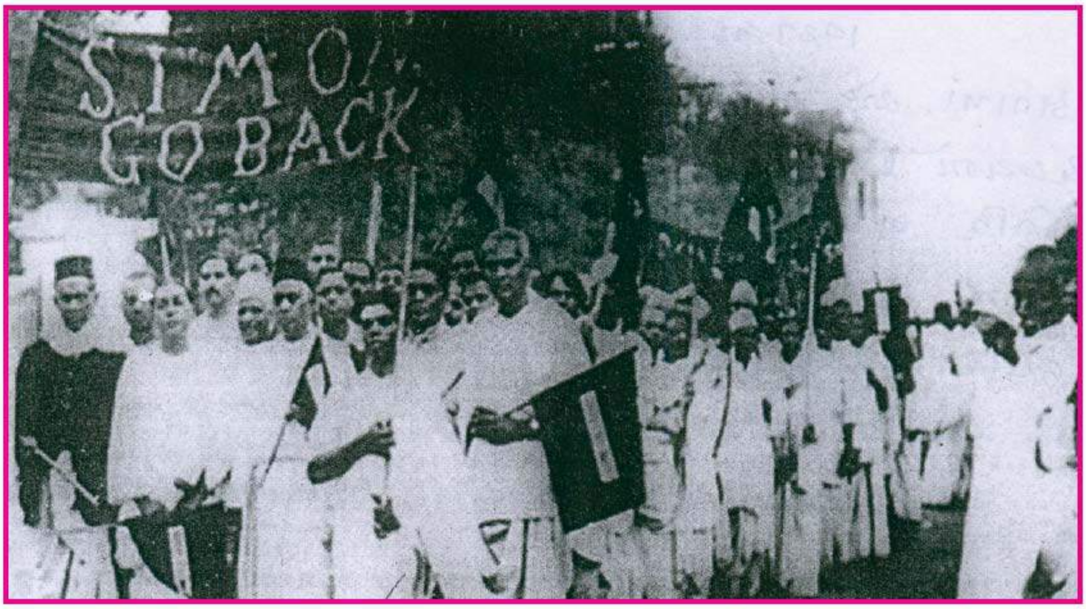


**7.6 सायमन कमीशन का विरोध करते हुए प्रदर्शनकारी**

**सायमन कमीशन ( 1927 ) :** इग्लैन्ड में बैठी हुई ब्रिटिश सरकार ने सायमन की अध्यक्षता में एक आयोग भारत भेजा । इस आयोग को भारत के राजनैतिक जीवन के भविष्य का निर्णय करना था । इस कमीशन में एक भी भारतीय प्रतिनिधि नहीं था । इस निर्णय से भारत को अत्यधिक असंतोष हुआ था । सभी राजनैतिक संगठनों ने सायमन कमीशन का बहिष्कार करने का निर्णय ले लिया । जब कमीशन के सदस्य भारत पहुँचे तब विरोध प्रदर्शनों से उनका स्वागत किया गया । प्रदर्शनकारियों का नारा था – 'SIMON GO BACK.' (साइमन गो बैक)

**बारडोली सत्याग्रह ( 1928 ) :**

अंग्रेज सरकार ने बारडोली के किसानों की लगान में 22 प्रतिशत वृद्धि कर दी । किसानों ने अपने प्रश्न को सरकार के सामने रखा परन्तु सरकार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा अन्त में किसानों ने सत्याग्रह करने का निश्चय किया । वल्लभभाई ने इस आन्दोलन का नेतृत्व स्वीकार किया । आन्दोलन शुरू हुआ । रविशंकर महाराज और जुगतराम दवे जैसे कार्यकर्ताओं की मदद प्राप्त हुई । किसान लोग निर्भय होकर कानून भंग करने लगे । वल्लभभाई के जोशीले भाषण से किसानों में हिम्मत आई । अंत में अंग्रेज सरकार ने वल्लभभाई को पूना बुलाया । किसान प्रतिनिधियों की उपस्थिति में ही न्यायपूर्ण कर वसूल करने का निश्चय किया गया । इस सफल सत्याग्रह के कारण वल्लभभाई 'सरदार' कहलाए ।

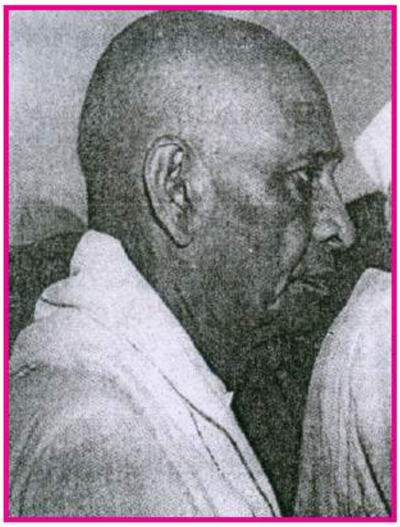

**7.7 सरदार पटेल**

**सरदार पटेल ने 1945-47 के समय में आजादी के लिए वार्तालाप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी । 1918 के बाद स्वतन्त्रता आन्दोलन में प्रथम पंक्ति में रहने वाले पटेल 1931 में कांग्रेस के भी अध्यक्ष थे।**

### इतना जानिए

**हमारी शब्द की शक्ति**

सत्य के लिए आग्रह अर्थात् सत्याग्रह । ब्रिटिशसत्ता का इसको ऐसा अनुभव हुआ कि बीसवीं शताब्दी से 'SATYAGRAHA' शब्द को अंग्रेजी भाषा में समावेश कर लिया गया । अंग्रेजीभाषी को यह शब्द समझाना नहीं पड़ता । सत्ता के दुरुपयोग के सामने यह एक नैतिक आन्दोलन है । विदेश में मार्टिन ल्युथर किंग और नेल्सन मंडेला पर इस पद्धति का विशेष प्रभाव पड़ा । आज विश्व के किसी भाग में इस प्रकार के आन्दोलन के लिये 'सत्याग्रह' शब्द का उपयोग किया जा सकता है । हमारा यह शब्द आज अंतर्राष्ट्रीय शब्द बन चुका है ।

## नेहरू रिपोर्ट ( 1928 )

भारत के सभी राजनैतिक पक्षों के प्रतिनिधियों की बनी एक सर्वपक्षीय परिषद फरवरी, 1928 में दिल्ली में आयोजित हुई । उन्होंने भारत का संविधान बनाने के लिए मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में एक समिति की रचना की । इन्होंने सभी पक्षों को अनुकूल हो ऐसा संवैधानिक प्रारूप तैयार किया जिसे नेहरू प्रारूप या रिपोर्ट के रूप में जाना जाता है । परन्तु मुस्लिम लीग की असंमति के कारण सरकार ने उसे अस्वीकार कर दिया ।

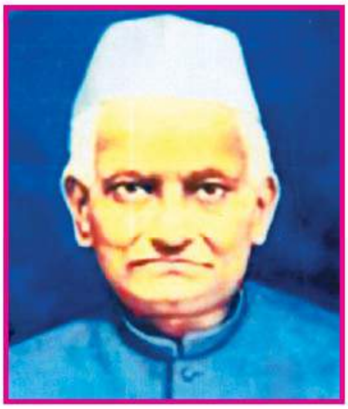

7.8 मोतीलाल नेहरु

## पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव ( 1929 )

नेहरू रिपोर्ट के अनुसार सांस्थानिक पहलू पर उत्पन्न हुए विवाद को सुलझाने के लिए सरकार को दिए गए समय की अवधि पूरी हो जाने से कांग्रेस ने लाहौर में जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में एक अधिवेशन बुलाया गया । सरकार का कोई प्रतिभाव न मिलने से रावी नदी के किनारे हुए इस अधिवेशन को 'पूर्ण स्वराज्य' के बारे में प्रस्ताव पारित किया गया । उसके बाद 26 जनवरी 1930 के दिन इस संदर्भ में कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य की शपथ ली । इस घटना के बाद में स्वतन्त्र भारत के संविधान को भी इसी तारीख से अमल में लाया गया ।

### इतना जानिए

महात्मा गांधीजी 1924 में बेलगांव के कांग्रेस अधिवेश में एक बार प्रमुख बने थे ।

### स्वाध्याय

**1. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

(1) महात्मा गाँधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में किसलिए सत्याग्रह किया ?

(2) सत्याग्रह के महत्त्वपूर्ण पहलू कौन-कौन से हैं ?

(3) रोलेट एक्ट को गांधीजी ने 'काला कानून' क्यों कहा ?

(4) भारत में 'खिलाफत आंदोलन' क्यों शुरू हुआ ?

(5) गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन क्यों वापस लिया ?

**2. संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :**

(1) खेड़ा सत्याग्रह

(2) असहयोग आन्दोलन

(3) बारडोली सत्याग्रह

**3. उचित जोड़े बनाइए :**

| ( अ ) | ( ब ) |
|---|---|
| (1) चंपारन | (1) उत्तरप्रदेश |
| (2) नाटाल | (2) पंजाब |
| (3) अमृतसर | (3) बिहार |
| (4) चौरीचौरा | (4) पाकिस्तान |
| (5) लाहौर | (5) दक्षिण अफ्रीका |

# पुनरावर्तन 1

## प्रकरण 1 से 7

### आइए, फिर से याद करें :

- भारत में सामाजिक और धार्मिक नवजागृति वाले राजा राममोहन राय से ठक्करबापा तक की विभूतियाँ
- प्रदूषण और उसके प्रकार
- भारतीय राष्ट्रीय महासभा का उदय और सुभाषचन्द्र बोस
- आपको उच्च अदालत का निर्णय मान्य नहीं है, तो सर्वोच्च अदालत में जाना पड़े । क्यों ?
- क्रान्तिकारी घटनाएँ
- जनगणना और उसका महत्व
- गाँधीजी के सत्याग्रह (1928 तक)

### "आइए, समझें"

- ब्रह्मसमाज, रामकृष्ण मिशन
- ज्योतिबा फुले महात्मा क्यों ?
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का उदय
- सर्वोच्च न्यायालय अर्थात् अंतिम न्याय ?
- भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु, फड़के और बिस्मिल के साहसिक कार्य
- भारत की सम्पूर्ण साक्षरता – एक उपाय
- असहयोग आन्दोलन और बारडोली सत्याग्रह की तुलना कीजिए ।

### आइए, विचार करें :

- कुरिवाज और अंधश्रद्धा
- प्रदूषण किस तरह रोका जा सकता है ? उदाहरण दीजिए ।
- आपके गाँव या शहर को व्यवस्था के लिए सरकार दो भागों में बाँट दे तो क्या हो ?
- भारत आजाद होने के बाद क्या हुआ ?
- सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय

### आइए, स्वयं करें :

(1) आपके ध्यान में हो, ऐसे प्रदूषण करने वाले स्थानों का निदर्शन करके रिपोर्ट तैयार कीजिए ।

(2) आपके क्षेत्र की साक्षरता दर और जनसंख्या घनत्व की दर ज्ञात कीजिए ।

•

# 8

# भारत की समस्याएँ और उपाय

हमारे भौतिक साधन बदलते हैं, परंतु प्रजा के कुछ आंतरिक मामलों में अपेक्षित बदलाव नहीं होते । प्रामाणिकता, नैतिकता, कर्तव्य के प्रति नागरिक की जागरूकता, परिवहन की जागरूकता, पर्यावरण सुरक्षा, वैज्ञानिक अभिगम की तरफ व्यवहार वगैरह में अभी भी उदासीनता देखने को मिलती है । अभी भी समाज रहम, निरक्षरता, अज्ञानता और अंधविश्वास में से पूर्णतः बाहर नहीं आया है ।

स्थानीय स्वराज्य की संस्थाएँ, शिक्षा संस्थाएँ और स्वैच्छिक संस्थाएँ देश के विकास में अग्रिम योगदान दे रही हैं, जिससे सामाजिकता और व्यावसायिकता की प्रगति या वृद्धि होती जा रही है । यह अच्छी बात है कि समाज रचना में बदलाव होता जाता है ।

अभी भी कुछ समस्याएँ चुनौती रूप हैं । गंदगी, बेरोजगारी, गरीबी, निरक्षरता, आतंकवाद चिंता के विषय हैं, जिनके संबंध में हम विचार करें और उनके उपाय खोजें । ''वसुधैव कुटुंबकम्'' की भावना साकार करें ।

**भारतीय समस्याओं का ढाँचागत स्वरूप निम्नानुसार है :**

आंतरिक समस्याएँ
- जनसंख्या वृद्धि
- निरक्षरता
- महँगाई
- गरीबी
- बेरोजगारी, शहरीकरण
- सांप्रदायिकता
- भ्रष्टाचार
- आतंकवाद

प्रादेशिक समस्याएँ
- भाषावाद और प्रान्तवाद

सीमा समस्या

प्राकृतिक समस्याएँ
- बाढ़, अकाल
- भूकंप, सुनामी ज्वालामुखी का फटना

ऐसी समस्याओं में से कुछ के बारे में आज हम बात करें और उनके उपायों के बारे में जानकारी प्राप्त करें ।

## जनसंख्या वृद्धि

**प्रसंग :** मालव को अपने मामा के विवाह में जाना था । अपनी माँ के साथ वह बस स्टेशन आया । वहाँ लोगों की भीड़ थी । बस आई परंतु उसमें जगह नहीं थी । धक्कामुक्की होने से बस में नहीं चढ़ा जा सका । इसलिए वे समय से मामा के घर न पहुँच सके । किस कारण ?

**8.1 जनसंख्या वृद्धि**

**प्रवृत्ति**

ऐसे भीड़वाले स्थानों की सूची तैयार कीजिए, जिन्हें आपने देखा है ।

आपने पिछले प्रकरण में जनसंख्या वृद्धि और उसके प्रभावों का अध्ययन किया है । अधिकांश समस्याओं का मूल जनसंख्या वृद्धि है । आइए, हम जनसंख्या वृद्धि के रोकथाम के उपायों के बारे में विचार करें । बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए साधन-सुविधाएँ बढ़ानी पड़ती है । बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण ही देश में हुई प्रगति कम दिखाई देती है ।

**प्रवृत्ति**

1951 से 2011 तक की जनसंख्या वृद्धि का ग्राफ तैयार करें । (उचित स्केल माप लें ।)

| | |
|---|---|
| 1951 | 31.60 |
| 1961 | 43.92 |
| 1971 | 54.81 |
| 1981 | 68.33 |
| 1991 | 84.64 |
| 2001 | 102.87 |
| 2011 | 121.01 |

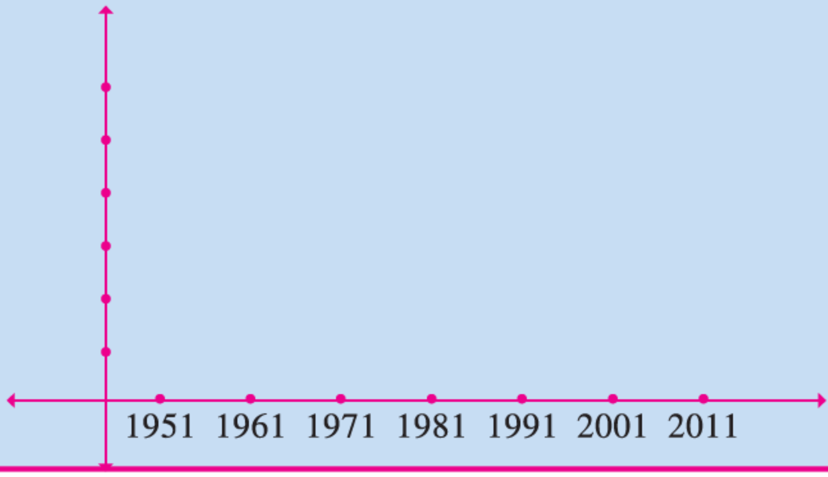


भारत में 2001 की जनगणना के अनुसार 102 करोड़ जनसंख्या थी, जो आज 2011 में 121 करोड़ हो गई है । इस तरह 18.14 करोड़ की वृद्धि हुई है । जनसंख्या वृद्धि के कारण कुछ मानव सर्जित समस्याएँ हैं । जैसे पर्यावरणीय प्रदूषण, जनसंख्या की घनी आबादी, पानी, भोजन, चिकित्सा सेवाएँ, शिक्षा, रोजगार, बेरोजगारी, आतंकवाद, भ्रष्टाचार आदि । जनसंख्या वृद्धि रोकने के लिए सरकार को नियंत्रणकारी कदम उठाने पड़े हैं ।

## निरक्षरता

निरक्षरता देश के विकास में बड़ा अवरोधक तत्त्व है । नए विचारों, खोजों या ज्ञान को समझने के लिए साक्षरता अनिवार्य है । शिक्षित व्यक्ति समझकर अपने विचारों, अभिप्रायों ख्यालों या मान्यताओं को दूसरों के समक्ष प्रभावकारी रूप में प्रस्तुत करके समझा सकता है । आजादी मिली उस समय देश में निरक्षरता की मात्रा अधिक थी । परंतु सरकार की शिक्षा के प्रति जागरूकता के कारण साक्षरतादर बढ़ती जाती है ।

**इतना जानिए**

उन्नीसवीं सदी में भारत में सर्वप्रथम अपने राज्य में साक्षरता दर बढ़ाने के लिए वडोदरा के महाराज सयाजीराव गायकवाड़ ने प्राथमिक शिक्षा को नि:शुल्क और अनिवार्य किया था ।

### उपाय

आज समाज में निरक्षरता का लाभ उठाने के अनेक किस्से देखने-सुनने को मिलते हैं । इसलिए निरक्षरता कलंक रूप है, जिसे दूर करने के लिए अनेक योजनाएँ क्रियान्वित की गई हैं । जैसे कि 6 से 14 वर्ष तक नि:शुल्क अनिवार्य सार्वत्रिक शिक्षा, शिष्यवृत्ति, मध्याह्न भोजन, पूर्व प्राथमिक शिक्षा, कन्या शिक्षा से संबंधित विशेष योजनाएँ, आश्रम शालाएँ, विद्यादीप योजना, आदर्श निवासी विद्यालय, निरंतर शिक्षा तथा अभी तो 2009 से R.T.E. (Right to Education) 'शिक्षा प्राप्ति का अधिकार' सभी को है, लागू किया गया है ।

**भारत के गत पाँच दशकों की निरक्षरता खोजें**

| जनगणना वर्ष | साक्षरता प्रतिशत | निरक्षरता खोजें |
|---|---|---|
| 1971 | 36.95 | |
| 1981 | 44.92 | |
| 1951 | 61.29 | |
| 2001 | 69.14 | |
| 2011 | 79.13 | |

## महँगाई

**प्रवृत्ति**

| चीज-वस्तु 1 लीटर / 1 कि.ग्रा. | पांच वर्ष पहले का भाव (रु.) | आज का भाव जानकर लिखें । | % में वृद्धि |
|---|---|---|---|
| दूध | | | |
| शुद्ध घी | | | |
| शक्कर | | | |
| गुड़ | | | |
| गैस | | | |
| पेट्रोल | | | |

जीवन के लिए आवश्यक विविध चीजवस्तुओं तथा अन्य चीजों के बढ़ते भावों को सामान्य रूप से महँगाई कह सकते हैं । दैनिक आवश्यकता की कुछ वस्तुओं के भाववृद्धि का विपरीत प्रभाव जनजीवन पर देखने को मिलता है । अर्थात् महँगाई आम जनता के लिए सिरदर्द समान बनती है । मध्यम वर्ग या सीमित आयवाले लोगों के लिए जीवन यापन कठिन बनता जाता है । महँगाई का प्रभाव आम जनता को झेलना पड़ता है । जीवनस्तर निम्न बनता जाता है । महँगाई का मुकाबला करना सभी के लिए कठिन हो जाता है । दैनिक आवश्यकता की वस्तु का भाव बढ़ने से वस्तु के बिना भी गुजारा करना पड़ता है ।

**उपाय**

कालाबाजारी, संग्रहखोरी और जनसंख्या वृद्धि महँगाई के लिए उत्तरदायी तत्व हैं । उन्हें रोकने के लिए नागरिक के रूप में हम क्या कर सकते हैं ? मितव्ययता और समझदारीपूर्वक जीवन व्यवहार आयोजित करना ही इसका उपाय हो सकता है ।

**प्रवृत्ति**

किन-किन प्रसंगों में खाद्यपदार्थ बरबाद होते देखे जाते हैं ? उनकी सूची तैयार करें.... ? उन्हें रोकने के लिए हम एक नागरिक के रूप में क्या कर सकते हैं ?

## गरीबी

गरीबी हमारे देश की एक गंभीर समस्या है । देश के अधिकांश लोग जीवनस्तर की मूलभूत आवश्यकताएँ; जैसे रोटी, कपड़ा, मकान, रोजगार, शिक्षा, चिकित्सा से वंचित रहते हों, उस स्थिति को 'गरीबी' कहा जाता है । गुजरात में वर्तमान समय में गरीबी रेखा के नीचे जीने वालों की मात्रा 14.7 प्रतिशत है ।

लोगों की क्रयशक्ति और आय के स्तर के आधार पर गरीबी का मापदंड बनाया जा सकता है । भारत की पंचवर्षीय योजनाओं के कारण शिक्षा और चिकित्सा की सुविधाएँ मिलने लगी हैं । इसके अतिरिक्त उद्योग धंधों का विकास हुआ है और रोजगारी के अवसर मिलने से गरीबी की मात्रा घट रही है । टेक्नोलॉजी और यांत्रिक खेती से लोगों की आय में सुधार हुआ है ।

**इतना जानिए**

B.P.L = Below Poverty Line (गरीबी की रेखा के नीचे जीने वाले लोग)

जिन्हें पोषणयुक्त आहार नहीं मिलता । गंदे आवास स्थान में रहना पड़ता हो, पर्याप्त डाक्टरी चिकित्सा न मिलती हो, जो अनपढ़ हो, जहाँ बालकों से मजदूरी कराई जाती हो, ऐसे लोग 'गरीबी की रेखा के नीचे वाले लोग' कहे जाते हैं ।

**प्रवृत्ति**

अपने गाँव की पंचायत या नगरपंचायत की मुलाकात लेकर गरीबी रेखा के नीचे जीने वाले B.P.L. परिवारों की संख्या जानें ।

## भ्रष्टाचार

सामान्य रूप से भ्रष्टाचार अर्थात जो वस्तु हमारे हक या अधिकार की हो फिर भी उसे पाने या उपयोग के लिए हमें कुछ चुकाना पड़े उसे 'भ्रष्टाचार' कहा जा सकता है । संक्षेप में, व्यक्ति के साथ अवैधानिक अनीतिपूर्ण व्यवहार ।

ठगाई, भेंट-सौगात लेना, घूस-रिश्वत लेना आदि स्वरूप में भ्रष्टाचार देखने को मिलता है । यह समग्र जनजीवन पर व्यापक रूप से फैल गया है । कुछ लोग अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए अपने पद, सत्ता आदि का अनैतिक और बेजवाबदारीपूर्वक उपयोग करके भ्रष्ट आचरण का आश्रय लेते हैं, जो समाज के लिए बड़े से बड़ा कलंक है ।

**भ्रष्टाचार का सहारा :** भ्रष्टाचार और रिश्वत से निम्नांकित प्रभाव देखने को मिलता है :

- मानव अधिकारों का भंग होता है ।
- राष्ट्र का विकास अवरुद्ध होता है ।
- नैतिक मूल्यों का ह्रास होता है ।
- महँगाई को पोषण मिलता है ।
- कानून के प्रति विश्वास घटता है और सगावाद पलता है ।
- मानवीय विश्वास और श्रद्धा घटती है ।

**उपाय :** भ्रष्टाचार की बुराई को दूर करने के लिए 1988 से भारत सरकार ने कानून की व्यवस्था की है । 1964 में 'भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरों' की रचना की गई है, जो भ्रष्टाचार की जाँच करती है । नागरिकों को इस समस्या के हल के लिए मार्गदर्शन देती है ।

**प्रवृत्ति**

- रिश्वत या भ्रष्टाचार संबंधी समाचार में आने वाले समाचार के कटिंग्स प्राप्त कर चर्चा कराएँ । अंक बनाएँ ।
- अपने जिले में स्थित भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो कार्यालय का पता प्राप्त करें ।

## एक संदेश

- घूस लेना या घूस देना ये दोनों आपराधिक मामले हैं ।

**इतना जानिए**

भ्रष्टाचार या घुसखोरी -रिश्वत मिटाने के लिए की गई व्यवस्था और कानूनों को जानें ।

- नियामक महोदय, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो, बंगला नं. 11, डफनाला, शाहीबाग, अहमदाबाद-380 004. फोन नंबर : 22860341-42-43. इमेइल : cr.acb.ahd.(a).gujarat.gov.in

## बेकारी ( बेरोजगारी )

**इतना जानिए और विचार कीजिए**

| भर्ती की जगह का ब्योरा | भर्ती के लिए खाली जगह | प्राप्त उम्मीदवारों के आवेदनपत्रों की संख्या |
|---|---|---|
| उच्चतर प्राथमिक शिक्षक | 13000 | 1,50,000 |

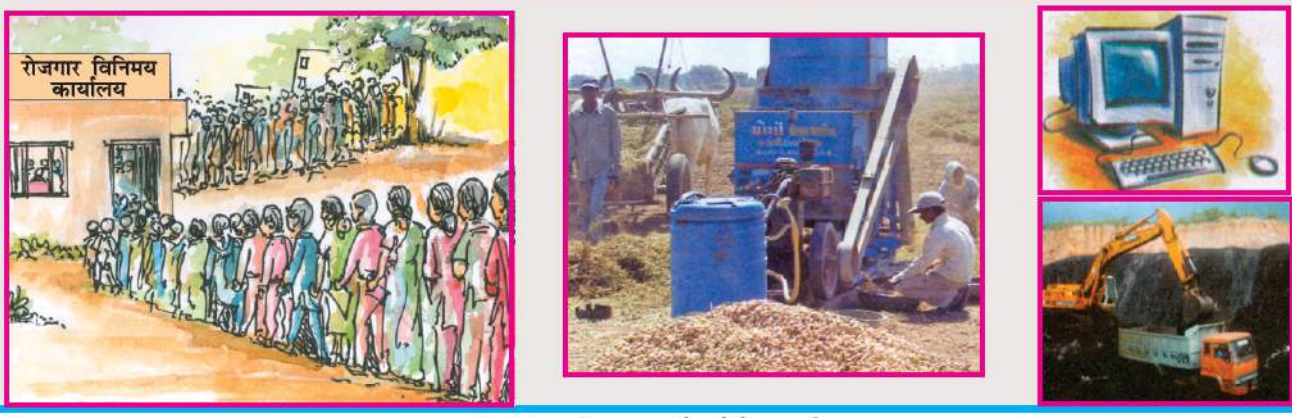


**8.2 आधुनिकता और बेरोजगारी**

आज के वैज्ञानिक युग में अद्यतन टेकनोलॉजी से बेरोजगारी में वृद्धि हुई है । जैसे कि कम्प्यूटराइज्ड कार्यप्रणाली से अच्छे गुणवत्तावाले कार्य तीव्र हुए हैं और मनुष्य का काम यंत्रों द्वारा किए जाने से बेरोजगारी बढ़ी है । गाँवों में कृषि में यंत्रीकरण होने से कृषि मजदूरों के लिए रोजी-रोटी की समस्या विकट बनी है । वे काम की खोज़ में शहर की तरफ मुड़े हैं, जिससे गाँव टूटते जाते हैं । शिक्षा का प्रसार हुआ है, परंतु नौकरी या रोज़गारी के अवसर पर्याप्त मात्रा में निर्मित न होने से भी बेरोजगारों का संख्या बढ़ी है । शहरों में आबादी का घनत्व बढ़ता जाता है । जिससे पानी, आवास यातायात, स्वच्छता, स्वास्थ्य और शिक्षा संबंधी प्रश्न खड़े हुए हैं । गंदे आवास और झुग्गियों के बढ़ने से असामाजिक प्रवृत्तियाँ, बालमजदूरी, नशीली चीजों का सेवन, मानसिक तनाव आदि समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं । 18 वर्ष से ऊपर के लोगों को रोज़गार न मिलने से वे बेरोजगार की गणना में आते हैं ।

**उपाय**

इस समस्या के निवारण के लिए समाज की कुछ सेवाभावी संस्थाओं तथा सरकार द्वारा बहुत सी योजनाएँ अमल में लाई गई हैं । जैसे कि, (1) विशेष आवास योजना (2) नि:शुल्क शिक्षा (3) शुद्ध पेयजल (4) स्वच्छता (5) डॉक्टरी मोबाइलवान सेवा (6) गृहउद्योग तथा हस्तकला को प्रोत्साहन देने के लिए लोन सुविधा तथा (7)पोषणयुक्त आहार योजना जैसी प्राथमिक आवश्यकता को ध्यान में रखकर झुग्गियों की कायापलट करने का प्रयास किया गया है ।

**प्रवृत्ति**

आपके गाँव या क्षेत्र में चलनेवाले गृहउद्योग, हस्तकला कारीगरी केन्द्र की मुलाकात आयोजित करके, चर्चा करके नोट तैयार करें तथा उनकी सूची बनाएँ ।

**इतना जानिए**

गाँव में किसानों को खेती और पशुपालन के विकास के लिए कम दर पर ऋण तथा सहायता देती है, जिससे हरियाली क्रांति और श्वेतक्रांति देखने को मिली है । इससे कृषि और पशुपालन द्वारा उत्पादन में वृद्धि हुई है ।

## आतंकवाद

आतंकवाद वैश्विक समस्या है । आतंकवादी प्रवृत्ति राष्ट्र की प्रगति की अवरोधक है । यह शांति, अमन, भाईचारा तथा देश की आजादी को छिन्नभिन्न करनेवाली हलकी मनोवृत्तिवाली प्रक्रिया है । आतंकवाद मुख्यतः हिंसा और घृणा फैलाकर लोगों में भय पैदा करता है । आतंकवादी का उद्देश्य कदापि पवित्र या उत्तम नहीं होता ।

मुट्ठीभर मनुष्यों द्वारा संगठित और आयोजित रूप से किया जानेवाला यह जंगली कृत्य है, जिसमें जबरदस्ती, धाक-धमकी, हिंसा या त्रास देने का व्यवस्थित प्रयोग होता रहता है ।

- ऐसे कृत्य किसी भी सरकार के लिए चुनौती स्वरूप बनते हैं ।
- आतंकवाद बलप्रयोग का सर्वसुलभ साधन है । इसलिए किसी भी स्थान पर लोगों को निशाना बनाया जाता है । जैसे कि भूतकाल में संसद पर हुए हमले, होटल ताज पर हुई घटना, मुंबई बम विस्फोट, अक्षरधाम पर हमला आदि ।
- आतंकवाद में किसी भी प्रकार का भाई-भतीजावाद बाधक नहीं बनता या उसकी कोई भाषा या धर्म नहीं है । सिर्फ बैरभाव को लक्ष्य में रखा जाता है ।

### उपाय

आतंकवाद का सामना करने के लिए हमें हिम्मत और दक्षता विकसित करके दृढ़ बनना पड़ेगा तथा गुप्तचर (जासूसी) तंत्र को अधिक कार्यक्षमा बनाना पड़ेगा । सुरक्षा दलों को आवश्यक सहयोग देने की जागरूकता कुशल विकसित करनी पड़ेगी । आम जनता को यात्रा में या सार्वजनिक मेले वगैरह में सचेत रहना चाहिए और गलत प्रचार या अफवाह से दूर रहना चाहिए । C.C.T.V. कैमेरा तथा मेटल डिटेक्टर जैसे आधुनिक उपकरणों से सुरक्षा दलों को सुसज्जित करना चाहिए ।

इसके अतिरिक्त भी भारत में रूढ़िवादिता, सांप्रदायिकता, प्रान्तवाद-भाषावाद, सीमा समस्या और प्राकृतिक आपदाओं के पश्चात पुनर्वसन तथा व्यवस्थापन आदि मामले भी सरकार के लिए चुनौतीपूर्ण समस्या हैं । उनका आप व्योरेवार अध्ययन करें । उनके उपाय भी अपने शिक्षक महोदय से आप जानें ।

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

(1) जनसंख्या वृद्धि से कौन-कौन-सी समस्याएँ पैदा होती हैं ?

(2) निरक्षरता दूर करने के लिए सरकार ने कैसे-कैसे उपाय किए हैं ?

(3) भाव वृद्धि से आम जनता को कौन-सी कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती हैं ?

(4) गरीबी का मापदंड क्या है ?

(5) भ्रष्टाचार की परिभाषा दीजिए ।

(6) झुग्गियों में कैसी समस्या खड़ी होती है ?

(7) आतंकवाद के प्रभाव बताइए ।

**2. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :**

(1) सभी समस्याओं के मूल में ............ उत्तरदायी है ।

(2) चीज़-वस्तुओं की भाववृद्धि को ............ कहते हैं ।

(3) आतंकवाद ............ समस्या है ।

**3. सही जोड़े बनाइए :**

| (अ) | (ब) |
|---|---|
| (1) जनसंख्या वृद्धि | (1) R.T.E. |
| (2) निरक्षरता निवारण | (2) रोजगार के अवसर का सृजन |
| (3) गरीबी निवारण | (3) समझदारीपूर्वक जीवन स्तर |
| (4) महंगाई से बचाव | (4) सभी समस्याओं का कारण (सर्जक) |

# 9

## हमारी अर्थव्यवस्था

आइए, रुपए की यात्रा का अवलोकन करें ।

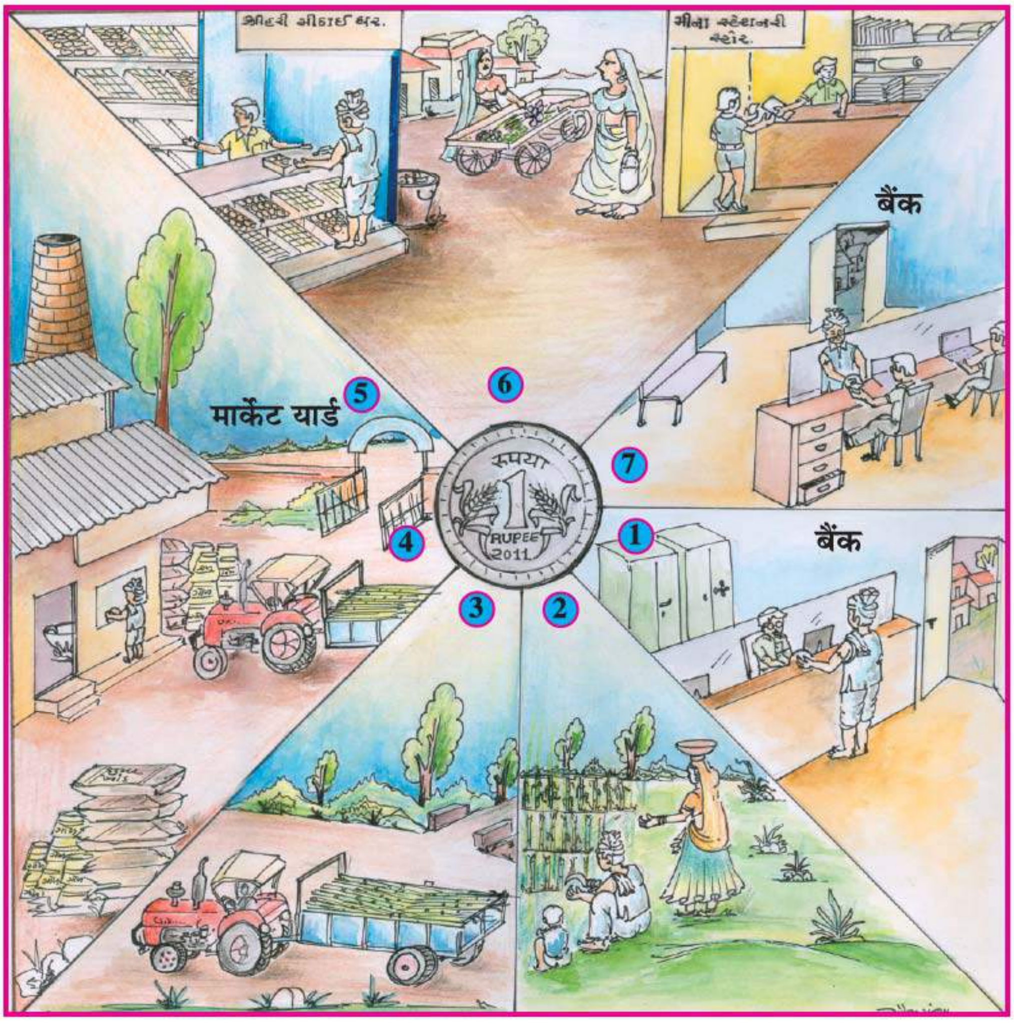


9.1 रुपए की यात्रा

1. बैंक का ही पैसा बैंक में वापस आने तक की तमाम प्रक्रिया को नीचे की पंक्तियों में लिखिए ।

उ. : ____________________

____________________

2. आपके माता या पिता कौन-सी आर्थिक प्रवृति करते हैं ? उसे लिखें ।

उ. : ____________________

____________________

3. आपके घर में आय का उपयोग कहाँ-कहाँ होता है ? उसे लिखें ।

उ. : ____________________

____________________

उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर के आधार पर कहा जा सकता है कि लोग विविध आर्थिक प्रवृत्तियों में जुड़े होते हैं । आर्थिक प्रवृत्ति मुख्यत: तीन क्षेत्रों पर निर्भर होती है । तो आइए, हम उनका परिचय प्राप्त करें ।

**प्राथमिक क्षेत्र :** हम प्रकृति से कितने ही उत्पाद सीधे प्राप्त करके उन्हें उपयोग में लेते हैं । अनाज, दाल और वनस्पति उसके उदाहरण हैं । जंगलों से लकड़ी, औषधीय वनस्पति, गोंद और लाख । प्राणी हमें दूध माँस, हड्डी और चमड़े देते हैं । जल में से हमें मछली मिलती है । इसी तरह जमीन की सतह के नीचे से खनिज प्राप्त किए जाते हैं । संक्षेप में वनक्षेत्र, कृषिक्षेत्र, खानक्षेत्र, पशुपालनक्षेत्र, मत्स्यक्षेत्र आदि भोजन और औद्योगिक उत्पादन के लिए कच्चे माल की पूर्ति करते हैं । इसलिए ये क्षेत्र प्राथमिक क्षेत्र की प्रवृत्ति के रूप में जाने जाते हैं ।

**द्वितीयक क्षेत्र :** बहुत से प्राथमिक उत्पाद ऐसे हैं कि जिन पर प्रक्रिया करके उनके उत्पादों को उपयोग में ले सकते हैं । ऐसी प्रवृत्ति द्वितीयक क्षेत्र की प्रवृत्ति कहलाती है । जैसे कि कपास से सूती कपड़े, कपासिया तेल, गन्ने से गुड़ और चीनी, मिट्टी से ईंट बनाना आदि । यंत्र सामग्री, मार्ग परिवहन तथा संचार के साधन, विद्युत सामग्री, तैयार उपयोगी वस्तएँ आदि के उत्पादन में संलग्न बड़े उद्योग, सुरक्षा सामग्री, रंग – रसायन, कपड़े आदि का उत्पादन करनेवाली इकाइयों आदि का समावेश इस क्षेत्र में होता है, इसलिए इन्हें ''औद्योगिक क्षेत्र'' भी कहते हैं ।

**सेवा क्षेत्र :** प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्र द्वारा उत्पादित वस्तुओं के जत्थे बड़े व्यापारियों तक पहुँचाने के लिए ट्रकों और ट्रेनों द्वारा परिवहन करने की आवश्यकता पड़ती है । उत्पादन और व्यापार में सहयोग देने के लिए टेलीफोन, पत्राचार, बैंकों से ब्याज पर रुपए लेने की भी आवश्याकता पड़ती है । संक्षेप में, व्यापार संचार तथा मार्ग परिवहन, हवाई तथा समुद्री मार्गों, शिक्षा और स्वास्थ्य, बैंकिंग तथा बीमा कंपनियाँ, पर्यटन और मनोरंजन, गैस और बिजली जैसी सेवाओं आदि का समावेश इस क्षेत्र में होता है । वर्तमान समय में इन्टरनेट, ए. टी. एम. बूथ-कॉल सेन्टर, सॉफ्टवेर कंपनी वगैरह महत्त्वपूर्ण सेवाएँ शुरू हुई हैं । निम्नांकित सारणी पढ़ें, विचारें और उसमें लिखें :

| आर्थिक प्रवृत्तियों के उदाहरण | प्रभाव क्या पड़ेगा ? | यह क्या दर्शाता है । |
|---|---|---|
| ● माना कि किसान किसी भी चीनी मिल को गन्ना बेचने से मना करें, तो क्या होगा ? | | |
| ● माना कि यदि कंपनियाँ भारतीय बाजार में से कपास न खरीदकर अन्य देशों से कपास आयात करने का निर्णय करें, तो कपास की खेती का क्या होगा ? | | |
| ● किसान ट्रैक्टर, पंपसेट, बिजली रासायनिक खाद, कीटनाशक दवाइयाँ जैसी अनेक वस्तुएँ खरीदता है । माना लो कि रासायनिक खाद और पंपसेट की कीमत बढ़ जाए तो क्या होगा ? | | |
| ● औद्योगिक और सेवाक्षेत्र में काम करनेवाले लोगों को भोजन की आवश्यकता होती है । मान लो कि ट्रांसपोर्टवाले हड़ताल कर दें और गाँव से शाक-सब्जी, दूध आदि ले जाने से मना कर दें, तो क्या होगा ? | | |

**विचार कीजिए**

भारत में सेवाक्षेत्र का महत्त्व दिन-प्रतिदिन बढ़ने लगा है - क्यों ? इसकी चर्चा करें ।

प्रत्येक क्षेत्र की विविध वस्तुओं और सेवाओं की गणना किस तरह करते हैं और कुल उत्पादन को किस तरह जानते हैं ? आइए, विचार करें ।

एक किसान आटे की किसी मिल को 15 रुपए प्रति किलो की दर से गेहूँ बेचता है । मिल में गेहूँ पीसा जाता है । अपना आटा बिस्किट कंपनी को 20 रुपए प्रति किलोग्राम की दर से बेचता है । बिस्किट कंपनी आटे के साथ चीनी, घी आदि चीजों का उपयोग करके बिस्किट के चार बड़े पाकिट बनाती है । वह बाजार में ग्राहक को 80 रुपए में (20 रु. प्रति पैकेट) बेचती है । यहाँ बिस्किट अंतिम उत्पादन है और वह ग्राहक तक पहुँचता है ।

## प्रवृत्ति

**चाय की कंपनी के ब्योरे की सारणी पढ़े और विचारें :**

- चाय के होटल के मालिक को एक कप ..... रुपए में पड़ता है और वह 2.50 रुपए मुनाफा लेता है तो उसका विक्रय मूल्य ..... रु. होगा ।
- माना कि दूध का भाव प्रति लीटर 2 रुपये बढ़ जाय, तो चाय के कप का न्यूनतम मूल्य और विक्रय मूल्य कितना होगा ?
- चीनी के भाव में 1 रु. बढ़ जाए तो आपके घर खर्च पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?
- गैस सिलेडर के भाव 50 रु. बढ़ जाए तो माँ के घर खर्च के बजट (अंदाजपत्र) पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?
- डीजल के भाव में प्रति लीटर 2.50 रु. बढ़ जाए तो आपके स्कूल बस या गाँव की बस के भाड़े पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

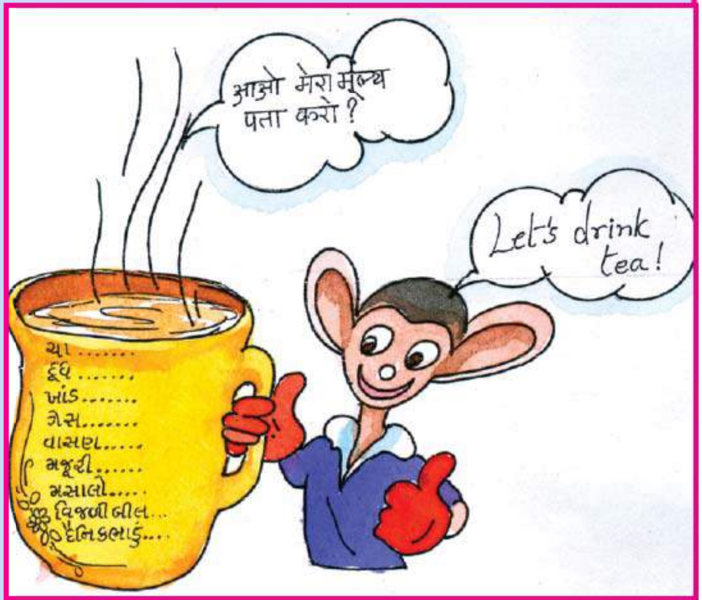


**9.2 भाव बढ़ोतरी का बजार पर असर**

## विचार कीजिए

दूध, चीनी, गैस, डीजल आदि वस्तुओं में भाव वृद्धि कौन करता होगा ? क्यों भाव वृद्धि करनी पड़ती है ?

**भारत की विविध आर्थिक प्रवृत्तियों का वर्गीकरण उसके स्वामित्व की दृष्टि से भी किया जाता है ।**

**(1) सरकार के स्वामित्व या सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग :** जो उद्योग सरकार के स्वामित्व और सरकार के संचालन अंतर्गत होते हैं वे सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योग हैं । उदा. स्वरूप भिलाई स्टील प्लांट, भारतीय हेवी इलेक्ट्रिक लिमिटेड (BHEL), आयल एन्ड नेचुरल गैस कमीशन (ONGC) आदि सरकार के स्वामित्व की इकाइयाँ हैं ।

**(2) निजी स्वामित्व या निजी क्षेत्र के उद्योग :** जिन औद्योगिक इकाइयों का स्वामित्व और संचालन निजी लोगों का हो वैसी इकाइयाँ निजी स्वामित्व या निजी क्षेत्र के उद्योग कहलाते हैं । उदा. स्वरूप टाटा आयर्न ऐन्ड स्टील कंपनी लिमिटेड (TISCO) (टीस्को), रिलायन्स, टोरन्ट, केडिला, अलेम्बिक जैसी कंपनियाँ निजी कंपनियाँ हैं ।

**(3) संयुक्त क्षेत्र के उद्योग :** सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों की कुछ सीमाएँ होती हैं । इनमें मुख्यत: अकार्यदक्षता और कामचोरी देखने को मिलती है । इन्हें नियंत्रित करने के लिए – अंकुश लगाने के लिए तथा आवश्यक पूँजी एकत्र करने के लिए निजी क्षेत्र के विशेषज्ञों की मदद लेने के उद्देश्य से सार्वजनिक क्षेत्र में से निजी क्षेत्र के संयुक्त से सार्वजनिक के उद्योग भी स्थापित किए गए हैं । हलाकि इन उद्योगों पर सरकार का अधिक वर्चस्व रहता है ।

**(4) सहकारी क्षेत्र के उद्योग :** देश में बहुत से व्यक्ति आर्थिक दृष्टि से सक्षम नहीं होते । वे व्यक्तिगत रूप से उद्योग शुरू करने की स्थिति में नहीं होते । ऐसे लोग साथ मिलकर मंडली या संघ बनाकर उत्पादन या बिक्री की प्रक्रिया अपनाते हैं । एक-दूसरे के सहयोग से शुरू हुए ऐसे उद्योग या इकाइयाँ सहकारी क्षेत्र के उद्योग हैं । उदा. स्वरूप दूध की डेरी, चीनी के कारखाने वगैरह उद्योग सहकारी स्तर पर चलते हैं ।

**आर्थिक प्रवृत्तियों का संगठित और असंगठित क्षेत्रों में विभाजन :**

| कांता | कमला |
| --- | --- |
| कांता एक कार्यालय में काम करती है । वह सुबह 9.30 से सायंकाल 5.30 तक कार्यालय में रहती है । उसे नियमित रूप से महीने के अंत में वेतन मिलता है । वेतन के अतिरिक्त उसे सरकार की भविष्यनिधि का लाभ प्राप्त होता है । उसे मेडिकल खर्च और भत्ता भी मिलता है । कांता रविवार को कार्यालय नहीं जाती । फिर भी उसे उस दिन का भी वेतन मिलता है । उसे नौकरी के लिए नियुक्ति पत्र भी दिया गया था । जिसमें नौकरी संबंधी नियमों और शर्तों का भी उल्लेख था । इस तरह से कांता संगठित क्षेत्र में कार्य करती है । | कमल कांता की पड़ोसी है । वह नजदीक की किराने की दुकान में मजदूरी करती है । वह सुबह 8.00 बजे दुकान पर जाती है और रात्रि 9.00 बजे तक काम करती है । उसे मजदूरी के अतिरिक्त अन्य कोई भत्ता नहीं मिलता । जिस दिन वह काम नहीं करती उस दिन की उसकी मजदूरी नहीं मिलती । उसे कोई भी छुट्टी वेतन सहित नहीं मिलती । उसे कोई नियुक्ति पत्र भी नहीं मिला है । उसे उसका मालिक नौकरी पर से कभी भी निकल जाने को कह सकता है । इस तरह से कमला असंगठित क्षेत्र में काम करती है । |

**विचार कीजिए**

- आप कांता और कमला की रोजगार की परिस्थिति में कोई अंतर देख सकते हैं ? चर्चा करें ।

**इतना जानिए**

सरकार ने असंगठित क्षेत्र के उद्योगों के लिए विविध कानून बनाया है । फिर भी असंगठित क्षेत्र के मालिकों द्वारा उसका व्यावहारिक उपयोग नहीं होता ।

## आर्थिक उदारीकरण

विश्व के साथ चलने, विश्व प्रवाह में मिलने और भारत देश को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए भारत सरकार ने अपनी आर्थिक नीतियों में कुछ परिवर्तन किए । उसके अनुसार सन् 1991 से उदार नीति अपनाई । इस नीति के अनुसार उद्योग, व्यापार और धंधे से संबंधित कुछ नियंत्रण दूर किए, कर घटाए, वस्तुओं के आयात-निर्यात में भी कुछ छूट घोषित की । नए उद्योग स्थापित करने के लिए मजदूरी की प्रकिया सरल बनाई । उसके कारण भारत विश्व के अन्य देशों के साथ व्यापार-धंधे और उद्योग के मामले में एक बन रहा है तथा भारत में धंधा-रोजगार बढ़ा है ।

## निजीकरण

स्वतंत्रता के पश्चात् केन्द्र सरकार ने सार्वजनिक साहस शुरू किए गए । समय बीतने पर ये सार्वजनिक साहसों के उद्योग हानि उठाते गए और उनकी कुछ इकाइयाँ बीमार पड़ने से बंद हुईं । सरकारी अर्थव्यवस्था पर उसका प्रभाव पड़ा । मजदूर संगठित हुए परंतु उद्योग घाटे में आने लगे । दूसरी तरफ विश्व में गुणवत्ता का बोलबाला होने लगा । निजी इकाइयाँ मुनाफा करने लगी । इन सभी परिस्थितियों ने निजीकरण को प्रोत्साहन दिया । सरकार सार्वजनिक साहसों में से खिसकने लगी और 'निजीकरण' की तरफ मुड़ी । संयुक्त साहस निजीकरण की प्रक्रिया का एक भाग है ।

## वैश्वीकरण

उदारीकरण और निजीकरण ने वैश्वीकरण को जन्म दिया । वैश्वीकरण यानी कि समग्र विश्व का एक बनना अथवा एक-दूसरे के नजदीक आना । वैश्वीकरण से विश्व का कोई भी देश विश्व के किसी भी अन्य देश के साथ सरलता से व्यापार-धंधा कर सकता है । उससे एक-दूसरे देशों के बाजारों और उत्पादनों में एकीकरण हो रहा है । एक-दूसरे देशों के बीच के पारस्परिक संबंध और तीव्र एकीकरण की यह प्रक्रिया ही 'वैश्वीकरण' है । वैश्वीकरण की मदद करनेवाला और उत्तेजित करनेवाली यदि कोई प्रक्रिया है तो वह है सूचना प्राद्योगिकी में आई हुई अभूतपूर्व क्रांति, जिसे आपने इन्फर्मेशन टेक्नोलॉजी के रूप में पहचानते हैं । 'विश्व व्यापार संगठन' (W.T.O.) इस दिशा में कार्य कर रहा है, जिसकी स्थापना ई.स. 1995 में हुई ।

## वैश्वीकरण का प्रभाव

- सूचना टेक्नोलॉजी के कारण सेवाक्षेत्र में रोजगार के नए अवसर खड़े हुए ।
- फोन, फेक्स, मोबाइल, इमेल, इ-मेइल, वीडियो कॉन्फरन्स जैसे साधनों से जानकारी कम खर्च और तेजी से प्राप्त होने से देश के आर्थिक विकास की गति बढ़ी ।
- बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ यजमान देशों की कंपनियों के साथ संयुक्त उद्यम लगाने लगी, जिनका लाभ यजमान देशों को हुआ । जेसे कि भारत में विदेशी फोर्ड कंपनी कार के यंत्रों का उत्पादन करती है । वह केवल भारत के लिए ही कारों का निर्माण नहीं करती अपितु विश्व के अन्य देशों के लिए भी कार के पुर्जों का निर्माण करती है । जिसका लाभ यजमान देश भारत को मिलता है । इसी तरह भारत की बड़ी कंपनियाँ भी विश्वस्तरीय बाजारों में अपना स्थान जमाया है । जैसे कि टाटा मोटर्स, इन्फोसिस (आई. टी.), एशियन पेन्टस, पारले वगैरह कंपनियाँ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना विक्रय करती हैं ।
- तीव्र स्पर्धा से माल-सामान की गुणवत्ता बनाए रखते हुए कम मूल्य पर अधिक अच्छा माल-सामान ग्राहकों को मिलने लगा । जैसे कि भारत के बाजार में चीन ने खिलौने रखा है । कम कीमत और नवीन डिजाइनों के कारण चीनी खिलौने भारतीय बाजारों में अधिक लोकप्रिय हैं । एक ही वर्ष में 70 % से 80 % दुकानों में भारतीय खिलौने का स्थान चीनी खिलौनों ले लिया है । अब भारत के बाजारों में पहले की तुलना में सस्ता है । यह क्या हो रहा है ? विश्व व्यापार के कारण चीनी खिलौने भारत के बाजारों में आए । भारत और चीनी खिलौने की प्रतिस्पर्धा में चीनी खिलौने अधिक अच्छे साबित हुए हैं । चीनी खिलौने के कारण भारतीय खिलौनों के व्यापारियों और उद्योपतियों को नुकसान होता है । इस तरह से बहुत बार विश्व व्यापार के कारण लघु उद्योगों को नुकसान होता है ।

**विचार कीजिए**

- भारत के खिलौनों के व्यापारियों और उद्योगपतियों ने अपने उत्पादन के अधिक बिक्री के लिए क्या-क्या करने चाहिए ? चर्चा करें ।
- भारत में कौन-कौन सी विदेशी कंपनियाँ संयुक्त उद्योग लगाने लगी हैं ? उनसे भारत के किस क्षेत्र पर प्रभाव पड़ा ? उदाहरण सहित समझाएँ ।

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें :**

(1) प्राथमिक क्षेत्र में किन-किन क्षेत्रों का समावेश होता है ?

(2) सेवाक्षेत्र में किन-किन सेवाओं का समावेश होता है ?

(3) सहकारी क्षेत्र के उदाहरण दीजिए ।

(4) कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए सरकार ने कौन-कौन से कदम उठाए हैं ?

(5) भारत में 'उदारीकरण' की नीति किस वर्ष से शुरू हुई ?

(6) 'वैश्वीकरण' से क्या समझते हैं ?

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के मुद्दानुसार उत्तर दीजिए :**

(1) सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र के बीच के अंतर बताइए ।

(2) सरकार को 'निजीकरण' की तरफ क्यों मुड़ना पड़ा ?

(3) 'वैश्वीकरण' के प्रभाव बताइए ।

**3. सही जोड़े बनाइए :**

| **कृषिक्षेत्र की समस्याएँ** | **कुछ संभवित उपाय** |
|---|---|
| (1) असिंचित जमीन | (1) कृषि आधारित उद्योगों की स्थापना |
| (2) फसल का कम मुनाफा | (2) सहकारी खरीद-बिक्री समिति |
| (3) कर्ज का बोझ | (3) सरकार द्वारा खाद्यानों की खरीदी |
| (4) मंदी के समय में रोजगार का अभाव | (4) सरकार द्वारा नहरों का निर्माण |
| (5) कटाई के बाद स्थानीय किसानों को अपना अनाज बेचने की समस्या । | (5) बैंकों द्वारा कम ब्याज पर लोन देने की सुविधा प्रदान करना । |

**4. निम्नलिखित उदाहरणों का संगठित और असंगठित क्षेत्रों में वर्गीकरण कीजिए :**

(1) विद्यालय में पढ़ाने वाला शिक्षक

(2) अपने खेत की सिंचाई करने वाला किसान ।

(3) दवाखाने में मरीज तथा इलाज करने वाला डॉक्टर

(4) एक कंट्राक्टर के यहाँ दैनिक काम करने वाला एक मजदूर

(5) एक कारखाने में काम करने वाला एक मजदूर

**5.** आपके घर के नजदीक के किसी औद्योगिक इकाई/कुटीर उद्योग/नमक के अगर/सहकारी डेरी में से कोई भी एक चुनकर उसकी मुलाकात लेकर प्रोजेक्ट तैयार करें ।

**6. नीचे की प्रश्नावली का उत्तर अनुभवी व्यक्तियों से पता करके लिखिए :**

(1) ग्रामसेवक की मदद से गाँव में कृषि से संबंधित कौन-कौन सी योजनाएँ चलती हैं, उन्हें जानें ।

(2) ग्रामीण बैंक में किसान खाता खुलाते हैं । किसी भी दो खातेदार किसानों की मुलाकात लेकर उन्होंने ग्रामीण बैंक द्वारा कौन-कौन से लाभ लिए हैं, उन्हें जानें ।

(3) रेडियो और दूरदर्शन पर कृषि से संबंधित कार्यक्रमों में से किसानों को क्या लाभ होते हैं, गाँव के किन्हीं दो किसानों से जानें ।

(4) किसान हेल्पलाइन नंबर 1551 है । उससे किसानों को कौन-कौन से लाभ मिलते हैं ? उसके बारे में जानें ।

•

# 10

## महात्मा के मार्ग पर - 2

### सविनय अवज्ञा आन्दोलन ( 1930 )

पूर्ण स्वराज्य ऐसे ही मिलनेवाला न था, इसके लिए लड़ाई में उतरना पड़ेगा । अहमदाबाद में आयोजित कांग्रेस कार्यकारिणी समिति के पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति के लिए सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू करने का अधिकार गांधीजी को दिया । इस लड़ाई में सरकार के अयोग्य कानून को विनयपूर्वक भंग करना था ।

### दांडी यात्रा ( 1930 )

ई. स. 1930 में गांधीजी ने घोषित किया कि नमक कानून को भंग करने के लिए वे यात्रा करेंगे । उस समय नमक के उत्पादन और बिक्री पर सरकार का एकाधिकार था । महात्मा गाँधी और अन्य राष्ट्रवादियों का मानना था कि नमक पर कर लगाना पाप है, क्योंकि यह हमारे जीवन का आवश्यक भाग है ।

10.1 नमक कानून का भंग

गांधीजी ने नमक का अन्यायी कानून तोड़ने के लिए अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से अपने 78 साथियों के साथ 12 मार्च, 1930 के दिन सुबह दांडीयात्रा की शुरुआत की । यात्रा के मार्ग के गाँवों में सभाएँ होती । गांधी लोगों को नमक कानून का सविनय भंग समझाकर नई रीति से स्वराज्य आन्दोलन और सत्याग्रह का महत्व समझाते । 5 अप्रैल 1930 के दिन वे दांडी पहुँचे । दूसरे दिन सुबह 6 अप्रैल के दिन समुद्र किनारे बिखरे हुए नमक में से मुट्ठीभर नमक लेकर कानून को भंग किया । इस आंदोलन में किसान, आदिवासी और स्त्रियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया । सरकार शांतिपूर्ण सत्याग्रहियों पर दमन के कोड़े बरसाने लगी । हजारों सत्याग्रहियों को गिरफ्तार किया गया ।

**प्रवृत्ति**

1. दिए गए नक्शे में दांडीयात्रा के मार्ग पर स्थित स्थानों के नाम लिखें ।
2. अहमदाबाद से दांडीयात्रा तक की दूरी कितनी होगी ? पैमाने के आधार पर माप कर लिखें ।
3. दांडीयात्रा किन-किन जिलों से होकर गुजरी थी ?
4. वर्तमान समय में गुजरात में नमक उद्योग के केन्द्र कौन-कौन से हैं ?
5. गाँधीजी और उनके साथी कितने दिन में दांडी पहुँचे ?
6. प्रतिदिन उन्होंने कितनी दूरी तय की होगी ।

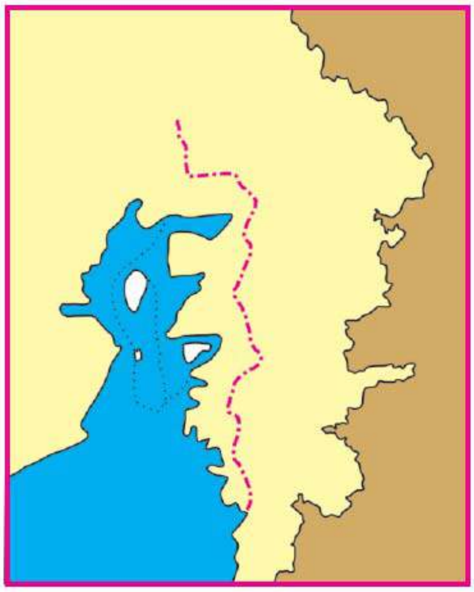

10.2 दांडीयात्रा का मार्ग

**इतना जानिए**

धरासणा गाँव नमक के उत्पादन का बड़ा केन्द्र था । बाद में वहाँ सत्याग्रह करने की गांधीजी ने घोषणा की । गांधीजी और अब्बास तैयबजी की गिरफ्तारी होने से धरासणा सत्याग्रह का नेतृत्व सरोजिनी नायडू ने किया । अंग्रेज सरकार ने इस सत्याग्रह रोकने के लिए क्रूरतापूर्ण कदम उठाए । 300 सत्याग्रही घायल हुए और दो मृत्यु को प्राप्त हुए । फिर भी सत्याग्रही जरा भी पीछे न हटे ।

### गोलमेज सम्मेलन

भारत को किस प्रकार का संविधान देना तथा सुधार करना इसकी चर्चा करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने गोलमेज सम्मेलन बुलाया । पहला सम्मेलन लंदन में आयोजित किया गया । उसमें कांग्रेस की अनुस्थिति के कारण वह असफल रहा । 1931 में लंदन में दूसरा सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि के रूप में गांधीजी उपस्थित हुए अलग-अलग कौम के प्रतिनिधियों ने संविधान की चर्चा के समय अपने कौम के लिए अलग मतदाता मंडल की माँग की । इससे गांधीजी निराश हुए, क्योंकि उससे तो भारत अनेक टुकड़ों में विभाजित हो जाता था । अलग-अलग कौम के प्रतिनिधियों के बीच समाधान न होने से सम्मेलन असफल रहा ।

10.3 महात्मा गांधी और सरोजनी नायडू : पेरिस, 1931

## 1935 का भारत सरकार का कानून

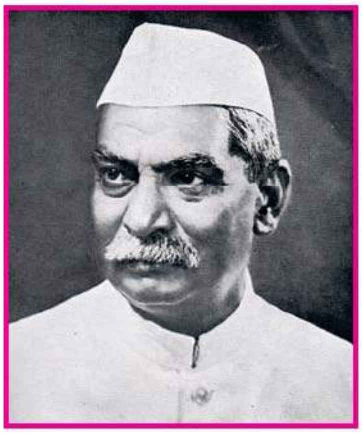
10.4 डॉ. राजेन्द्रप्रसाद

1935 के भारत सरकार के कानून के द्वारा भारत में संवैधानिक सुधार का दूसरा दौर शुरू हुआ । भारत की राष्ट्रीय अपेक्षाओं की अपेक्षा से वह बहुत ही कम था ।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के मतानुसार 1935 के समवायतंत्र के कानून में सच्चा प्रांतीय स्वराज्य जनता या मंत्रियों को नहीं, परंतु गवर्नरों को दिया गया था ।

इस कानून के अंतर्गत चुनाव हुए । गांधीजी ने बताया कि 1935 के कानून के अनुसार दी गई विशेष सत्ताएँ और अधिकार गवर्नर उपयोग न करे और मंत्रिमंडल की सलाह के अनुसार व्यवहार करने का वचन दे तो कांग्रेस मंत्रिमंडल की रचना करेंगे । इस संबंध में वाइसराय और भारतीय वजीर ने स्पष्टता की जिससे कांग्रेस और मुस्लिम लीग ने मंत्रिमंडल की रचना की । प्रांतीय स्वराज्य का यह प्रयोग लगभग सवा दो वर्ष चला । 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध शुरू हुआ तब भारत से पूछे बिना ही ब्रिटिश सरकार ने इस युद्ध में भारत को शामिल कर दिया । परिणामस्वरूप मंत्रिमंडलों ने त्यागपत्र दिया ।

10.5 मौलाना आजाद और गांधीजी सेवाग्राम में, 1942

**मौलाना आजाद का जन्म मक्का में हुआ था । बहुत-सी भाषाओं के जानकार आजाद इस्लाम के विद्वान और सभी धर्मों की एकता के हिमायती थे । गांधीवादी आंदोलन में हमेशा सक्रिय रहते थे ।**

## पाकिस्तान की माँग ( 1940 )

मोहम्मद इकबाल और चौधरी रहमत अली जैसे मुस्लिम नेता प्रचार करते थे कि हिंदू और मुस्लिम दो अलग प्रकार की राष्ट्रीयता रखते हैं । इसलिए इन्हें दो अलग राष्ट्रों में विभाजित किया जाए । मार्च, 1940 में लाहौर में आयोजित मुस्लिम लीग के अधिवेशन में मुस्लिमों की बहुमति वाले प्रदेशों के बने हुए स्वतंत्र राष्ट्र पाकिस्तान की माँग का प्रस्ताव पारित किया गया उसके बाद लीग ने पाकिस्तान की रचना को अपना मुख्य ध्येय बनाया ।

## व्यक्तिगत सत्याग्रह ( 1940 )

द्वितीय विश्वयुद्ध जारी था, इसलिए सरकार को अधिक उलहन में न डालने के लिए गांधीजी ने सामूहिक सत्याग्रह के बदले व्यक्तिगत सत्याग्रह का आरंभ किया । प्रथम व्यक्तिगत सत्याग्रही के रूप में गांधीजी ने विनोबा भावे को चुना ।

1940 के दिन वर्धा के नजदीक पवनार गाँव में विनोबाजी ने युद्धविरोधी भाषण देकर सत्याग्रह की शुरुआत की । पाँचवें दिन सरकार द्वारा उन्हें गिरफ्तार करके उन्हें तीन महीने के सजा दी गई ।

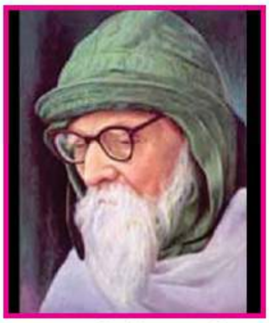

**10.6 विनोबा भावे**

**विनोबा पहले से ही रचनात्मक कार्य करते थे ।सत्याग्रही के उच्च आदर्शों के लिए गांधीजी को उनमें श्रद्धा थी ।**

### इतना जानिए

#### क्रिप्स मिशन, 1942

विनोबा पहले से ही रचनात्मक कार्य करते थे । सत्याग्रही के उच्च को जल्दी स्वशासन देने और नए भारतीय संघ की रचना करनी थी । परंतु भारत को स्वायत्तता कब दी जाएगी इसका कोई उल्लेख नहीं था । साथ ही अलग पाकिस्तान की बात को भी इस सिफारिश में समर्थन था । इससे कांग्रेस ने उसका स्पष्ट रूप से विरोध किया । परिणामस्वरूप चर्चिल ने इस दरखास्त को वापस ले लिया ।

## भारत छोड़ो आन्दोलन, 1942

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद महात्मा गांधी ने अंग्रेजों के विरुद्ध आन्दोलन का एक नया अध्याय शुरू किया । उन्होंने अंग्रेजों को चेतावनी दी कि वे तत्काल भारत छोड़ दें । गांधीजी ने भारतीय जनता को आदेश दिया के वे ''करेंगे या मरेंगे'' के सिद्धांत पर अंग्रेजों के विरुद्ध अहिंसक संघर्ष करें । मुंबई में आयोजित की महासमिति की बैठक में 8 अगस्त, 1942 की रात 'हिंद छोड़ो' नाम से जाना जाने वाला ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित किया गया ।

**10.7 भारत छोड़ो आंदोलन**

गांधीजी और अन्य नेताओं को तुरंत ही 9 अगस्त को गिरफ्तार किया गया । उससे आन्दोलन अधिक उग्र और व्यापक बना । समग्र भारत में सभाएँ, जुलूस और प्रदर्शन सामान्य बना । किसान और युवक इस आन्दोलन में बड़ी संख्या में जुड़े । देशभर में सरकारी मकानों और तार जैसे टेलीफोन सचार के माध्यमों पर हमले हुए। सरकार ने सामूहिक गिरफ्तारी, जब्ती और जेल जैसी दमनकारी सभी तरीके अपनाए गए । लगभग एक

लाख से अधिक लोगों को जेल में डाला । 1000 लोग पुलिस की गोलीबारी से मारे गए । परंतु अंत में इस आन्दोलन से सरकार को विश्वास हो गया कि अब अधिक समय वे भारत की जनता पर शासन नहीं कर सकेंगे ।

### कैबिनेट मिशन योजना ( 1946 )

ब्रिटेन के नव निर्वाचित प्रधानमंत्री मिस्टर एटली ने भारत को संपूर्ण स्वशासन देने की घोषणा की । उसके तत्वावधान में ब्रिटिश मंत्रिमंडल के तीन नेताओं का प्रतिनिधिमंडल भारत आया । उसके द्वारा प्रस्तुत की गई योजना कैबिनेट मिशन योजना कहलाती है । उसने भारत के अग्रिम पंक्ति के नेताओं के साथ बैठक आयोजित करके निम्नानुसार प्रस्ताव प्रस्तुत किया :

(1) अखिल भारतीय समवायतंत्र की स्थापना करना ।

(2) समग्र भारत के प्रांतों को कुल तीन समूहों में बाँटना ।

(3) भारत को अपना नया और मौलिक संविधान बनाने की छूट देना ।

(4) संविधान निर्माण होने तक मध्यस्थ सरकार की रचना करना ।

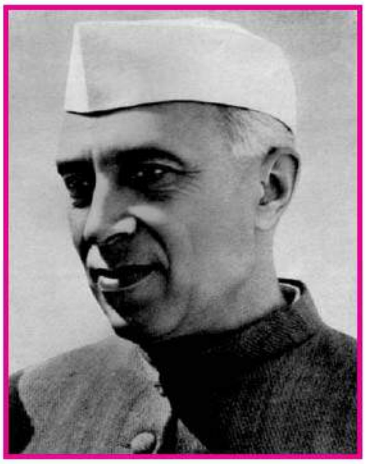

10.8 जवाहरलाल नेहरू

इसके पश्चात आयोजित चुनाओं में कांग्रेस ने अच्छा प्रदर्शन करके जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में मध्यस्थ सरकार की रचना की । अपने पक्ष में मिले कमजोर प्रतिभाव से अकुलाकर मुस्लिम लीग ने 'सीधी कार्रवाई दिवस' (16 अगस्त, 1946) मनाया । उसके कारण देशभर में कौमी तंगदिली फैली और सार्वजनिक रूप में कौमी दंगे भड़क उठे जो कि अलग पाकिस्तान की रचना तक मुस्लिम लीग ने छोटे-बड़े विद्रोह के साथ इस सरकार में स्थान बनाए रखा ।

### प्रधानमंत्री एटली की भारत छोड़ने की घोषणा ( फरवरी 1947 )

नई मध्यस्थ सरकार में लीग ने जो व्यवहार अपनाया उससे कौमी एकता आहत हुई । ऐसे संकटकालीन स्थिति के समय ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने 20 फरवरी, 1947 के दिन ब्रिटिश पार्लियामेंट में घोषणा की कि ब्रिटिश सरकार को देर से देर जून, 1948 तक में उत्तरदायी भारतीयों के हाथ में समग्र राज्य प्रशासन सौंपकर छोड़ कर चले जाने का विचार है । इस घोषणा के कारण महात्मा गांधी सहित लगभग सभी भारतीय नेताओं और लोगों का उत्साह बढ़ने लगा । गांधीजी ने तो इस घोषणा को अंग्रेजों का सबसे उत्तम कृत्य कहकर प्रशंसा की ।

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

(1) गांधीजी ने दांडीकूच क्यों की ?

(2) द्वितीय गोलमेज सम्मेलन क्यों असफल रहा ?

(3) कैबिनेट मिशन में कौन-कौन से प्रस्ताव थे ?

**2. संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :**

(1) भारत छोड़ो आन्दोलन

(2) दांडीयात्रा

**3. उचित विकल्प चुनकर उस पर O कीजिए :**

(1) सविनय अवज्ञा आन्दोलन के संघर्ष के दौरान कौन-सी घटना घटी ?

(अ) विद्यापीठ की स्थापना (ब) मुंबई

(क) जलियाँवाला बाग का हत्याकांड (ड) बारडोली सत्याग्रह

(2) गोलमेज सम्मेलन किस स्थान पर आयोजित किया गया था ?

(अ) दिल्ली (ब) मुंबई

(क) लंदन (ड) लाहौर

(3) प्रथम व्यक्तिगत सत्याग्रही के रूप में गाँधीजी ने किसे चुना ?

(अ) विनोबा भावे (ब) सरदार पटेल

(क) जवाहरलाल नेहरू (ड) मौलाना आजाद

(4) 'करेंगे या मरेंगे' सूत्र गांधीजी ने किस आंदोलन में दिया ?

(अ) असहयोग (ब) दांडीकूच

(क) चंपारन (ड) भारत छोड़ो

**4. प्रोजेक्ट :** विद्यालय की लाइब्रेरी में से गांधीजी से संबंधित पुस्तकें जैसे कि 'सत्य के प्रयोग', 'गांधी गंगा', 'महादेवभाई की डायरी' आदि प्राप्त करके गांधीजी के बारे में दो-तीन पृष्ठ का विवरण तैयार करें ।

# 11

# संयुक्त राष्ट्र ( यू एन )

11.1 संयुक्त राष्ट्र का ध्वज

*शांति-गीत गाये जा, क्रांति गीत गाये जा*
*कह रहा तिरंगा अब, ऊँचा सर उठाये जा*
*रंग-धर्म-जाति भेद, रहे हैं जग में खेद*
*बंधनों को तोड़के, एकता को लाये जा*
*युद्ध की घटायें घोर, छा रही हैं चारों ओर*
*शांति की हवाएँ बन, बदलियाँ हटाये जा*
*विश्व का भविष्य आज, नौजवान तेरे हाथ*
*प्रेम के प्रकाश को, विश्व में फैलाये जा*

**विचार कीजिए**

(1) विश्व में शांति की आवश्यकता क्यों है ? (2) युद्ध क्यों रोकना चाहिए ?

### विश्व संस्था की आवश्यकता किसलिए ?

प्रथम विश्वयुद्ध ने विश्व के अधिकांश भाग में विनाश का तांडव किया था । विश्व के लोग शांति चाहते थे । विश्व के इतिहास ने साबित कर दिया कि समग्र विश्व में शांति स्थापित करने के लिए एक केन्द्रीय संस्था की आवश्यकता है । जिस तरह देश के अलग-अलग राज्यों को अंकुश में रखने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर विविध संस्था की जरूरत है उसी तरह दुनिया के देशों को काबू में रखने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी विश्व संस्था की भी आवश्यकता है ताकि जो दुनिया के देशों को शांति, एकता और सहयोग के मार्ग पर मोड़े ।

अमेरिका के राष्ट्रपति ने विश्वसंस्था का विचार प्रस्तुत किया । परिणामस्वरूप ई.स. 1920 में युद्ध को रोकने वाले और शांति के चाहक राष्ट्रसंघ (लीग ओफ नेशन्स) संस्था की स्थापना हुई । विश्व स्तर पर यह संस्था स्थापित करने का यह प्रथम प्रयास था । थोड़े समय तक इस संस्था ने दो देशों के बीच की तकरारी मुद्दों को हल करके युद्ध होने से रोका । परंतु कमजोर देशों को शक्तिशाली देशों के आक्रमण से बचाने के महत्त्वपूर्ण कार्यों में यह संस्था असफल रही और द्वितीय विश्वयुद्ध फूट पड़ा ।

द्वितीय विश्वयुद्ध ने प्रथम विश्वयुद्ध से भी अधिक विनाश किया । परमाणुबम जैसे विनाशक शस्त्रों का उपयोग करके बड़े समुदाय में मानव संहार किया गया । दुनिया के सभी देशों को कम या अधिक अंश में इसे सहन करना पड़ा । विश्व में हाहाकार मच गया ।

**विचार कीजिए**

प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध किन वर्षों के दौरान हुए ? किन-किनके बीच हुए ? उनके क्या परिणाम हुए ?

**11.2. संयुक्त राष्ट्र का मुख्यालय, न्यूयार्क**

## संयुक्त राष्ट्रसंघ ( यूनो ) का उदय

विश्व को युद्ध के भय से मुक्त करने के लिए राजनीतिज्ञों ने कमर कसी । अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति रूजवेल्ट के प्रयासों से एक विश्व संस्था की योजना बनाई गई । परिणाम स्वरूप 24 अक्टूबर, 1945 को विश्वशांति और विश्व की जनता के कल्याण के उद्देश्य से 'संयुक्त राष्ट्रसंघ' की स्थापना हुई । उसका अंग्रेजी नाम 'युनो' (UNO) (यूनाइटेड नेशन्स ऑर्गेनाइजेशन) था । अब यह संस्था 'युनाइटेड नेशन्स' (यू एन) के रूप में पहचानी जाती है ।

संयुक्त राष्ट्र (यू एन) की स्थापना हुई तब 51 सदस्य राष्ट्र थे । आज (ई. स. 2011) संयुक्त राष्ट्र की सदस्यसंख्या 193 तक पहुँच गई है ।

**इतना जानिए**

- यू एन के महामंत्री का कार्यकाल 5 वर्ष होता है ।
- अफ्रीका में स्थित दक्षिण सूडान यू एन का 193वाँ सदस्य बना ।
- यू एन की प्रशासकीय भाषाओं में अरेबिक, चाईनीज, अंग्रेजी, फ्रेंच, रशियन और स्पेनिश भाषाओं का समावेश है ।

### यू एन के उद्देश्य :

संयुक्त राष्ट्र (यू एन) की स्थापना का उद्देश्य उसके संविधान में स्पष्ट किया गया है ।

(1) अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखना ।

(2) सदस्य देशों के बीच मैत्री भावना विकसित करना ।

(3) अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय समस्याओं को हल करना ।

(4) सभी लोगों के मानवीय अधिकारों और मूलभूत स्वतंत्रता के प्रति सम्मान की भावना उत्पन्न करने के लिए सहयोग स्थापित करना ।

ये उद्देश्य यू एन के अलग-अलग अंगों द्वारा सिद्ध किए जाते हैं । उसके कुल छः अंग हैं । अब हम उनका संक्षेप में परिचय प्राप्त करें ।

**विचार कीजिए**

(1) मनुष्य की मौलिक आवश्यकताएँ कौन-कौन सी हैं ? (2) वर्तमान की विकट समस्याएँ कौन-कौन सी हैं ? (3) मानव कुल को बचाने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है ? (4) आपके मतानुसार युनो जैसी संस्था की आवश्यकता है ? किसलिए ? (5) यूनो दिवस किस दिन मनाया जाता है ?

### संयुक्त राष्ट्र के अंग

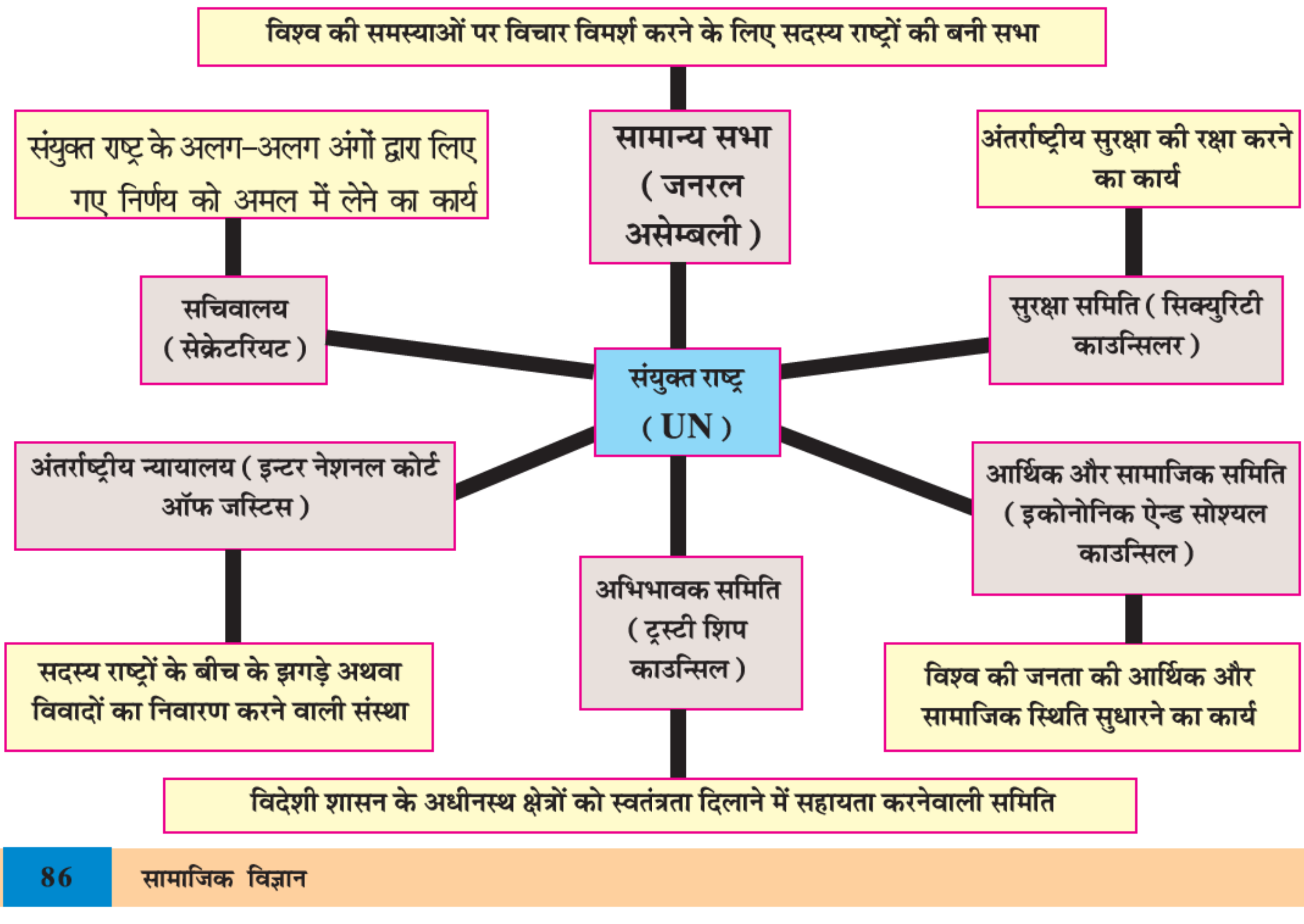

## सामान्य सभा ( General Assembly )

11.3 सामान्य सभा का सभाखंड

सामान्य सभा यूनो का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है । उसे 'विश्व की पार्लियामेंट' कह सकते हैं । यूनो में जुड़े राष्ट्रों के प्रतिनिधि उसमें बैठते हैं । प्रत्येक सदस्य राष्ट्र अपने अधिक से अधिक पाँच सदस्य भेज सकता है, परंतु मतदान के समय एक राष्ट्र एक ही मत दे सकता है । सामान्य सभा की बैठक वर्ष में एक बार होती है । उसके सदस्य प्रत्येक वर्ष अध्यक्ष और उपाध्यक्ष का चुनाव करते हैं । ई.स. 1953-54 में भारत की प्रतिनिधि विजयालक्ष्मी पंडित को इस सभा का अध्यक्ष चुना गया था । इस सभा ने 10 दिसंबर, 1948 को मानव अधिकार के संबंध में वैश्विक घोषणा मंजूर किया ।

11.4 श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित

सामान्य सभा यूएन के सीमा में रहकर विश्व के किसी भी प्रश्न पर विचार-विमर्श कर सकती है । उस पर वे सलाह-मशविरा दे सकती है । विश्व में शांति और सुरक्षा को खतरे में डालने जैसी परिस्थिति खड़ी हो तो तुरंत वह यूएन की समिति को ध्यान दिलाती है । यूएन में नये सदस्यों को प्रवेश देने की इस सभा को सत्ता है ।

**विचार कीजिए**

- यू एन की सामान्य सभा के अध्यक्ष के रूप में भारत में से किसका चयन किया गया था ।
- 'मानव अधिकार दिवस' कब मनाया जाता है ? क्यों ?
- 'मानव अधिकार दिवस' क्या है ? क्यों आवश्यक है ?

## सुरक्षा समिति ( Security Council )

यूनो का यह सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है । उसमें 15 सदस्य हैं । उनमें यू.एस.ए., ब्रिटन, फ्रांस, रुस और चीन ये पाँच सदस्यों स्थायी हैं । बाकी के अस्थायी 10 सदस्यों को सामान्य सभा दो वर्ष के लिए चुनती है । विश्व में शांति और सुरक्षा बनाए रखने के लिए इस समिति को विशाल सत्ताएँ दी गई हैं । राष्ट्रों के बीच के झगड़ों का उन्हें शांतिमय साधनों द्वारा हल करने का प्रयत्न करना होता है । संयुक्त राष्ट्र के सचिवालय का प्रधान 'महामंत्री' के रूप में जाना जाता है । उसकी नियुक्ति सुरक्षा समिति की सिफारिश से सामान्य सभा करती है । वह संयुक्त राष्ट्र के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी के रूप में कार्य करता है ।

**विचार कीजिए**

(1) शांतिमय साधनों द्वारा हल लाने के लिए सुरक्षा समिति क्या करती है ?
(2) यदि कोई झगड़ालू राष्ट्र इस समिति के आदेश का अनादर करे तो ऐसी परिस्थिति में यह समिति क्या कर सकती है ?
(3) संयुक्त राष्ट्र के महामंत्री का पद अत्यंत उत्तरदायित्व वाला है ? क्यों ?

## वीटो यानी क्या ?

सुरक्षा समिति के किसी भी निर्णय के लिए पाँच स्थायी सदस्यों की स्वीकृति (मंजूरी हेतु) मत लेना जरूरी है । पाँच में से यदि एक भी सदस्य उसके 'विरुद्ध मतदान' करे तो निर्णय नहीं लिया जा सकता अधिकार प्राप्त पाँच स्थायी सदस्यों के निषेध करने या निर्णय अस्वीकार करने के अधिकार को 'निषेधाधिकार'' या वीटो पावर कहते हैं ।

**सोचिए**

(1) क्या आप यह मानते हैं कि सुरक्षा समिति के स्थायी सदस्यों की संख्या बढ़ानी चाहिए ? क्यों ?
(2) संयुक्त राष्ट्र के महामंत्री का पद अत्यंत जवाबदारी वाला है ? किसलिए ?

**प्रवृत्ति**

- लाइब्रेरी में जाकर संदर्भपुस्तकों में से यूएन के अन्य अंगों के विषय में विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त करें ।
- समाचारपत्रों में आने वाले यूएन से संबंधित समाचारों की कटिंग संग्रह करें ।

## संयुक्त राष्ट्र की विशिष्ट संस्थाएँ :

विश्व के लोगों का जीवनस्तर ऊँचा आए, उन्हें रोजगारी के अवसर प्राप्त हो तथा लोगों का सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक विकास के लिए प्रयास करना संयुक्त राष्ट्र का महत्त्वपूर्ण कार्य है । इन ध्येयों को सिद्ध करने के लिए यू एन के नेतृत्व में विशिष्ट क्षेत्रों में कार्य करने वाली विशेष संस्थाओं की स्थापना की गई है ।

| यू एन की विशिष्ट संस्था का नाम | संक्षिप्त नाम | संस्था का मुख्यालय | संस्था के मुख्य कार्य |
|---|---|---|---|
| विश्व स्वास्थ्य संगठन | WHO ('हू') | जिनीवा | दुनिया के लोगों का शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करने के लिए प्रयत्न करना । |
| युनेस्को | UNESCO (युनेस्को) | पेरिस | दुनिया के विविध देशों के बीच शैक्षणिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में परस्पर सहयोग स्थापित करना । |
| अंतर्राष्ट्रीय मजदूर संगठन | ILO (आई.एल.ओ.) | जिनीवा | मालिकों द्वारा मजदूरों का शोषण न हो, उचित वेतन प्राप्त हो उसके लिए प्रयत्न करना । |
| युनिसेफ | UNICEF (युनिसेफ) | न्यूयार्क | बालकों के जीवन की गुणवत्ता सुधरे, समुचित और पोषणयुक्त आहार प्राप्त हो, ऐसे बाल कल्याण के कार्यक्रम आयोजित करना । |
| खुराक और कृषि संगठन | FAO (फाओ) | रोम | विश्व में अन्न का उत्पादन बढ़े और कृषि का विकास हो इसके लिए प्रयास करना । |
| विश्व बैंक | IBRD (आई.बी.आर.डी.) | वाशिंग्टन डी.सी. | विश्वयुद्ध के दौरान बरबाद हुए देशों के पुन:निर्माण के लिए कर्ज, विकासशील देशों के विकास तथा महानगरों के प्रोजेक्ट के लिए कर्ज देना । |

**प्रवृत्ति**

निम्नलिखित संस्थाओं के प्रतीकों (Logo) को पहचानकर उनके विस्तृत नाम अंग्रेजी में लिखें ।

| | |
|---|---|
| (1) | (2) |
| | |

| | |
|---|---|
| (3) | (4) |
| | |
| (5) | (6) |
| | |
| (7) | (8) |
| | |

**विचार कीजिए**

(1) अपने गाँव, तहसील तथा जिले की विशिष्ट संस्थाओं के प्रतीक एकत्रित करें ।

(2) नीचे के प्रतीक किन क्षेत्रों से संबंधित हैं ?

| | | |
|---|---|---|
| | | |

**प्रवृत्ति**

(1) संयुक्त राष्ट्र की विशेष वैश्विक संस्थाओं की जानकारी पुस्तकालय में से संदर्भ पुस्तक प्राप्त करके एकत्र करें और विवरण तैयार करें । (विविध संस्थाओं के लोग, विस्तृत नाम, स्थापना का उद्देश्य, कार्यालय का मुख्यालय, कार्यों के मुद्दे लें ।)

(2) विश्वस्तर पर कार्य करने वाली अन्य अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की सूची तैयार करें ।

## संयुक्त राष्ट्र (यूएन) को भारत का सहयोग

भारत ने यूएन के द्वारा ही विदेशों के साथ के मतभेदों को सुधारने का सिद्धांत स्वीकार किया है । संयुक्त राष्ट्र की शांति स्थापित करने के कार्यों में भारत ने सक्रिय सहयोग दिया है । कोरिया के युद्ध में घायल सैनिकों की चिकित्सा करने के लिए भारत सरकार ने डॉक्टरों की टीम भेजी थी । संयुक्त राष्ट्र के नेतृत्व में अपने सैनिकों को भेजकर संकट हल करने में भारत ने सहायता की थी । सुरक्षा समिति के अतिरिक्त विशेष समितियों के सदस्य के रूप में भारत ने उपयोगी भूमिका निभायी है । भारतीयों ने महत्त्वपूर्ण पद धारण करके अपने ज्ञान और अनुभव से लाभान्वित किया है ।

भारत ने 'पंचशील' का विचार विश्व समक्ष रखा ।

**विचार कीजिए**

(1) यू एन की विविध समितियों में सेवा देने वाले भारतीयों की सूची तैयार करें ।

| सेवा देने वाले महानुभाव | समिति का नाम | किस पद पर |
|---|---|---|
| | | |
| | | |
| | | |

**प्रवृत्ति**

पंचशील के सिद्धांतों के बारे में विस्तृत जानकारी संदर्भ पुस्तक से अथवा शिक्षक के पास से प्राप्त करें और अपनी नोटबुक में लिखें ।

## मानव की उज्ज्वल आशा

विश्व के सभी राष्ट्र यूएन का साथ और सहयोग दें तो विश्वशांति का सच्चा अनुभव होगा । इसके लिए यह आवश्यक है कि सभी राष्ट्र युद्ध न करने की प्रतिज्ञा लें और संहारक शस्त्रों का उत्पादन बंद कर दें । आज यदि सभी राष्ट्र शस्त्र बढ़ाने की प्रतिस्पर्धा बंद कर दें तो अरबों रुपए की बचत होगी । इस रकम से विश्व के लोगों का कल्याण हो सकता है ।

पृथ्वी ही ऐसा ग्रह है जहाँ मनुष्य रहता है । इसलिए मानव को विश्व एकता और विश्वशांति के लिए संयुक्त राष्ट्र की सफलता की कामना है ।

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

(1) 'विश्व एकता' से क्या तात्पर्य है ? अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विश्व संस्था स्थापित करने की आवश्यकता क्यों महसूस की गई ?

(2) यूएन की स्थापना किन परिस्थितियों में हुई ?

(3) यूएन के मुख्य उद्देश कौन-कौन से हैं ?

(4) संयुक्त राष्ट्र के मुख्य अंग कौन-कौन से हैं ?

(5) यूएन की कार्यसिद्धि में भारत का क्या योगदान है ?

**2. निम्नलिखित विधानों में से सही विधानों के सामने ( √ ) का और गलत विधानों के सामने (×) का चिह्न लगाइए :**

(1) 'वीटो अधिकार' अर्थात सुरक्षा समिति के किसी भी निर्णय को नामंजूर करने का अधिकार । ☐

(2) लीग ऑफ नेशन्स की स्थापना के समय भारत स्वतंत्र राष्ट्र नहीं था । ☐

(3) युनेस्को के अध्यक्ष के रूप में भारत की विजयालक्ष्मी पंडित निर्वाचित हुई । ☐

(4) प्रति वर्ष 26 जनवरी को 'युनाइटेड नेशन्स डे' मनाया जाता है । ☐

(5) संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा समिति में पाँच राष्ट्र स्थायी सदस्य हैं । ☐

**3. निम्नलिखित के बारे में संक्षिप्त टिप्पणी लिखें :**

(1) सामान्य सभा (2) सुरक्षा समिति (3) नि:शस्त्रीकरण की आवश्यकता

**4. नीचे बताए संस्थाओं के प्रतीक ( लोगो ) खोजकर अपने नोटबुक में चिपकाकर अथवा आकृति बनाकर उनके नीचे संस्था का पूर नाम लिखिए :**

| | | | |
|---|---|---|---|
| उदा.<br>**FAO**<br>फूड एन्ड एग्रिकल्चर ऑर्गेनाइजेशन | **UNICEF** | **WHO** | **UNESCO** |

**5.** अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्य करने वाली संस्था को उसके प्रतीक के आधार पर अपने मित्र, शिक्षक तथा इन्टरनेट के माध्यम से पहचानकर उसका विस्तृत नाम उसके सामने लिखें ।

(1)

(2)

**6.** विश्व स्तर पर ऑलम्पिक खेलकूद प्रतिस्पर्धा में खेले जाने वाले खेलों की सूची बनाएँ । उनमें से खेले जाने वाले किन्हीं दो खेलों के नियमों की सूची बनाकर उनके मैदान चित्रित करें ।

# 12

## स्वतंत्रता और उसके पश्चात्....

**12.1 : 15 अगस्त 1947 के बाद का भारत**

15 अगस्त, 1947 के दिन हमारा देश स्वतंत्र हुआ । उसके साथ 1 दिन पहले अर्थात् 14 अगस्त, 1947 के दिन भारत से पाकिस्तान अलग हुआ । इस तरह से स्वतंत्रता की खुशी तो सभी भारतवासियों को थी परंतु साथ ही कुछ समस्याएँ भी भारत के सामने खड़ी हुई थीं । अखंड भारत के दो भाग होने से लगभग 80 लाख

शरणार्थी पाकिस्तान से भारत आ रहे थे । इन शरणार्थियों का पुनर्वास एक विकट समस्या थी । उस समय भारत में 562 देशी राज्य थे । उन्हें भारत संघ के साथ जोड़ना और राष्ट्र का निर्माण करना एक दूसरी बड़ी विकट समस्या थी ।

भारत का विभाजन क्यों किया गया ? विभाजन के बाद कैसी विकट समस्याएँ खड़ी हुई ? ये समग्र घटनाक्रम कैसे थे ? इन सभी मुद्दों की चर्चा अब हम इस प्रकरण में कर रहे हैं ।

## मुस्लिम लीग का प्रस्ताव

अंग्रेजों की नीति हमेशा 'फूट डालो और राज करो' की थी । इसलिए वे हमेशा ऐसा ठसाते रहे कि हिंदू और मुसलमानों का हित अलग-अलग रहने में है । दोनों की विचारधाराएँ अलग-अलग हैं । ऐसे विरोधों से प्रभावित कुछ मुस्लिम नेता ऐसा मानते थे कि स्वतंत्र भारत में मुस्लिमों का हित सुरक्षित नहीं रहेगा । उन्हें सुरक्षा नहीं मिलेगी । इसलिए अलग पाकिस्तान की रचना करना आवश्यक है, जिससे दोनों कौम स्वतंत्र विकास कर सकें । इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर मार्च 1940 में लाहौर में मुस्लिम लीग का अधिवेशन हुआ । उसमें मुस्लिमों की बहुमति वाले प्रदेशों का समावेश करके अलग राष्ट्र पाकिस्तान की माँग करने का प्रस्ताव पारित हुआ । उसके पश्चात पाकिस्तान की रचना को मुस्लिम लीग ने अपना मुख्य ध्येय बनाया ।

**12.2 खान अब्दुल गफार खाँ – उत्तर-पश्चिम सीमा प्रांत के नेता–गांधीजी के साथ शांतियात्रा में जाते हुए**

## माउन्टबेटन योजना

वाइसराय माउन्टबेटन मार्च, 1947 में भारत आया । उसका मत था कि भारत को स्वतंत्र होना हो तो विभाजन करना अनिवार्य है । यदि ऐसा नहीं किया गया तो पूरे देश में सांप्रदायिक दंगे भड़क उठेंगे । लोग परेशान होंगे । स्वतंत्रता के लिए होने वाला आंदोलन इस हद तक पहुँच गया था कि अब अंग्रेज सरकार को भारत जल्द से जल्द छोड़ देने की स्थिति पैदा हो गई थी । ऐसी परिस्थिति में भारत के कुछ यथार्थदर्शी नेताओं ने भारत के विभाजन की बात स्वीकार कर ली । उन्होंने अन्य नेताओं को यह बात स्वीकार करने के लिए आग्रह किया । तीन महीने तक लम्बी चर्चा चली । मुख्य नेताओं के बीच बैठकें हुईं और अंत में माउन्टबेटन ने भारत के दो टुकड़े करने की अंतिम योजना प्रस्तुत की, जो 'माउन्टबेटन योजना' कहलाती है । इस योजना को लागू करने के लिए 'भारत स्वतन्त्रता कानून' पारित किया गया ।

12.3 सत्ता हस्तांतरण बैठक : माउन्टबेटन, जवाहरलाल नेहरू, मुहम्मद अली जिन्ना, वी. पी. मेनन

## भारत स्वातंत्र्य कानून ( 1947 ) :

माउन्टबेटन योजना के अनुसार ब्रिटिश पार्लियामेंट ने 'भारत स्वातंत्र्य कानून' पारित किया । इस धारा की व्यवस्था के अनुसार –

- भारत को भारतीय संघ और पाकिस्तान संघ इन दो राज्यों में विभाजन करके स्वतंत्र किया जाता है ।
- प्रत्येक देश अपना संविधान बनाकर अमल में लाएगा ।
- भारत के रजवाड़े अपनी इच्छानुसार भारतीय संघ या पाकिस्तान संघ के साथ जुड़ सकते हैं और न जुड़ना चाहें तो संपूर्ण स्वतंत्र रहने की छूट दी जाती है ।

भारत स्वातंत्र्य कानून की व्यवस्था के अनुसार भारत का भारत और पाकिस्तान ऐसे दो भागों में विभाजन हुआ । भारत के प्रथम गवर्नर जनरल के रूप में माउन्टबेटन और पाकिस्तान के राष्ट्रपति के रूप में मुहम्मदअली जिन्ना का चयन किया गया । इस कानून से भारत की पराधीनता का अंत हुआ । ई.स. 1857 से स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले भारतीयों को स्वतंत्रता मिली । पाकिस्तान में सिंध, बलूचिस्तान, पश्चिम पंजाब, सीमा प्रांत और पूर्व बंगाल का समावेश हुआ । जबकि बाकी प्रदेश भारत में रहे ।

## देशभर में स्वतंत्रता का आनंद

भारत स्वतंत्र हुआ और समग्र देश में आनंद का माहौल छा गया । अनेक वर्षों की गुलामी से हम सभी स्वतंत्र हुए थे । अनेक क्रांतिकारी वीर तथा जननेताओं के बलिदान हुए । इसके अतिरिक्त कितने ही नामी-अनामी लोगों ने अपनी शक्ति से अधिक योगदान स्वतंत्रता आन्दोलनों में दिया । तब हमें स्वतंत्र देशवासी के रूप में पहचान मिली । भारत के प्रथम प्रधानमंत्री के रूप में श्री जवाहरलाल नेहरू ने दिल्ली के लालकिले पर से ब्रिटेन का यूनियन जैक उतारकर उसके स्थान पर तिरंगा ध्वज लहराया । पूरा देश स्वातंत्र्य प्राप्ति के उत्सव में रंग गया ।

**विचार कीजिए**

15 अगस्त, 1947 के दिन भारत स्वतंत्र हुआ इस दिन आपके गाँव या शहर में भी उस उत्सव को मनाया गया होगा । किस तरह समारोह मनाया गया था ?

## देशी राज्यों की हलचल

भारत स्वातंत्र्य कानून पारित होने पर कुछ देशी राज्यों ने संपूर्ण स्वतंत्र होने का प्रयास किया । जबकि कानून की व्यवस्था के अनुसार प्रत्येक राज्य का स्वतंत्र रहने की इच्छा करना स्वाभाविक था । सर सी. पी. रामस्वामी अय्यर ने त्रावणकोर राज्य को स्वतंत्र सार्वभौम राज्य घोषित किया । हैदराबाद के निजाम, भोपाल के नवाब तथा इन्दौर के होल्कर ने भी ऐसी ही आवाज उठाई । जूनागढ़ के नवाब ने पाकिस्तान के साथ जुड़ने की घोषणा की ।

इसी तरह यदि देश के हरेक रजवाड़े स्वतंत्र हो जाते तो भारत छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित हो जाता । एक-दूसरे राज्यों के बीच उनकी सीमा की समस्या खड़ी हो जाती । विकास के लिए संसाधन सीमित हो जाते । राज्यों के बीच संघर्ष उत्पन्न होता चला जाता । इससे हमें मिली हुई स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं बचता ।

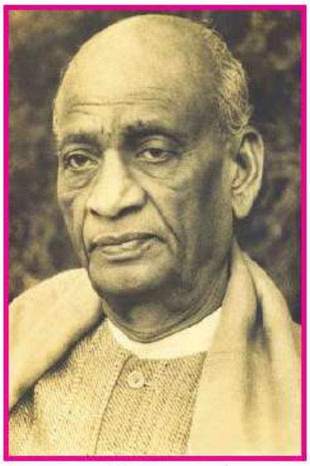

12.4 श्री सरदार पटेल

## देशी राज्यों का विलीनीकरण

उस समय भारत में 562 देशी राज्य थे । ये सभी राज्य भारतसंघ के साथ जुड़े तो ही भारत एक संघराज्य बने । यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण काम तत्कालीन उपप्रधानमंत्री और गृहमंत्री श्री सरदार वल्लभभाई पटेल और उनके सचिव श्री वी. पी. मेनन ने पूरा किया । उन्होंने राजाओं में देशभक्ति जाग्रत की और व्यावहारिक बुद्धि से 559 देशी राज्यों का भारत संघ के साथ विलीनीकरण किया । भारत संघ में जुड़ने सर्वप्रथम की पहल भावनगर के राजा महाराजा कृष्णकुमारजी ने की थी । जूनागढ़, हैदराबाद और कश्मीर इन तीन राज्यों का प्रश्न बाकी रहा ।

12.5 श्री वी. पी. मेनन

जूनागढ़ के नवाब के विरुद्ध जनता ने क्रांति की । रतुभाई अदाणी तथा अन्य लोगों के साथ मिलकर 'आरजी हुकूमत' की स्थापना की । सरदार पटेल ने जूनागढ़ में लोकमत लिवाया और जूनागढ़ भारत संघ के साथ मिल गया । हैदराबाद के निजाम के विरुद्ध सैनिक कार्रवाई करनी पड़ी और अंत में उसे भी भारतसंघ में शामिल कर लिया गया । पाकिस्तान ने ई.स. 1948 में कश्मीर पर हमला किया । उस समय वहाँ के राजा हरिसिंह ने विधिपूर्वक भारतसंघ के साथ जोड़ दिया । भौगोलिक दृष्टि से ये तीनों राज्यों का भारत संघ के साथ जुड़ना अत्यंत महत्त्वपूर्ण था ।

देशी राज्यों के राजा अपने लोगों को उत्तरदायी सरकार देना चाहते थे । यह निश्चित रूप से विश्वास था कि भारत सरकार उत्तरदायी सरकार होगी । दूसरी बात यह भी थी कि उस समय में शिक्षा की मात्रा सामान्यत: बढ़ी थी । लोग स्वतंत्रता का अर्थ समझने के लिए प्रयत्नशील थे । हरेक व्यक्ति स्वतंत्र होना चाहता था । इससे राजा गण अपने लोगों के अनुभवों के आधार पर वे निश्चित कर सके कि भारत संघ के साथ जुड़ने से प्रजा का विकास निश्चित रूप से होगा । इस मामले में राजाओं की देशभक्ति की निश्चित रूप से प्रशंसा करनी चाहिए क्योंकि अपने लिये थोड़ी-सी आवश्यक संपत्ति रखकर शेष सभी राज्य भारतसंघ को सौंप देना बहुत बड़ी बात है । इस तरह देश के सभी देशी राज्य विलीनीकरण के लिए तैयार हुए । वह भारत के ही नहीं, परंतु विश्व के इतिहास में एक अपूर्व घटना थी ।

विलीनीकरण की प्रक्रिया में सरदार वल्लभभाई पटेल तथा उनके मार्गदर्शन के अनुसार कार्य करने वाले वी. पी. मेनन के योगदान सदा याद रहेंगे । समग्र भारत की इस तरह हुई एकता पहले कभी देखने को नहीं मिली थी । ऐसा कहना अतिशयोक्ति न होगा कि यह सरदार पटेल की अप्रतिम महान सेवा थी ।

## गांधीजी की हत्या

अभी भारत को स्वतंत्र हुए छ: महीने भी पूरे नहीं हुए थे और पूरा देश गहरे

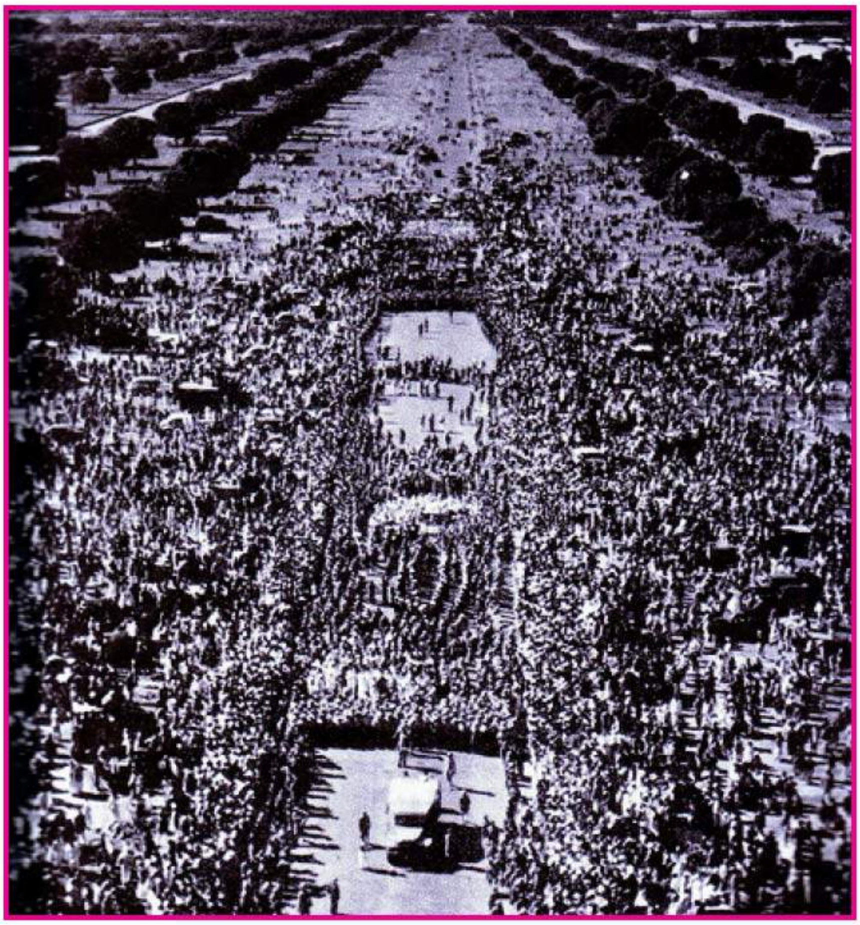

12.6 गांधीजी की स्मशान यात्रा

शोक में डूब गया । भारत के विभाजन के संदर्भ में कुछ क्षेत्रों में भीषण सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे । इन सांप्रदायिक दंगों को रोकने के लिए गांधीजी उपवास पर उतरे । लोगों से शांति रखने की अपील की । इस दौरान 30 जनवरी, 1948 के दिन गांधीजी बिरला हाउस में सांयकाल की प्रार्थना के लिए जा रहे थे तभी नाथुराम गोड्से नामक व्यक्ति ने उनकी हत्या कर दी ।

उसी शाम शोकग्रस्त भारत देश ने आकाशवाणी से जवाहरलाल नेहरू का शोक संदेश सुना : ''दोस्तो, साथियो, हमारे जीवन की रोशनी बुझ गई और अब चारों तरफ अंधकार है । हमारे प्रिय नेता राष्ट्रपिता अब हमारे बीच नहीं है ।'' समग्र राष्ट्र स्तब्ध रह गया ।

गांधीजी भारत के सभी वर्ग के लोगों के बीच एकता में विशावस करते थे और उसके लिए ही उन्हों ने अमूल्य जीवन का बलिदान दे दिया । दिल्ली में बापू की भव्य स्मशान यात्रा निकली । लाखों लोग अश्रुभरी आखों से उसमें शामिल हुए ।

## निराश्रितों का पुनर्वास

लाखों लोग पाकिस्तान से भारत आए थे । उनके बसने और रोजगार के विकट उत्तर दायित्व को भी भारत ने अत्यंत कुशलतापूर्वक निभाया । सभी लोगों को यथासंभव अधिक सुविधाएँ दी गई । विशाल शरणार्थी शिबिर खोले गये । उन्हें मात्र भोजन और आवास ही नहीं बल्कि प्रेम और सहानुभूति की भी आवश्यकता थी । लोगों और संस्थाओं ने सहयोग दिए । इस तरह सभी निराश्रित सभी के साथ मिल गए । उन्हों ने अपनी नई जिंदगी शुरू की ।

12.7 विभाजन के साथ लोगों का पलायन

## भारत का संविधान और उसका अमल

ई.स. 1946 में संविधान सभा की रचना की गई थी । उसका कार्य स्वतंत्र भारत के लिए संविधान निर्माण करना था । संविधान निर्माण की प्रक्रिया दिसंबर, 1949 तक चली । उस समय के दौरान उसके प्रत्येक मसौदे के एक-एक भाग पर लंबी चर्चाएँ हुई । उसके लिए 11 सत्र आयोजित किए गए, जिनमें 165 दिन बैठकें हुईं । अलग-अलग समितियों तथा उपसमितियों ने मसौदे को सुधारने तथा ठीक करने का कार्य किया । लगभग 300 भारतीयों ने इस प्रक्रिया में भाग लिया । संविधान सभा की बैठकें दिल्ली में आयोजित होती थी फिर भी, उसके सदस्य समग्र भारत में फैले थे ।

12.8 डॉ. आंबेडकर

संविधान समिति के अध्यक्ष के रूप में डॉ. बाबा साहेब आंबेडकर को नियुक्त किया गया । संविधान सभा के अध्यक्ष के रूप में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को चुना गया था ।

संविधान तैयार होने पर संविधान सभा ने उसे पारित किया । 26 जनवरी, 1950 के दिन से उसे लागू किया गया । उस दिन से देश की सत्ता जनता के हाथ में आई । इसलिए 26 जनवरी को 'गणतंत्र दिवस' के रूप में मनाया जाता है । जबकि

12.9 चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

15 अगस्त को 'स्वतंत्रता दिवस' के रूप में मनाते हैं । दोनों दिन हमारे राष्ट्रीय त्योहार हैं ।

अंग्रेज गवर्नर जनरल माउन्टबेटन के निवृत्त होकर स्वदेश चले जाने के बाद चक्रवर्ती राजगोपालाचारी पहले भारतीय गवर्नर जनरल बने । वे भारत के अंतिम गवर्नर जनरल थे । संविधान लागू होने के बाद डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने ।

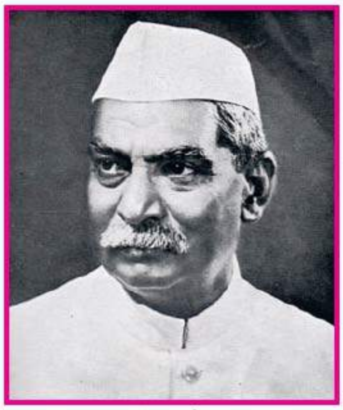

12.10 डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

## स्वाध्याय

**1. सही जोड़े बनाइए :**

| (अ) | (ब) |
|---|---|
| (1) स्वतंत्रता दिवस | (1) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद |
| (2) भारत के प्रथम प्रधानमंत्री | (2) 15 अगस्त |
| (3) गणतंत्र दिवस | (3) जवाहरलाल नेहरू |
| (4) भारत के प्रथम राष्ट्रपति | (4) डॉ. आंबेडकर |
| (5) संविधान समिति के अध्यक्ष | (5) 26 जनवरी |

**2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

(1) भारत की स्वतंत्रता के समय कौन-सी समस्याएँ चुनौती स्वरूप थीं ?

(2) मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में कौन-सा प्रस्ताव किया गया ?

(3) भारत स्वातंत्र्य कानून की मुख्य व्यवस्थाएँ कौन-कौन सी थीं ?

(4) देशी राज्यों के विलीनीकरण का उत्तरदायित्व किसको सौंपा गया ?

(5) जवाहरलाल नेहरू ने गांधीजी की हत्या का समाचार आकाशवाणी पर किन शब्दों में व्यक्त किया ?

**3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :**

(1) स्वतंत्रता के समय भारत में ........... देशी राज्य थे ।

(2) संविधान सभा की रचना ई.स. .......... में की गई थी ।

(3) सरदार वल्लभभाई पटेल और उनके सचिव श्री ................ को विलीनीकरण का उत्तरदायित्व सौंपा गया था ।

(4) भारत के विभाजन की योजना वाइसराय .............. ने प्रस्तुत की ।

(5) स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति .............. बने ।

**4. आइए, स्वयं करें :**

(1) 15 अगस्त और 26 जनवरी के दिन अखबार में उल्लेख किए जाने वाले विवरणों की कटिंग्स एकत्र करें ।

(2) आपके विद्यालय में 15 अगस्त और 26 जनवरी का उत्सव किस तरह मनाया जाता है ? उसे मुद्दानुसार लिखकर वर्ग के समक्ष प्रस्तुत करें ।

(3) राष्ट्रीय त्योहारों को मनाने के साथ-साथ आप स्वयं किसी भी एक राष्ट्रीय कार्यक्रम में किस तरह मदद करेंगे, उसका संकल्प कीजिए ।

**5. यहाँ दिए गए फोटो को ध्यान से देखें :**

यह फोटो भारत के विभाजन के बाद पाकिस्तान से भारत आए हुए शरणार्थियों के लिए बनाए गए शिबिर का है ।

**कल्पना करें :**

आप इन शरणार्थियों में से एक हों तो आपको किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा । अपने शब्दों में वर्णन कीजिए ।

**12.11 शरणार्थी शिबिर**

# 13

# स्वतंत्र भारत

## राज्यों की रचना और पुनर्रचना

भारत आजाद हुआ और देशी राज्यों का एकीकरण हुआ । हमने एकतंत्री नहीं, परंतु संघीय व्यवस्था स्वीकार की अर्थात् संघ के घटक राज्यों की रचना करने का प्रश्न खड़ा हुआ । पहले के ब्रिटिश प्रांतों और देशी राज्यों का एकीकरण के कारण खड़ी हुई इकाइयों का शुरुआत में अ, ब, क और ड इन चार वर्गों में विभाजन किया गया ।

इन चारों प्रकार के राज्यों के दर्जे एक समान नहीं थे । जबकि ये सभी भारतीय संघ के अभिन्न भाग थे । ई.स. 1950 में जब संविधान का अमल शुरू हुआ तब भारत इन चार प्रकार के राज्यों का बना हुआ संघ था । यह एक कामचलाऊ व्यवस्था थी । 'अ' प्रकार के मद्रास राज्य में से तेलुगु भाषी प्रदेश का अलग राज्य आंध्र प्रदेश बनाने के लिए तेलुगु भाषी लोगों ने उग्र आंदोलन किया । इस उग्र आंदोलन के कारण केन्द्र सरकार को उनकी माँग स्वीकार करनी पड़ी । पहली अक्टूबर, 1953 के दिन अलग राज्य आंध्र प्रदेश की रचना की गई । उसके बाद भाषा के आधार पर राज्यों की रचना करने की माँग समग्र देश में उठी ।

**इतना जानिए**

1920 के दशक में भारतीय राष्ट्रीय महासभा ने कहा था कि भारत देश आजाद होगा तब हरेक बड़े भाषाकीय क्षेत्र का अलग राज्य होगा । स्वतंत्रता के बाद महासभा ने यह कार्य पूरा करने के लिए कोई कदम नहीं उठाया, क्योंकि भारत धर्म के आधार पर विभाजित हो चुका था । स्वतंत्रता एक राष्ट्र को नहीं परंतु दो राष्ट्रों को मिली थी । देश के विभाजन के फलस्वरूप हिन्दू-मुस्लिम सांप्रदायिक हिंसा में 10 लाख से अधिक लोगों की मृत्यु हुई थी । इसलिए यह चिंता स्वाभाविक थी कि क्या हमारा देश भाषा के आधार पर इस तरह का दूसरा विभाजन सहन कर सकेगा ?

केन्द्र सरकार ने राज्यों की पुनर्रचना का अध्ययन करके, आवश्यक सिफारिश करने के लिए 'राज्य पुनर्गठन आयोग' की नियुक्ति की । भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश फजलअली को अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया । इस आयोग का विवरण मिलने के बाद संसद में राज्यों की पुनर्रचना करने का विधेयक पारित हुआ । पहली नवम्बर 1956 से उसको लागू किया गया ।

**प्रवृत्ति**

भारत के वर्तमान राज्यों और उनकी भाषाओं की सूची तैयार करें ।

चार प्रकार के राज्यों को रद्द करके चौदह राज्यों और छः केन्द्रशासित क्षेत्रों में राज्यों की पुनर्रचना की गई । उन चौदह राज्यों में से अधिकांश राज्यों की रचना भाषा के आधार पर हुई थी । परंतु इनमें से पंजाब में पंजाबी, हिन्दी और बोम्बे प्रांत में मराठी और गुजराती इन दो भाषाई क्षेत्रों का समावेश किया गया था । उसके विरुद्ध गुजरात और महाराष्ट्र में भाषा के आधार पर राज्यों की रचना करने के लिए उग्र आन्दोलन शुरू हुए ।

### महागुजरात आन्दोलन

संसद में द्विभाषी राज्यों का प्रस्ताव स्वीकार किया गया उसी दिन अहमदाबाद के लॉ कॉलेज के विद्यार्थियों की सभा में एक्शन कमेटी की रचना की गई । विद्यार्थियों ने स्वयंभू प्रदर्शन शुरू किया । जिन घटनाओं ने आन्दोलन को धीरे-धीरे उग्र बनाया ।

### महागुजरात आन्दोलन नेता इन्दुलाल याज्ञिक

महागुजरात का यह आन्दोलन धीरे-धीरे हिंसक बना । उपद्रव तथा गोलीबारी से लोकमत अधिक उत्तेजित हुआ । इस आन्दोलन को इन्दुलाल याज्ञिक, जयंती दलाल, ब्रह्मकुमार भट्ट आदि नेताओं का मार्गदर्शन मिला । यह आन्दोलन लोक आन्दोलन बना और समग्र गुजरात में फैला ।

**13.1 इन्दुलाल याज्ञिक : गुजरात की अस्मिता के स्वप्नद्रष्टा**

इन्दुलाल याज्ञिक के नेतृत्व में महागुजरात के लिए आन्दोलन करने वाले सभी राजनीतिक दलों ने सितंबर 1956 में 'महागुजरात जनता परिषद' की स्थापना की । गुजरात को अलग राज्य बनाने का आन्दोलन इस परिषद ने चालू रखा । लोग राष्ट्रीय नेताओं की सभा के समय स्वयं बंद करके उनका बहिष्कार करते थे । इन्दुलाल याज्ञिक को सुनने के लिए लोग उमड़ पड़ते थे । इस तरह आन्दोलन उग्र बनता गया । इन्दुलाल याज्ञिक 'जनता के चाचा' बने ।

### गुजरात राज्य की स्थापना

उग्र आन्दोलन के परिणामस्वरूप संसद ने 1960 को मुंबई के द्विभाषी राज्य का विभाजन करके महाराष्ट्र और गुजरात इन दो राज्यों की रचना की गई। नए गुजरात राज्य का उद्घाटन

पूज्य रविशंकर महाराज के करकमलों द्वारा हुआ । 1 मई 1960 के दिन महाराज ने साबरमती आश्रम, अहमदाबाद में नए गुजरात राज्य का मंगलमय प्रारंभ कराकर आशीर्वाद दिया । गुजरात के प्रथण राज्यपाल के रूप में महेंदी नवाज जंग तथा मुख्यमंत्री के रूप में डॉ. जीवराज महेता ने कार्यभार संभाला ।

**प्रवृत्ति**

(1) बोम्बे शहर का वर्तमान नाम मुंबई है । भारत के अन्य ऐसे शहर भी हैं जिनका दूसरा नाम हो उनकी सूची तैयार करें ।

(2) वर्तमान गुजरात राज्य अभी भी मुंबई राज्य में होता तो ?

**इतना जानिए**

गुजरात और महाराष्ट्र भले ही अलग-अलग राज्य बने, परंतु अंत में तो हम सभी एक ही भारत देश के निवासी हैं । सभी प्रांतों के लोग हमारे देशवासी हैं । सभी की भाषाएँ हमारी ही भाषाएँ हैं ।

हम गांधीजी और सरदार की संतानें हैं । इसलिए उनकी विरासत को सुशोभित करें ।

प्रभु हमें गांधीजी के मार्ग पर राज्य चलाने की, धन से हीन होने पर भी भव्य भारत का सेवक होने की शक्ति और सद्‌बुद्धि दे, ऐसी शुभ प्रार्थना करके हम नए प्रयाण करें ।

– रविशंकर महाराज, साबरमती आश्रम, अहमदाबाद (1-5-1960)

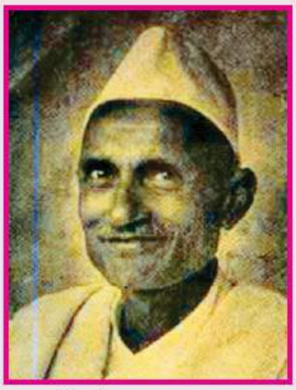

रविशंकर महाराज

- ई.स. 2010 में गुजरात राज्य की स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने पर इस वर्ष को 'स्वर्णिम गुजरात' के रूप में मनाया गया ।

### फ्रांसीसी और पुर्तगाली संस्थानों का भारत संघ के साथ विलयन

26 जनवरी, 1950 के दिन एक स्वतंत्र, सार्वभौम राष्ट्र के रूप में भारत का उदय हुआ तब अभी कुछ प्रदेश फ्रांसीसियों और पुर्तगालियों के अधिकार में थे ।

**(1) पांडिचेरी का विलय :** पांडिचेरी, कैरैकल (तमिलनाडु में) माहे (केरल में), यनाम (आंध्रप्रदेश में) और चंद्रनगर (प. बंगाल) पर फ्रांसीसियों का अंकुश था । इस क्षेत्र के लोगों की इच्छा भारतीय संघ में मिलने की थी । इसके लिए उन्होंने उग्र आंदोलन चलाए । इस स्वातंत्र्य आन्दोलन को कुचल डालने का प्रयास फ्रांसीसियों ने किया । 1948 में पांडिचेरी में एक विराट सभा में लोगों 'भारत छोड़ो' के आन्दोलन की घोषणा की । इस प्रश्न का शांतिमय समाधान करने के लिए सरकार ने केन्द्र सरकार के साथ समझौता किया । अंत में फ्रांस-सरकार सहमत हुई । 31 अक्टूबर, 1954 को ये फ्रांसीसी उपनिवेश भारत को सौंप दिए गए ।

**(2) गोवा, दीव, दमण का विलय :** फ्रांसीसियों की अपेक्षा पुर्तगीज ज्यादा हठी निकले । वे गोवा को पुर्तगीज साम्राज्य के प्रतिष्ठा स्वरूप मानते थे । समझौते और वार्ता द्वारा यह प्रदेश भारत को सौंपने के लिए भारत सरकार ने खूब प्रयास किया, पंरतु सफलता नहीं मिली । इस तरफ गोवा को भारत में मिलाने के लिए आन्दोलन जोर पकड़ने लगा । 15 अगस्त, 1955 दिन आयोजित गोवामुक्ति आन्दोलन के दौरान हजारों लोगों ने गोवा, दमन, दीव में प्रवेश करने का प्रयास किया । उस संघर्ष में दो सौ सत्याग्रही शहीद हुए ।

सत्याग्रह और समझाने जैसे उपाय कारगर सिद्ध नहीं होंगे, ऐसा मानकर भारत सरकार ने गोवा को मुक्त करने के लिए 'ओपरेशन विजय' शुरू करने का निर्णय किया । 17, 18 दिसंबर, 1961 की मध्यरात्रि को जनरल चौधरी के नेतृत्व में सैनिक अभियान शुरू हुआ । दूसरे दिन दोपहर को अभियान पूरा हुआ । भारतीय दलों ने गोवा, दीव और दमण पर अधिकार करके वहाँ राष्ट्रध्वज फहराया । इस तरह से पश्चिमी साम्राज्य का रहा-सहा अवशेष भी भारत की धरती पर से दूर हुआ ।

**विचार कीजिए**

पुर्तगाली साम्राज्य के विरुद्ध भारत को सैनिक कार्रवाई क्यों करनी पड़ी ?

**इतना जानिए**

- ई.स. 1961 से 1987 तक दीव, दमण और गोवा केन्द्रशासित प्रदेश रहे ।
- 12-8-1987 को गोवा को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला ।

**प्रवृत्ति**

(1) फ्रेंच और पुर्तगीज (पुर्तगाली) अधिकार वाले प्रदेशों की नक्शापूर्ति कीजिए ।
(2) गोवा, दीव और दमण के बीच की दूरी नक्शे के आधार पर स्केल द्वारा मापें ।

## भारत-पाकिस्तान के बीच के संबंध

भारत के स्वतंत्र होते ही भारत-पाकिस्तान के बीच के संबंध बिगड़े हैं। दोनों देशों की सरहद के संबंध में समाधान न होने से भारत की सीमा पर पाकिस्तान की घुसपैठ चलती ही रहती है। भारत और पाकिस्तान के बीच कश्मीर के मामले पर भारी मतभेद रहा है।

भारत और पाकिस्तान के बीच ई.स. 1948, 1965 और 1971 में इस तरह तीन बार युद्ध

हुए हैं । जिनमें हर बार पाकिस्तान हारा । दोनों देशों के बीच ताश्कंद समझौता और शिमला समझौता हुआ फिर भी पाकिस्तान इन समझौतों का पालन नहीं करता । ई.स. 1999 में जब पाकिस्तानी दल कारगिल क्षेत्र में घुस आया तब विवश होकर भारत को सैन्य शक्ति का उपयोग करना पड़ा ।

ई.स. 1998 में भारत ने परमाणु परीक्षण किया । उसके बाद पाकिस्तान ने भी परमाणु परीक्षण किया । इस तरह अब दोनों देश परमाणु शस्त्र वाले देश बने हैं । अच्छे संबंध बनाने की जितनी मात्रा में उत्सुकता भारत जताई है, उसका समुचित प्रतिभाव पाकिस्तान ने नहीं दिया, यह खेदजनक बात है ।

## वर्तमान भारत

स्वतंत्रता के 64 वर्षों बाद हमारे देश का प्रदर्शन कैसा रहा ? संविधान में निर्धारित किए गए आदर्शों को हमने सिद्ध किए ?

पंचवर्षीय योजनाओं के अमल के बाद भारत में औद्योगिक विकास का सही अर्थ में प्रारंभ हुआ । सूती कपड़े, चीनी, लोहा-इस्पात के उपयोग, इंजीनियरिंग, रसायन, कोयला उद्योग इत्यादि का अच्छा विकास हुआ है । औद्योगिक चीज-वस्तुओं के मामले में हम स्वावलंबी बने हैं । इसके अतिरिक्त इलेक्ट्रॉनिक्स तथा ऊर्जा, खनिज तेल, कम्प्यूटर, माइक्रोचिप्स, टेलीकम्युनिकेशन, स्टील, खाद, सीमेंट और पेट्रोकेमिकल्स जैसे उद्योगों को भी गति मिली है ।

बहुत से विदेशी विवेचक मानते थे कि भारत एक देश के रूप में अधिक समय तक नहीं टिक सकता । कुछ लोग मानते थे कि भारत सैनिक शासन के अंतर्गत आ जाएगा । परंतु ये आशंकाएँ निर्मूल साबित हुई हैं । भारत आज तक प्रजातंत्र की राह पर है जो गौरवमयी सफलता है । यहाँ के लोगों की भाषा और धर्म की विविधता राष्ट्र की एकता में बाधक नहीं बनी है । औद्योगिक, वैज्ञानिक, आंतरिक स्वरूप की सुविधाएँ, कृषि और शैक्षणिक विकास में राष्ट्र ने प्रगति की है ।

**13.2 मरीन ड्राइव, मुंबई अमीर वर्ग का आवास**

**13.3 मुंबई में स्थित धरावी दुनिया की सबसे बड़ी झुग्गी-झोपड़ी में से एक है ।**

परंतु दूसरी ओर यह भी सत्य है कि आज भी जाति के भेदभाव देखने को मिले हैं । संविधान में धर्मनिरपेक्षता का आदर्श होने पर भी अलग-अलग धार्मिक समूहों के बीच संघर्ष हुए हैं । सबसे अधिक परेशान करने वाली बात यह है कि धनी और गरीब वर्ग के बीच अंतर लगातार बढ़ता रहा है । भारत के अमुक समूह को आर्थिक विकास का अधिक लाभ हुआ है । वे आलीशान मकान में रहते हैं । दूसरी तरफ बहुत से लोग आज भी गरीबी रेखा के नीचे जीते हैं । शहरों की झुग्गियों में रहने वाले बहुत से लोग अपने बच्चों को विद्यालय में भी नहीं भेज सकते । महँगाई और भ्रष्टाचार असह्य रूप से बढ़ रहे हैं ।

हमारा संविधान कानून की दृष्टि से सभी को समान मानता है, परंतु वास्तविक जीवन में अमुक भारतीय दूसरे की तुलना में अधिक शक्तिशाली हैं । स्वतंत्रता के समय में निर्धारित किए गए आदर्शों की दृष्टि से देखें तो भारतीय लोकतंत्र बहुत बड़ी सफलता का दावा नहीं कर सकता, परंतु यह भी हकीकत है कि वह निष्फल भी नहीं है ।

### महात्मा गांधी की अनुयायी मीराबहन

आर्थिक नीति के कारण पर्यावरण पर पड़े प्रभावों पर उचित ध्यान नहीं दिया गया । मीराबहन ने 1949 में लिखा है कि विज्ञान और यंत्रों द्वारा उसे (मानवता को) अमुक समय तक अधिक लाभ हो सके हैं, परंतु अंत में तबाही ही मिलेगी । हमें प्रकृति के संतुलन का अध्ययन करके उसके नियमानुसार जीवन बिताना चाहिए । तभी हम स्वस्थ और सभ्य प्रजाति के रूप में जी सकेंगे ।

**13.4 मीराबहन**

**विचार कीजिए**

क्या मीराबहन की यह मान्यता सही थी कि विज्ञान और यंत्र मानव सभ्यता के लिए कठिनाई खड़ी कर देंगे ? इस मुद्दे पर वर्ग में चर्चा करें । इस चर्चा में आप औद्योगिक प्रदूषण और जंगलों के विनाश से हमारी दुनिया पर पड़े प्रभावों पर भी विचार करें ।

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :**

(1) केन्द्र सरकार को राज्यों का पुनर्गठन क्यों करना पड़ा ?

(2) महागुजरात आंदोलन क्यों शुरू हुआ ?

(3) 1950 में फ्रांसीसी शासन के अंतर्गत भारत के कौन-कौन से क्षेत्र थे ?

(4) 1961 में पुर्तगालियों के विरुद्ध भारत सरकार को सैनिक कार्रवाई क्यों करनी पड़ी ?

(5) भारत की वर्तमान समस्याएँ कौन-कौन सी हैं ?

**2. सही जोड़े बनाइए**

| (अ) | (ब) |
|---|---|
| (1) राज्य पुनर्गठन आयोग के अध्यक्ष | (1) रविशंकर महाराज |
| (2) जनता के चाचा | (2) डॉ. जीवराज महेता |
| (3) गुजरात राज्य के उद्‌घाटक | (3) मेंहदी नवाज जंग |
| (4) गुजरात राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री | (4) इन्दुलाल याज्ञिक |
| (5) गुजरात राज्य के प्रथम राज्यपाल | (5) फजलअली |

**3. प्रोजेक्ट :**

- भारत के वर्तमान राज्य और उनकी राजधानी, राज्य के नक्शे, उस राज्य का जनजीवन, उस राज्य की विशेषता आदि की जानकारी प्राप्त करके उसका सचित्र विवरण तैयार करें ।

# 14

# महाद्वीप परिचय : अफ्रीका और एशिया

## ''अफ्रीकन सफारी''

अहमदाबाद शहर में विश्व यात्रा मेला आयोजन हुआ था । यहाँ अलग-अलग देश की पर्यटन सस्थाएँ और पर्यटन विभाग द्वारा अपने देश का इतिहास, भूगोल तथा संस्कृति को ध्यान में रखकर दर्शनीय स्थानों के चित्रों और जानकारी लोगों को प्रचार-प्रसार के माध्यम द्वारा दी गई थी । राजू भी मम्मी-पप्पा के साथ देखने गया । वहाँ हमें अफ्रीका विभाग में बहुत से अजूबे लगे । आइए, आपको उसके बारे में बताता हूँ ।

### विश्व का दूसरे नंबर का सबसे बड़ा महाद्वीप

अफ्रीका महाद्वीप की लंबाई और चौड़ाई लगभग समान है । 2/3 क्षेत्र विषुववृत्त से उत्तर में स्थित है यानी कि अधिकांश क्षेत्र उष्ण कटिबंध में स्थित है ।

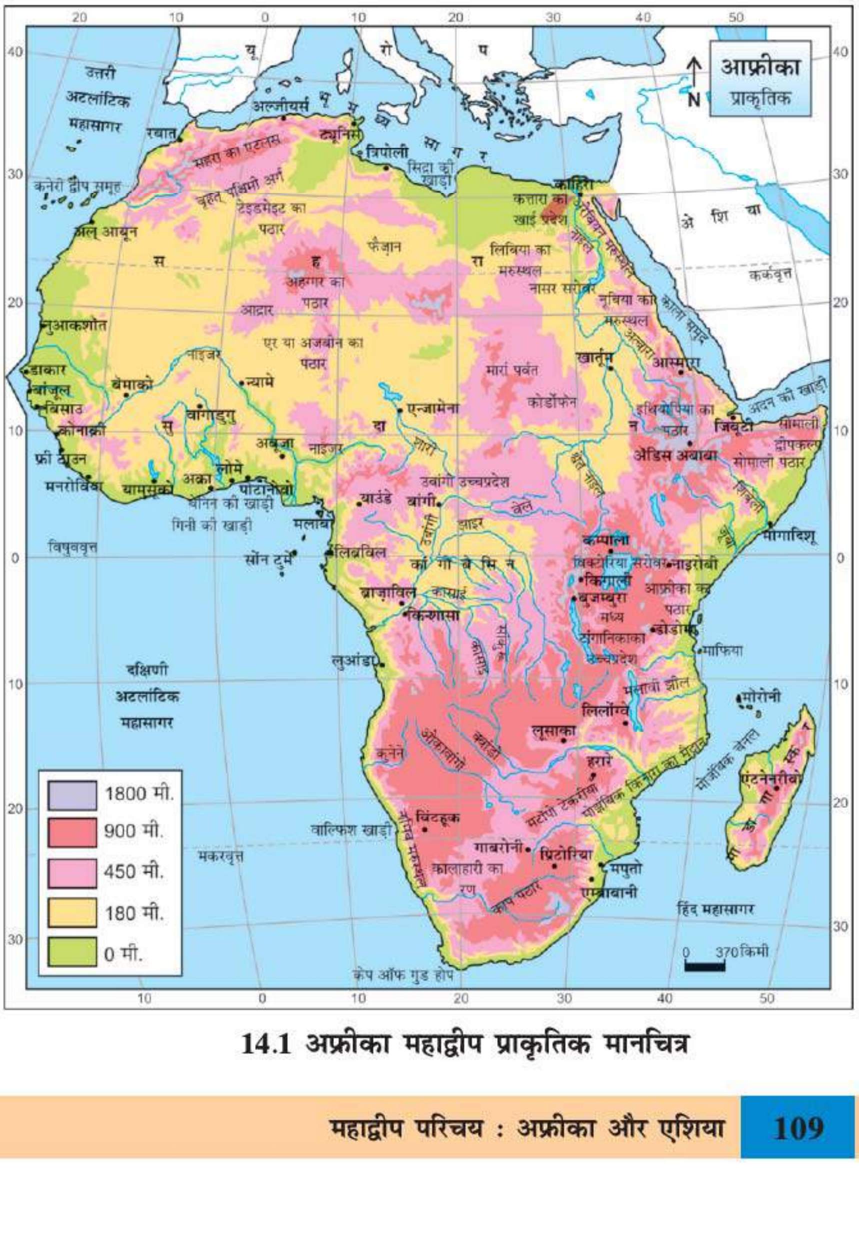


14.1 अफ्रीका महाद्वीप प्राकृतिक मानचित्र

**विचारकर कहें :**

(1) किस महाद्वीप पर से तीनों मुख्य अक्षांश वृत्त गुजरते हैं ?

(2) अफ्रीका महाद्वीप और यूरोप महाद्वीप किस जलसंधि(जल डमरू) से अलग होते हैं ? मानचित्र में देखकर बताएँ ।

(3) एशिया, अफ्रीका को किस क्षेत्र से अलग किया जा सकता है । मानचित्र में देखकर कहें ।

(4) अफ्रीका के आसपास कौन-कौन से समुद्र और महासागर स्थित हैं, मानचित्र देखकर कहें ।

18वीं सदी के अंत तक अफ्रीका महाद्वीप दुनिया के लोगों के लिए अज्ञात था इसलिए उसे 'अंध महाद्वीप' के रूप में भी जाना जाता था । बंदर से मानव तक की यात्रा की न मिलनेवाले कड़ीरूप अवशेष नील नदी के तट पर मिले थे ।

**जानकर बताएँ**

बार्थोलोम्यू डायज ने ई. स. 1493 में 'केप ऑफ गुडहोप' की भूशिर (अंतरीप) को खोज की थी । इस खोज का उपयोग वास्को-द-गामा ने ई. स. 1498 में भारत में आने के जलमार्ग की खोज करने में की थी । आप मानचित्र देखें और खोजे कहाँ है केप ऑफ गुड होप की भूशिर (अंतरीप)?

अफ्रीका महाद्वीप पूर्वी गोलार्द्ध में है । उसका क्षेत्र कुल भूमिविस्तार का 20 प्रतिशत है । 30 हजार किमी समुद्री किनारा इस महाद्वीप को मिला है ।

## अफ्रीका महाद्वीप के भूपृष्ठीय भागों की विशेषताएँ

**1 किली मंजारो**

**2 सहारा का रेगिस्तान**

**14.2 अफ्रीका की विशेषताएँ**

अफ्रीका का भूपृष्ठ अधिकांश रूप में पठारी प्रदेश का बना है । जिसमें अफ्रीका के वायव्य भाग में एटलस पर्वत माला की श्रेणियाँ स्थित हैं, जिनमें सबसे ऊँचा पर्वत एटलस है । उसकी ऊँचाई 3965 मी. है । पूर्व अफ्रीका की गिरिमाला में अफ्रीका का सबसे ऊँचा पर्वत किलीमंजारो है । जिसकी ऊँचाई 5895 मी. है । यह पर्वत विषुववृत्त के नजदीक होने पर भी, अधिक ऊँचाई के कारण उसके शिखर हमेशा बर्फ से ढँके रहते हैं । इन पर्वतों के अतिरिक्त दक्षिण में औसतन 915 मी. से अधिक ऊँचाई वाले पठार हैं ।

महाद्वीप के उत्तरी भाग में सहारा का विशाल रेगिस्तान है जो 90,65,000 कमी में फैला है । यह क्षेत्र चट्टानी पठारी प्रदेशों भरा है । पूर्वी अफ्रीका में पृथ्वी की आंतरिक हलचल के कारण लगभग 128 किमी लंबी दरार घाटी की रचना हुई है । यह दरार घाटी विश्व की सबसे लंबी दरार घाटी है । उसमें पानी भर जाने से विक्टोरिया, चाड, टांगानिका झीलों की रचना हुई है ।

## नदियाँ और झीलें

अफ्रीका में अधिकांश नदियाँ मध्य के पठारी प्रदेशों से निकलकर समुद्र में मिलती हैं और बहुत-सी नदियाँ अंतस्थ भी हैं । चट्टानी प्रदेश के कारण जलमार्ग के लिए अधिक उपयोगी नहीं हैं । किंतु जलप्रपात के कारण जलविद्युत के लिए उपयोगी हैं । अफ्रीका की मुख्य नदियाँ नील, कांगो, नाइजर और जांबेजी हैं । झीलों में न्यासा, विक्टोरिया, रुडोल्फ, चाड आदि हैं ।

नील नदी : **नील ( नाइल ) दुनिया की सबसे लंबी नदी है** । उसकी लंबाई 6,436 किमी है इथोपिया के पठारी प्रदेशों में निकलकर सूडान और इजिप्त (मिस्र) में से बहकर भूमध्य सागर में मिलती हैं ।

नील नदी

विक्टोरिया झील

14.3 अफ्रीका महाद्वीप की विशेषताएँ

## जलवायु और विशेषताएँ

अफ्रीका में जलवायु और वर्षा की विविधता है । उसके अनुसार वनस्पति जीवन में भी विविधता देखने को मिलती है । महाद्वीप में मुख्यत: विषुववृत्तीय जंगल हैं । यहाँ अतिशय गर्म और नमीयुक्त और रोगिष्ट जलवायु होने से महोगनी (आबनूस), लोंगवुड, रॉजवुड, आयर्नवुड के अतिरिक्त रबर, सिंकोना तथा बाँस के वृक्ष भी देखने को मिलते हैं ।

उत्तरी भागों में वर्षा की मात्रा घटने से सवाना प्रकार के घास के मैदान भी देखने को मिलते हैं तो सहारा के रेगिस्तानी प्रदेश में कहीं-कहीं कंटीली वनस्पति थूहर, बेर, खजूरी देखने को मिलती है भूमध्य सागर के किनारे के क्षेत्रों में जाड़े में भी बरसात का अनुभव होता है । यहाँ खट्टे रसवाले फलों की खेती होती है जिनमें नारंगी, नीबू, पीच, अंगूर आदि का समावेश होता है

विषुववृत्तीय घने जंगलों की वनस्पति

महोगनी ( आबनूस )

कंटीली वनस्पति

14.4 अफ्रीका की वनस्पतियाँ

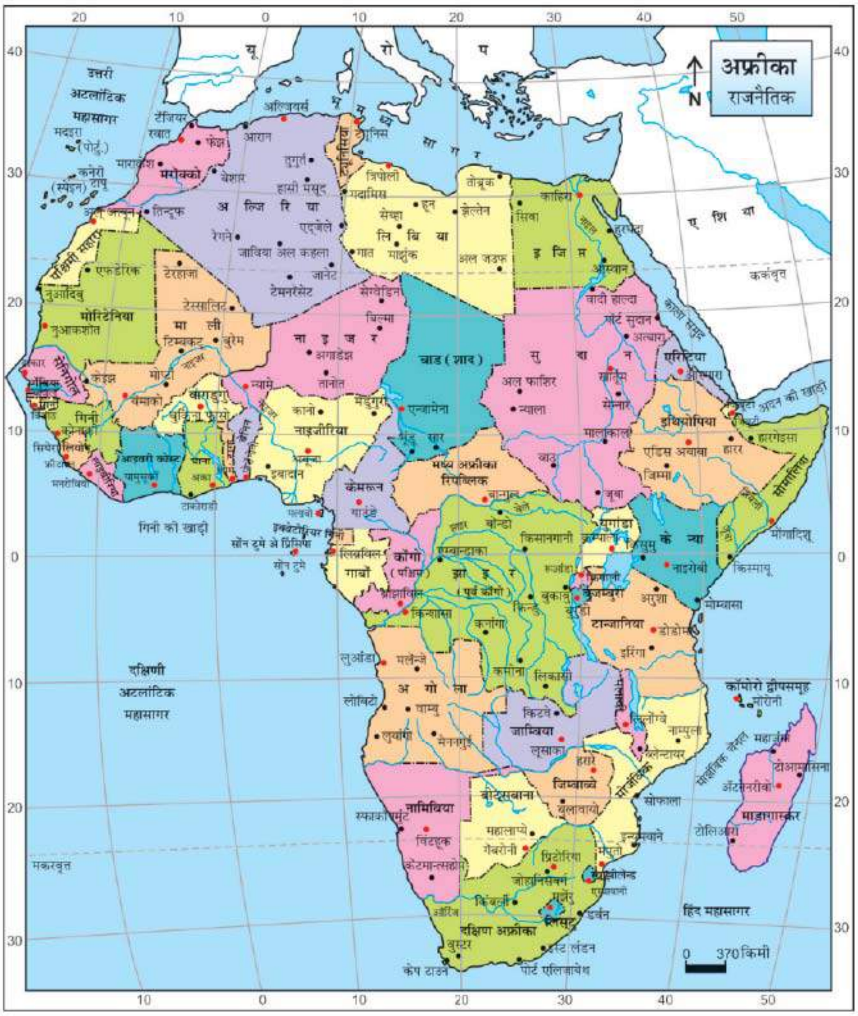


**14.5 अफ्रीका महाद्वीप का राजनैतिक मानचित्र**

**विचारें**

मानचित्र देखें, अध्ययन करें और महाद्वीप में स्थित देशों की सूची बनाएँ ।

**दो कूबड़वाले ऊँट**

**हिप्पोपोटेमस**

**सिंह**

**साबर**

**14.6 अफ्रीका महाद्वीप के प्राणी**

### आइए जानें

अफ्रीका महाद्वीप के विषुववृत्तीय प्रदेशों के भागों में त्सी त्सी मक्खी का उपद्रव है जिसके काटने से फील का रोग होता है और अंत मे मृत्यु हो जाती है अलबत विज्ञान और टेक्नोलॉजी की मदद से मक्खी नाश करने के प्रयत्न हुए हैं ।

**कृषि, खनिज संपत्ति और लोग :** अफ्रीका में 70 प्रतिशत खेती होती है । सामान्य फसल के साथ चाय, कॉफी, कोको, रबर, तम्बाकू आदि फसल पैदा की जाती है । पूर्व अफ्रीका में मालागासी (मैडागास्कर) और जांजीबार टापुओं में लौंग, कॉफी तथा धान आदि की खेती होती है । इसलिए जांजीबार को 'लौंग का टापू' भी कहते हैं ।

अफ्रीका महाद्वीप में, सोना, हीरा, तांबा, यूरेनियम, मैगनीज जैसी खनिजें दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग, ट्रांसवाल में से तथा खनिज तेल इजिप्त और लिबिया में सें मिलता है ।

अफ्रीका के जंगलों में जैर और कांगो नदी किनारे पिग्मी तथा कालाहारी के रेगिस्तान में बुशमेन, सूडान में सुडानीज लोग तथा केन्या में बांटु और इजिप्त में फेला जाति के लोग बसते हैं ।

## देश परिचय

**इजिप्त :** अरब गणराज, विश्व के इतिहास में इजिप्त एक अति प्राचीन देश के रूप में प्रख्यात है । नील नदी के किनारे इजिप्त (मिस्र) की महान संस्कृति विकसित हुई थी । यह देश पिरामिड और स्फिंक्स के लिए विश्वविख्यात है । कर्कवृत इसके दक्षिण भाग में से गुजरता है । खजूर और कपास का उत्पादन अधिक होता है । 'केरो' (काहिरा) देश की राजधानी तथा औद्योगिक शहर है । स्वेज नहर एशिया और यूरोप को अत्यंत नजदीक ला दिया है ।

**दक्षिण अफ्रीका :** अफ्रीका महाद्वीप के ठेठ दक्षिण में अधिकांश दक्षिणी गोलार्द्ध के समशीतोष्ण कटिबंध में स्थित देश है । मुख्यतः यह देश कृषिप्रधान था परंतु 1867 में वाल नदी विस्तार में हीरे और सोने की खानें मिलने से अर्थव्यवस्था में तीव्र परिवर्तन हुए । समग्र विश्व में वह विकसित राष्ट्र के रूप में विकसित हुआ । प्रिटोरिया उसकी राजधानी है परंतु संसद केपटाउन में बैठती है । डर्बन, जोहान्सबर्ग वगैरह मुख्य शहर हैं ।

प्रवासन मेले में हमारे एशिया महाद्वीप की जानकारी देने वाला प्रदर्शन है । आइए हम, वहाँ जाकर देखें और सीखें कि कैसा है हमारा यह एशिया महाद्वीप ।

## एशिया के आश्चर्य

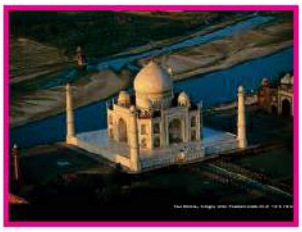

ताजमहल

चीन की दीवार

बुर्ज खलीफा

**14 7 एशिया के आश्चर्य**

**सीमाएँ :** 01°-16' उ.अं. से 77°-43', उ.अं. 26°-04' पू.दे., 169°-40' पू.

**सीमाएँ :** दक्षिण में हिंद महासागर, पूर्व में प्रशांत (पेसेफिक) महासागर, उत्तर में ध्रुव सागर, वायव्य में यूरोप और नैऋत्य में अफ्रीका महाद्वीप ।

**क्षेत्रफल : 4,38,10,000 वर्ग कि. मी.**

एशिया महाद्वीप के भूपृष्ठ में बहुत सी विविधता देखने को मिलती है। कहीं पर पर्वत, विशाल पठार, रेगिस्तान और कहीं पर मैदान। नीचे चित्र देखें और मानचित्र में खोजें ।

माउन्ट एवरेस्ट विश्व का सबसे ऊँचा शिखर (8848 मीटर)

दुनिया का छत तिब्बत : विश्व का सबसे ऊँचा पठार

विश्व का अधिक वर्षावाला भाग मोनसिनरम और चेरापुंजी

साइबेरिया : हिम अच्छादित (सबसे ठंडा) बर्खोयान्स्क

**14.8 एशिया की विशेषताएँ**

नीचे दिए गए एशिया के प्राकृतिक मानचित्र का उपयोग करके आवश्यक लगे तो एटलस का उपयोग करके रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए :

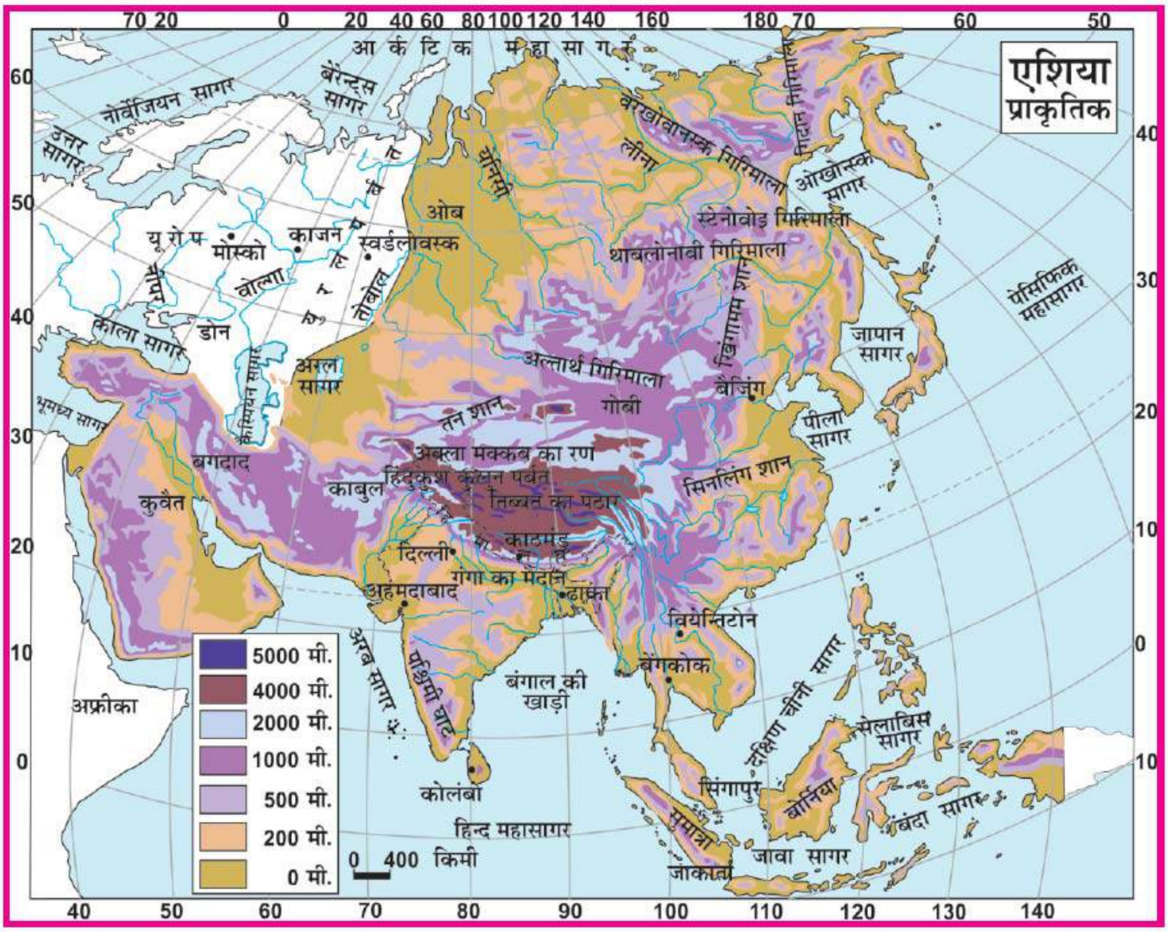


**14.9 एशिया का प्राकृतिक मानचित्र**

| क्रम | पठारी प्रदेश | क्रम | मैदान | क्रम | खंड समूह |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |
| | | | | | |

**रेगिस्तानी प्रदेश :**

एशिया में रेगिस्तानी प्रदेश हैं । उनमें गोबी का रेगिस्तान, अरब का रेगिस्तान, थार का रेगिस्तान आदि मुखा हैं ।

कच्छ का रेगिस्तान

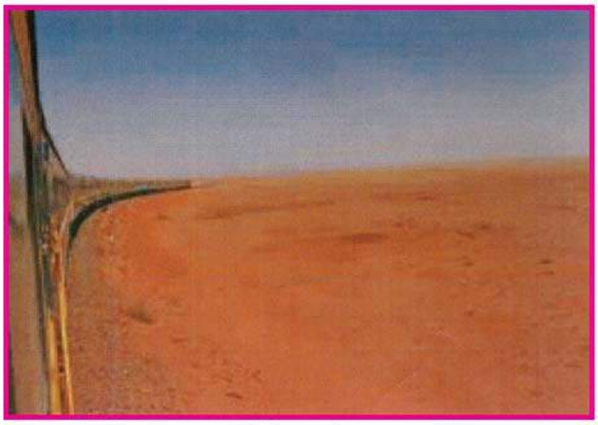

गोबी का रेगिस्तान

14.10 रेगिस्तानी प्रदेश

मृत सागर

डल झील

14.11 झीलें

| *मृत सागर में क्यों नहीं डूबते ? विचारें और नोट करें ।* |
|---|
| |
| |
| |
| |

नीचे एशिया की जलवायु दर्शाता मानचित्र दिया गया है । उसे देखें और विचार कर विश्लेषण करें :

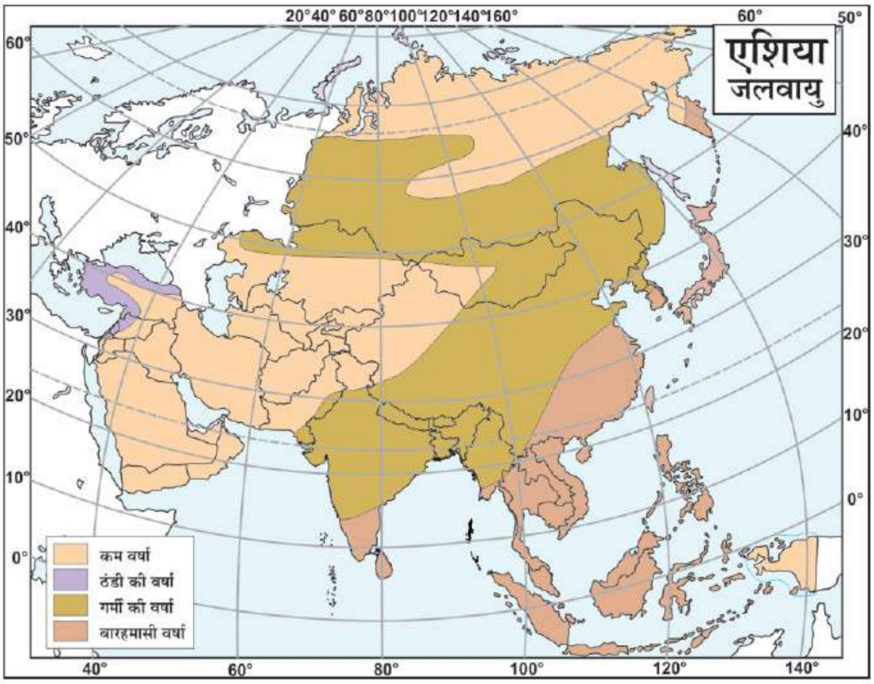


**14.12 एशिया : जलवायु**

**एशिया : जलवायु**

विचार कर कहें एशिया में सबसे अधिक वर्षा कहाँ होती है ? सबसे अधिक ठंडी और गर्मी कहाँ पड़ती है ? उसे खोजें ।

## एशिया में वनस्पति और प्राणीजीवन :

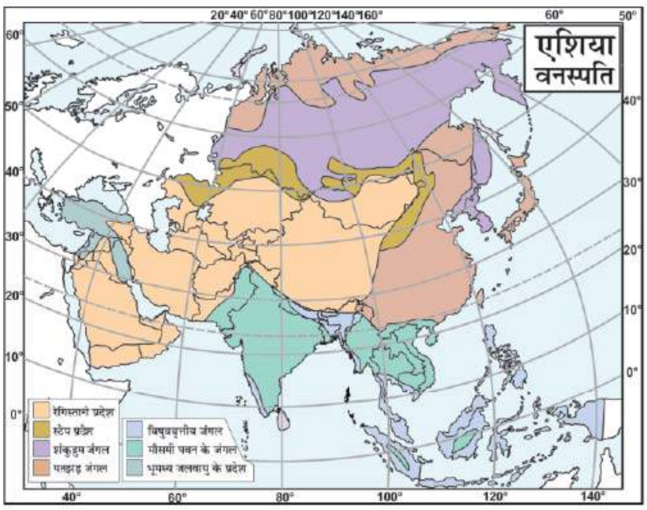


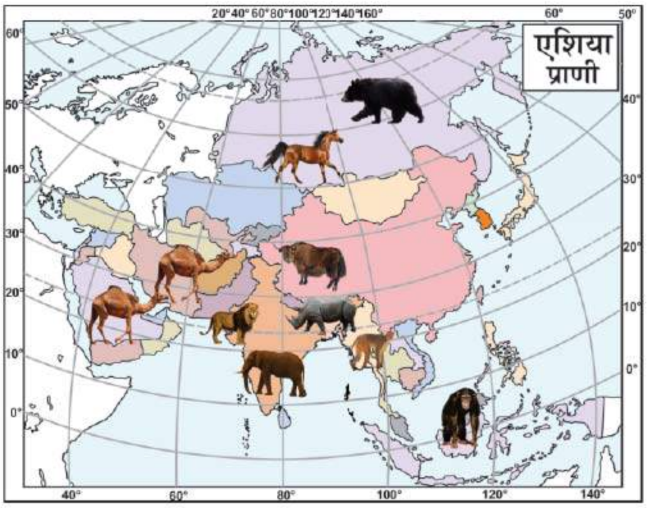


**14.13 एशिया की वनस्पति और प्राणीजीवन का मानचित्र**

## एशिया की नदियाँ :

एशिया में मुख्यतः ओब, येनेसी, लीना, आमूर, ह्वांगहो, यांगत्सीक्यांग, सिक्यांग और मेकोंग, ब्रह्मपुत्र, गंगा, यमुना, सिंधु आदि नदियाँ हैं । उसके अतिरिक्त कुछ नदियाँ मानचित्र में हैं । मानचित्र में देखकर नीचे का कोष्टक भरें । कौन-सी नदी कहाँ से निकल कर किस समुद्र में मिलती है ?

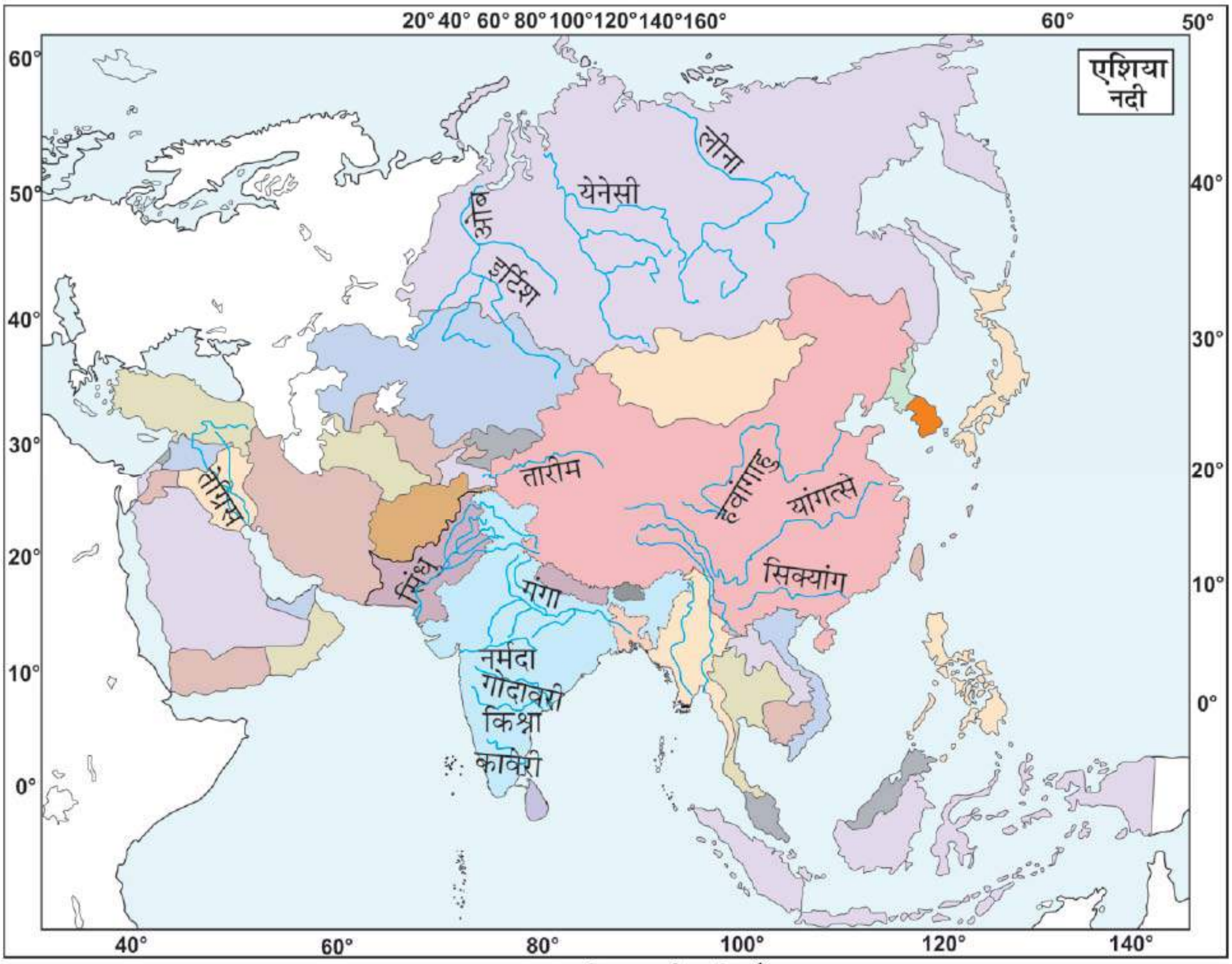


14.14 एशिया की नदियाँ

### नीचे दिए गए कोष्ठक में मानचित्र की सहायता से रिक्तस्थानों की पूर्ति कीजिए :

| क्रम | नदी | किस समुद्र में मिलती हैं ? |
|---|---|---|
| 1. | गंगा | |
| 2. | लीना | |
| 3. | मीकांग | |
| 4. | सिंधु | |

| क्रम | खारे पानी की झीलें | क्रम | मीठे पानी की झीलें |
|---|---|---|---|
| 1. | कैस्पियन | 1. | बैकाल (कजाकिस्तान) |
| 2. | मृत (जॉर्डन) | 2. | वुलर |
| 3. | चिलिका (भारत) | 3. | डल |
| 4. | पुलिकट (भारत) | 4. | ढेबर |
| | | 5. | तोनलेसेप (कंबोडिया) |
| | | 6. | टोंगलिंग(चीन) |

एशिया के मानचित्र में दर्शाए गए वनस्पति के अनुसार कुछ वनस्पतियों के चित्र और नाम दिए गए हैं। उस चित्र के नीचे प्रदेश का नाम लिखें।

14.15 एशिया की वनस्पतियाँ

## प्राणीजीवन

| क्रम | ठंडे प्रदेश के प्राणी | पालतू प्राणी | गर्म रेगिस्तानी प्रदेश के प्राणी | जलचर प्राणी |
|---|---|---|---|---|
| 1. | सफेद भालू | गाय | ऊँट, घोड़ा, गदहे | सील |
| 2. | मस्करेट, सेबल | भैंस | खच्चर | वालरस |
| 3. | रेकुन, बीवर | बैल | घुड़खर | बुमला |
| 4. | रेन्डियर | ऊँट | दो कूबड़ वाले ऊँट | हेरिंग |
| 5. | केरिबु, कुत्ता | भेड़, बकरी | | सालमन |
| 6. | याक | | | |

## एशिया के लोग

दुनिया की कुल आबादी की आधी आबादी एशिया महाद्वीप में बसती है । उत्तर के ठंडे प्रदेश के लोग मांसाहारी, समुद्री किनारे बसने वाले लोग समुद्री आहार (सी फुड) और मौसमी जलवायु के लोग गेहूँ और दूध का उपयोग करते हैं ।

नीचे के मानचित्र में एशिया के लोगों के चित्र दिए गए हैं । उसके अनुसार वहाँ के लोगों के पहनावे के चित्र दिए गए हैं । उसके नीचे के बॉक्स में संबंधित प्रदेशों के नाम लिखिए ।

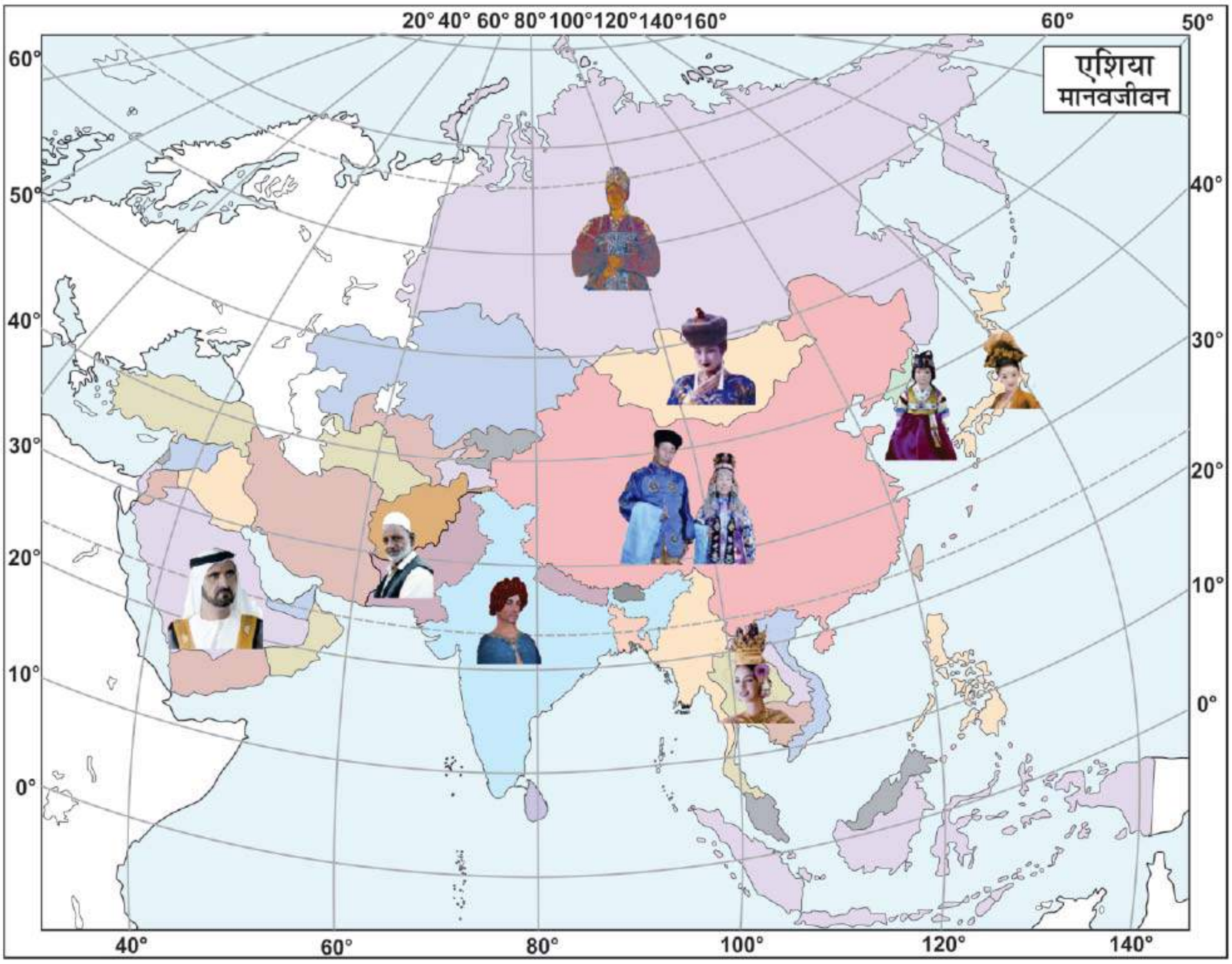


14.16 एशिया का मानव-जीवन

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | |
| | | | |

## आवास

| | | |
|---|---|---|
| | | |
| | | |

ऊपर के चित्र के अनुसार आवास एशिया में कहाँ हो सकते हैं, उसे मानचित्र में खोजें और अपनी नोटबुक में टिप्पणी तैयार करें ।

## भारत के पड़ोसी देश

भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, म्यानमार, श्रीलंका वगैरह देशों के समूह को उसके व्यूहात्मक स्थान के कारण भारतीय उपमहाद्वीप या (Indian Subcontinent) के रूप में पहचाना जाता है ।

**(1) पाकिस्तान :** भारत के साथ ही स्वतंत्र हुआ पड़ोसी देश 'इस्लामिक राष्ट्र' के रूप में घोषित है । इस्लामाबाद उसकी राजधानी है । हिंदूकुश में स्थित खैबरघाट का पर्वतीय मार्ग यहाँ है । बारहों महीने बहने वाली सिंधु नदी के जल ने पाकिस्तान में कृषिक्रांति लाया है । कपास पाकिस्तान की सबसे महत्त्वपूर्ण फसल है ।

**(2) बांग्लादेश :** एशिया के घनी आबादी वाले देशों में से बांग्लादेश एक है । बांग्लादेश का भूपृष्ठ नदियों के नीचे कांप के मैदान और डेल्टा प्रदेश का है । पद्मा (गंगा),मेघना (ब्रह्मपुत्र) उसकी मुख्य नदियाँ हैं और परिवहन में जलमार्गों का विकास अधिक हुआ है । बांग्लादेश में धान और सन की खेती अधिक होती है । राजधानी ढाका सन उद्योग के लिए विख्यात है ।

**(3) नेपाल :** हिमालय की गिरिमालाओं के बीच स्थित चारों ओर से भूभाग से घिरा देश है । काठमंडू इसकी राजधानी है । 40 % क्षेत्र में जंगलों के कारण मात्र 16 प्रतिशत खेती लायक जमीन में धान, चाय, कपास, इलायची की खेती की जाती है ।

**(4) भूटान :** अंग्रेज उसे 'वज्र दानवों की विहार भूमि' (The Land of Thunder Dragon) के रूप में पहचान कराते थे, क्योंकि चारों ओर से पहाड़ी भूपृष्ठ इस देश के विकास के लिए अवरोध रूप बना है । फिर भी भारत देश के सहयोग से भूतान विकास कह रहा है । यहाँ के लोग मुख्यत: बौद्ध धर्म को मानते हैं । याक यहाँ का विशिष्ट प्राणी है । थिम्पू उसकी राजधानी है ।

**(5) श्रीलंका :** सिलोन या सिंहलद्वीप के रूप में पहचाना जाने वाला टापूनुमा देश भारत की भूमि से उत्तर में पाल्क जलसंधि (जलडमरू मध्य) और पश्चिम में मनार की खाड़ी से अलग पड़ता है । कोलंबो उसकी राजधानी है । ऐसे छोटे टापू में 104 से भी अधिक नदियाँ हैं, जिनमें महावेली गंगा सबसे बड़ी है । विषुववृत्त से नजदीक होने से यहाँ उष्ट कटिबंधीय जलवायु का अनुभव होता है । यहाँ धान और चाय की खेती विशेष

रूप से होती है । इसे आइलैंड आफ जेम्स (रत्नद्वीप) अथवा 'पूर्व का मोती' के रूप में पहचाना जाता है । यहाँ सिंहली और तमिल दो भाषा समूह के लोग देखने को मिलते हैं ।

**(6) म्यानमार :** आराकान योमा पर्वतमाला और इरावती नदी का वह प्रदेश है । म्यानमार खनिज तेल का उत्पादक और भारत उसका ग्राहक है, फिर भी विषम आबोहवा के कारण बड़े पैमाने पर उद्योगों का विकास नहीं हुआ है । रंगून उसकी राजधानी है । यहाँ जलमार्गों का महत्त्व अधिक है । धान की उपज बड़ी मात्रा में होती है ।

## स्वाध्याय

**1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :**

(1) एशिया महाद्वीप के उत्तर-दक्षिण तथा पूर्व में कौन-कौन से महासागर हैं ?

(2) आर्कटिक महासागर को मिलने वाली नदियाँ जलमार्ग के लिए उपयोगी क्यों नहीं हैं ? बताएँ ।

**2. एशिया महाद्वीप के भूपृष्ठ के आधार पर नीचे दर्शाए गए आयताकार में 'क', 'ख' और 'ग' का ब्योरा तैयार करें :**

| रेगिस्तानी प्रदेश 'क' | मैदानी प्रदेश 'ख' | पठारी प्रदेश 'ग' |
|---|---|---|
| ______ | ______ | ______ |
| ______ | ______ | ______ |
| ______ | ______ | ______ |
| ______ | ______ | ______ |
| ______ | ______ | ______ |

**3. दुनिया के राजनैतिक मानचित्र का अध्ययन नीचे के ब्योरे भरें :**

**दुनिया के कौन-कौन महाद्वीप समुद्री सीमा वाले हैं, उसे मानचित्र के आधार पर लिखिए ।**

______

______

______

______

**नीचे लिखे गए महाद्वीप एशिया से किस दिशा में है उसे लिखिए ।**

| महाद्वीप का नाम | एशिया से किस दिशा में है ? |
|---|---|
| (1) यूरोप | ______ |
| (2) अफ्रीका | ______ |
| (3) आस्ट्रेलिया | ______ |

4. एशिया में स्थित मीठे पानी की झीलों के नाम बताइए ।

5. एशिया के देशों के राजनैतिक मानचित्र देखकर देशों की सूची बनाएँ ।

6. **नीचे दिए गए विधानों में सही विधान के सामने दिए गए ☐ में ✓ का तथा गलत विधान के सामने दिए गए ☐ में × का चिह्न कीजिए ।**

(1) एशिया महाद्वीप पृथ्वी के दक्षिणी गोलार्ध में है । ☐

(2) गर्मी में मध्य एशिया में तापमान ऊँचा रहता है । ☐

(3) जाड़े में अरब सागर पर से बहने वाली हवाएँ वर्षा लाती हैं । ☐

(4) चेरापूँजी भारत के असम राज्य में है । ☐

(5) जापान के लोग चमड़े के तंबू में रहते हैं । ☐

(6) हिमालय के प्रदेश में ऊँट का उपयोग माल-सामान ढोने के लिए होता है । ☐

(7) अरब के लोग गर्मी में गरम कपड़े पहनते हैं । ☐

7. **मुझे पहचानिए :**

(1) मैं अफ्रीका और गीर के जंगलों में रहता हूँ । ....................................

(2) मैं समुद्री किनारे का वृक्ष हूँ । ....................................

(3) मैं खेती के लिए उपयोगी पशु हूँ । ....................................

(4) मैं विषुववृत्त में होने वाला मुख्य वृक्ष हूँ । ....................................

8. **नीचे दिए संक्षिप्त प्रश्नों के उत्तर दीजिए :**

(1) एशिया में जिन ठंडे और गर्म प्रदेशों को 'रेगिस्तानी प्रदेश' भी कहा जाता है, उनके नाम बताइए ।

(2) भारत के पड़ोसी देशों के नाम बताइए ।

(3) एशिया के लोगों के विविध आवासों में से आपको सबसे अधिक पसंद आने वाले आवास का नाम बताइए ।

(4) एशिया में पाए जाने वाले प्राणियों के नाम बताइए ।

# पुनरावर्तन 2 ( इकाई 1 से 14 )

**आइए, फिर से याद कर लें :**

- भारत के धार्मिक-सामाजिक क्रांति के प्रणेता जैसे कि दयानंद सरस्वती
- प्रदूषण और उसके कारण
- प्रदूषण किस तरह फैलता है ?
- हम प्रदूषण किस तरह रोक सकते हैं ?
- राष्ट्रवाद का उदय और विकास
- सर्वोच्च न्यायालय अर्थात् सुप्रीम कोर्ट
- भारत के क्रांतिकारी
- वस्ती विस्फोट : समस्या और शक्ति का स्रोत
- गाँधीजी और उनके आन्दोलन
- भारत की समस्या और उपाय
- 'अर्थ व्यवस्था' से क्या समझते हैं ?
- स्वतंत्रता किस तरह प्राप्त हुई ?
- विश्व की समस्याएँ : संयुक्त राष्ट्र
- हिंदुस्तान का विभाजन और रजवाड़ों का विलीनीकरण
- हमारा महाद्वीप एशिया और अफ्रीकन सफारी

**आइए, समझें :**

- धार्मिक-सामाजिक रूढ़िवादिता के कारण
- पर्यावरण प्रदूषण
- पर्यावरणीय प्रदूषण के कारण
- राष्ट्रवाद
- राष्ट्रवाद और भारत की भव्य विरासत
- भारत की सुप्रीम कोर्ट और न्यायव्यवस्था
- क्रांतिकारियों के योगदान
- मानव : एक संसाधन स्वरूप

- गांधीजी और सत्याग्रह
- भ्रष्टाचार, महँगाई, गरीबी, आतंकवाद – संकल्पनाओं की स्पष्टता
- रुपए की यात्रा
- स्वतंत्रता
- संयुक्त राष्ट्र और उसकी संस्थाएँ
- भारत : स्वतंत्रता से पहले और बाद में
- एशिया और अफ्रीका की प्राकृतिक और मानवीय विशेषताएँ

**आइए, विचार करें :**

- अपने समाज की कुप्रथा और अंधविश्वास को किस तरह दूर कर सकते हैं ?
- क्या आपको लगता है कि पटाखे फोड़ने और लाउडस्पीकर बजाने से किसी प्रकार का प्रदूषण होता होगा ?
- आज बंगाल का विभाजन किया जाय तो आपके मतानुसार कोई नुकसान होगा ?
- सुषाषचंद्र बोस की जगह आप होते तो क्या करते ?
- फांसी का कानून चालू रखना चाहिए या बंद करना चाहिए ? क्यों ?
- आजाद हिंद फौज के लिए आप कैसा ध्वज पसंद करेंगे ?
- 'छोटा परिवार, सुखी परिवार' सही है या गलत ? क्यों ?
- आप आतंकवादियों के बीच फंस जाएँगे तो क्या करेंगे ?
- आपको संयुक्त राष्ट्र का महासचिव बना दिया जाय तो ?

**आइए, स्वयं करें :**

- विद्यालय के जलस्रोत की जाँच करें ।
- एशिया और अफ्रीका महाद्वीप का मानचित्र प्राप्त कर उसके बड़े शहरों की सूची बनाएँ ।
- जनगणना करने के लिए कैसे-कैसे प्रश्न पूछेंगे, उसकी सूची बनाएँ ।
- राष्ट्रीय एकता के लिए आप क्या-क्या प्रयत्न करेंगे, उनकी सूची तैयार करें ।

• • •